ओम्

शतरुद्रिय-पद्धतिः

पूजाविधि-संस्कृत-हिन्दी-भाष्यसहिता

– : सम्पादक : –

प्रो. डॉ. दामोदर झा

विश्वहिन्दूपरिषद्, पंजाब

कलियुगाब्द-५१०५ (२००३ ई.)

ओम्

शतरुद्रिय-पद्धतिः

पूजाविधि-संस्कृत-हिन्दी-भाष्यसहिता

– : सम्पादक : –

प्रो. डॉ. दामोदर झा

विश्वहिन्दूपरिषद्, पंजाब

कलियुगाब्द-५१०५ (२००३ ई.)

प्रकाशक : विश्वहिन्दूपरिषद्, पंजाब।

© सर्वाधिकार असुरक्षित

प्रथम संस्करण : २००३
प्रतियाँ : ५००
मूल्य : धर्मार्थ प्रयोग

मुद्रक:
मनूजा ऑफसेट वर्क्स
जालन्धर (पंजाब)

भूमिका

शतरुद्रियपद्धति की पूजाविधि, मन्त्रभाष्य एवं भाषार्थ के साथ यह पुस्तक धर्मप्रेमी सज्जनों के हाथों में प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यन्त हर्ष का अनुभव हो रहा है। यद्यपि रुद्राष्टाध्यायी के कई पुराने एवं नवीन संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं परन्तु शास्त्रों में शतरुद्रिय का विशेष माहात्म्य वर्णित है। पूर्व संस्करणों में शतरुद्रिय की प्रयोगविधि, मन्त्र, भाष्य एवं भाषार्थ आदि सम्पूर्ण आवश्यक सामग्री एकत्र नहीं होने से प्रयोगकर्ताओं को कठिनता का अनुभव होता था। इसी कठिनता को दूर करने के लिए यह प्रकाशन करने का प्रयास किया गया है। मुझे विश्वास है शैव सम्प्रदाय के श्रद्धालुओं को इस प्रयास से सुविधा होगी।

इस कार्य में गीताप्रेस, गोरखपुर से प्रकाशित नित्यकर्म-पूजा प्रकाश, पं. ज्वालाप्रसाद मिश्र द्वारा सम्पादित सभाष्य रुद्राष्टाध्यायी, उवट-महीधर कृत शुक्ल यजुर्वेदभाष्य, मैसूरनरेश द्वारा नियुक्त पण्डितों द्वारा संग्रहीत एवं प्रकाशित श्रीतत्त्वनिधि आदि ग्रन्थों का सहयोग लिया गया है। मैं उन सभी व्यक्तियों एवं संस्थाओं का आभार स्वीकार करते हुए उन्हें धन्यवाद प्रदान करता हूँ।

इस प्रकाशन कार्य में फगवाड़ा के स्वनामधन्य, भूतपूर्व राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ चालक स्वर्गीय लाला राजाराम जी के सुपुत्र श्री ओम प्रकाश गुप्त जी द्वारा पूज्य स्व. पिता जी की स्मृति में सम्पूर्ण आर्थिक व्ययभार वहन किया गया है। मैं भगवान् साम्बशिव से प्रार्थना करता हूँ कि वे स्व. लाला राजाराम जी को सायुज्य प्रदान करने के साथ उनके परिवार के सौभाग्य और श्री की वृद्धि करते रहें जिससे इस प्रकार के धार्मिक प्रयासों को प्रोत्साहन मिलता रहे। इस आर्थिक सहयोग की व्यवस्था करवाने में विश्वहिन्दूपरिषद् पजाब के महामन्त्री प्रो. गणेशदत्त भारद्वाज का प्रारंभ से ही सहयोग रहा है। एतदर्थ भगवान् साम्बशिव उनका सदा मंगल करें।

प्रकाशन कार्य में श्रीललितमोहन चड्ढा जी का सदा सहयोग रहा है। अतः मैं उनके मंगल के लिए भगवान् शिव से प्रार्थना करता हूँ।

इस पुस्तक के प्रकाशन में जालन्धर के मनूजा आफसैट प्रिंटिंग प्रैस के सभी कर्मचारी एवं मालिक का प्रयास प्रशंसनीय रहा है। अतः मैं उन्हें भी धन्यवाद देता हूँ।

यह पुस्तक धर्मार्थ निःशुल्क वितरित होगी। इस वितरणव्यवस्था के सभी सहयोगी जनों को भगवान शिव जी का आशीर्वाद प्राप्त हो ऐसी प्रार्थना है।

इस प्रयास से जनता का कुछ भी कल्याण हो सके तो यह प्रयास सफल माना जायेगा।

ओं नमः शिवाय

दामोदर झा

विजयादशमी

कलियुगाब्द–५१०४

(२००२ ई.)

पवित्र जीवन-पथ के यात्री

"पूज्य लाला राजा राम जी अग्रवाल"

१. भारत के समृद्धिशाली पंजाब राज्य के जालन्धर जिला स्थित रुड़की ग्राम में ९ जून १९२१ को श्री राजा राम जी का जन्म हुआ। साधारण परिवार में जन्मे राजा राम के पिताजी का देहावसान हो जाने के कारण इनका लालन-पालन इनकी माताजी ने किया।

२. स्कूल की शिक्षा समाप्त करते ही उन्होंने जालन्धर मण्डी में आढ़त का कार्य प्रारम्भ किया। १९३९ में आपका विवाह श्रीमती आज्ञावती सुपुत्री श्री

श्रीलालकृष्ण आडवानी जी के उनके घर पधारने पर लाला श्री राजाराम जी तथा उनके ज्येष्ठ सुपुत्र श्री ओमप्रकाश गुप्त जी।

भगवान दास गंगासागर जैन, मलेर-कोटला निवासी से हुआ। जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव आये, संघर्षमय जीवन व्यतीत करते हुए गृहस्थ आश्रम में ७ पुत्रों और ४ पुत्रियों को जन्म दिया।

३. १९४० में आप राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सम्पर्क में आये। संघ प्रेरणा से, समाज व राष्ट्र के कार्यों में अग्रणी श्री राजा राम सदैव समाज के जागरूक प्रहरी बने रहे। समाज के बेसहारा व्यक्तियों की सहायता करना, नगर में धार्मिक उत्सवों में सक्रिय भागीदारी, रामलीला व जन्माष्टमी आदि कार्यों में उनकी विशेष रूचि रहती थी। अनेक बार स्थानीय विद्यालयों में मुख्य अतिथि के रूप में पधार कर बच्चों को राष्ट्र निर्माण की सदा प्रेरणा देते रहे। उनकी एक विशेषता थी कि वह हर कार्य में समय पालन का बहुत ध्यान रखते थे। उन्होंने "सादे व अनुशासित जीवन" को अपने जीवन में विशेष स्थान दिया।

४. सर्वश्री बाला साहब देवरस, अनन्त रावजी गोखले, लाल कृष्ण आडवानी, माधवराव मूले, कृष्णलाल शर्मा आदि अनेक राष्ट्रीय विचार-परक नेता

लाला श्री राजाराम जी के ज्येष्ठ सुपुत्र श्री ओमप्रकाश गुप्त जी के फगवाड़ा इम्प्रूवमेन्ट ट्रस्ट के अध्यक्ष बनने पर एक दृश्य

आपके निवास पर आकर समाज व राष्ट्र निर्माण के सन्दर्भ में गहन विचार-विमर्श करते थे।

५. भारत में जब १९७५ में आपातकाल घोषित किया गया तो राजा राम जी ने इसका घोर विरोध किया। जालन्धर में सत्याग्रह प्रारम्भ हुआ और लाला

जी को चार मास तक फिरोजपुर जेल में रखा गया। इस सत्याग्रह में आपके साथ श्री गुरचरण सिंह टोहरा, प्रकाश सिंह बादल, कृष्ण लाल जी मैनी के अतिरिक्त अनेक स्थानीय नेता भी जेल में रहे।

६. उन्होंने अपने पुत्रों को व्यापार-विस्तार हेतु दिल्ली में भेजा। संघ-सम्पर्क, सामाजिक व व्यापारिक क्षेत्रों में असीम स्नेह-पूर्ण सम्बन्धों के कारण पांव जमें तो लोहा-मण्डी नारायणा में व्यापार का विस्तार शुरू हो गया। यह सब पूज्य लालाजी के सात्विक ज्ञान और उनके पुण्य आशीर्वाद का फल था।

७. गोरक्षा सम्मेलन में सक्रिय भागीदारी के अतिरिक्त, अनेक धार्मिक सामाजिक मंचों व भारतीय जनता पार्टी के मंचों से देश-प्रेम के गीतों व कविताओं के पाठ ने आपका नाम इतना चमका दिया कि समाज व राजनीति में आपका नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता रहा। अनाथ आश्रम हो या कोई सेवा केन्द्र व चैरिटेबल संस्था हो, आपका सहयोग हर समय सबको प्राप्त होता था। तन, मन और धन से समाज व देश की निस्वार्थ सेवा जीवन भर की और इस में ही वह अपना व अपने परिवार का कल्याण मानते थे। आपको अग्रवाल समाज का प्रधान आपकी योग्यता व सेवा-भाव के आधार पर ही बनाया गया और यह गौरव-पूर्ण सम्मान अन्त तक बना रहा।

८. सन १९८३ में पंजाब की आतंकवादी समस्या को लेकर अग्रवाल समाज का एक प्रतिनिधि मण्डल श्री राजा राम अग्रवाल के साथ भारत की तत्कालीन प्रधान मंत्री श्रीमती गांधी से मिला और लगभग दो घंटे तक श्रीमती गांधी से श्री राजा राम जी ने पंजाब से आंतकवाद समाप्त किये जाने के बारे में विस्तार पूर्वक बाचचीत की।

९. श्री राजा राम जी के पुण्य विचारों व उनकी सेवा-भाव की उत्तम भावनाओं ने उनके परिवार के सब सदस्यों पर पूरा प्रभाव डाला। यही कारण है कि उनके पुत्र व अन्य सदस्य उसी तरह से राष्ट्रीय, सामाजिक कार्यों में जुड़े हुए हैं जैसे कि इनके पिताजी की प्रबल इच्छा थी।

१०. लालाजी का जीवन पवित्र, सत्यवादी व शुद्ध था। इसीलिए उन्होंने अपने

जीवन में मीट तथा शराब को छुआ तक नहीं। सिगरेट और तम्बाकू के वे घोर विरोधी थे।

११. आपने सदा अपने घर में धार्मिक वातावरण बनाये रखा। ९ अप्रैल १९९४ के दिन घर पर आरती हो रही थी; घर के सभी सदस्य उपस्थित थे, आरती सम्पूर्ण होते ही आपके मुख से अन्तिम शब्द "जय श्री राम" व 'भारत माता की जय' निकले और सदा के लिए वह संसार त्याग प्रभु चरणों में लीन हो गये।

विशेषेण ध्यातव्यम्

आसननियमः—

संस्कार्यः पुरुषो वाऽपि स्त्री वा दक्षिणतः सदा।
संस्कारकर्त्ता सर्वत्र तिष्ठेदुत्तरतः सदा॥
व्रतबन्धे विवाहे च चतुर्थ्यां सहभोजने।
व्रते दाने मखे श्राद्धे पत्नी तिष्ठति दक्षिणे॥

शिवप्रदक्षिणाविधिः

ईशानकोणे चण्डेश्वरः। दक्षिणे सोमेश्वरः।
सम्मुखे वृषः। तत्र सव्यापसव्यास्तिस्त्रः

प्रदक्षिणाः। *तद्यथा—*

वृषं चण्डं वृषं चैव सोमसूत्रं पुनर्वृषम्।
चण्डं च सोमसूत्रं च पुनश्चण्डं पुनर्वृषम्॥

तत्र प्रणालं नैव लङ्घयेत्।

शतरुद्रियलक्षणम् बृहत्पाराशरस्मृतिमते—

षट्षष्टिर्नीलसूक्तं च पुनः षोडश ऋचो जपेत्।
एष ते द्वे नमस्ते द्वे न तं विद्वयमेव च॥
मीढुष्टमेति चत्वारि ह्येतच्च शतरुद्रियम्॥

नमस्ते रुद्र	(वाजसनेयी संहिता १६/१-६६)	= ६६
वयं सोम	(वा.सं. ३/५६-६३)	= ८
नमस्ते रुद्र	(वा.सं. १६/१-१६)	= १६
एष ते रुद्र	(वा.सं. ३/५७-५८)	= २
नमस्ते हरसे	(वा.सं. १७/११)	= १
नमस्ते अस्तु विद्युते	(वा. सं. ३६/२१)	= १

न तं विदाथ	(वा.सं. १७/३१-३२)	= २
मीढुष्टम	(वा.सं. १६/५१-५४)	= ४
मन्त्राणां सर्वेषां योग:		= १००

रुद्रकल्पद्रुमे रुद्रभेदा: —

श्रृणुष्व भो महाप्राज्ञ रुद्रभेदान् वदामि ते।
रुद्रा: पञ्चविधा: प्रोक्ता दैशिकैरुत्तरोत्तरम्॥
साङ्गस्त्वाद्यो रूपकाख्य: सशीर्षो रुद्र उच्यते।
एकादशगुणैस्तद्वद्रुद्रीसंज्ञो द्वितीयक:॥
एकादशभिरेताभिस्तृतीयो लघुरुद्रक:।
लघ्वेकादशभि: प्रोक्तो महारुद्रश्चतुर्थक:॥
पञ्चम: स्यान्महारुद्रैरेकादशभिरन्तिम:।
अतिरुद्र: समाख्यात: सर्वेभ्यो ह्युत्तमोत्तम:॥

कैवल्योपनिषदि—

य: शतरुद्रियमधीते सोऽग्निपूतो भवति। स सुरापानात् पूतो भवति। स्वर्णस्तेयात् पूतो भवति। स ब्रह्महत्याया: पूतो भवति। स कृत्याकृत्याया: पूतो भवति। तस्मादविमुक्तमाश्रितो भवति। अत्याश्रमी सर्वदा सकृद्वा जपेत्।

य: श्रद्धया युतो नित्यं शतरुद्रियमभ्यसेत्।
अग्निदाहात् सुरापानाद् दुष्कृत्याचरणात् तथा।
मुच्यते ब्रह्महत्याया इति कैवल्यशाखिन:।

बौधायनगृह्यसूत्रे२/१८/१५ —

तदेतद्रुद्रार्चनं पापक्षयार्थी व्याधिविमोचनार्थी श्रीकाम: शान्तिकाम: पुष्टिकाम आयुष्काम आरोग्यकामो मोक्षकामश्च कुर्यात्।

वायुपुराणे—

अनपत्यत्वदोषेषु शाकिन्यादिग्रहेषु च।
सर्वज्वरविनाशाय रुद्रो जाप्यो न संशय:॥

रोगवान् पापवांश्चैव रुद्रं जप्त्वा जितेन्द्रियः।
रोगात् पापात् प्रमुक्तोऽसावतुलं सुखमश्नुते॥

रुद्रस्नपनद्रव्याणि रुद्रचिन्तामणौ-

जलेन वृष्टिमाप्नोति व्याधिशान्त्यै कुशोदकैः।
दध्ना च पशुकामाय श्रिया इक्षुरसेन च॥ १॥
मध्वाज्येन धनार्थी च मुमुक्षुस्तीर्थवारिणा॥
पुत्रार्थी पुनमाप्नोति पयसाञ्चाभिषेचनात्॥ २॥
बन्ध्या वा काकबन्ध्या वा मृतवत्सा च याऽङ्गना।
सद्यः पुत्रमवाप्नोति पयसाञ्चाभिषेचनात्॥ ३॥

महाकालसंहितायाम् —

ज्वरप्रकोपशान्त्यर्थं जलधारा शिवप्रिया।
प्रमेहरोगशान्त्यर्थं प्राप्नुयान्मानसेप्सितम्॥ १॥

शिवपुराणे रुद्रसंहितायां सृष्टिखण्डे १ अध्याये १५ श्लोके॥

घृतधारा शिवे कार्या यावन्मन्त्रसहस्त्रकम्।
तदा वंशस्य विस्तारो जायते नात्र संशयः॥ १॥
केवलं दुग्धधारा च तदा कार्या विशेषतः।
शर्करामिश्रिता तत्र यदा बुद्धिर्जडा भवेत्॥ २॥
श्रेष्ठा बुद्धिर्भवेत् साऽपि कृपया शङ्करस्य च।
तस्य संजायते जीवसदृशी बुद्धिरुत्तमा॥ ३॥
यदा चोच्चाटनं देहे जायते कारणं विना॥
यत्र कुत्रापि वा प्रेम दुःखं च परिवर्धते॥ ४॥
स्वगृहे कलहो नित्यं यदा चैव प्रजायते।
तद्धारायां कृतायां वै सर्वं दुःखं विलीयते॥ ५॥
सार्षपेणैव तैलेन शत्रुनाशो भवेदिह।
मधुना यक्षराजो वै गच्छेच्च शिवपूजनात्॥ ६॥
धारा चेक्षुरसस्यापि सर्वानन्दकरी शिव।
धारा गङ्गाजलस्यैव भुक्तिमुक्तिफलप्रदा॥ ७॥

पराशरोऽपि—

पापक्षयार्थी मधुना निर्व्याधिः सर्पिषा तथा।
जीवनार्थी तु पयसा श्रीकामीक्षुरसेन वै॥ १॥
सन्तानार्थी शर्करया रसेनार्चेच्छिवन्तथा।
पूजनीयो महादेवः श्रेयः सन्ततिमिच्छता॥ २॥
केवलेनोदकेनैव स्नपनं मे भवेत् सदा।
गन्धोदकं शतगुणं पञ्चगव्यं तिलोदकम्॥ ३॥
तस्माच्छतगुणं क्षीरं सहस्रं कापिलं भवेत्॥
ततः शतगुणं प्रोक्तं सर्पिषा स्नानमेव च॥ ४॥

जिनका यज्ञोपवीत न हुआ हो, वे प्रणव (ॐ) रहित मन्त्रों का उच्चारण करें। पार्थिव-पूजन करने का अधिकार स्त्री, शूद्र, अन्त्यज आदि सभी वर्णों को है।

शमी या पीपल के पेड़ की जड़ की मिट्टी या विमौट (वल्मीक) अच्छी मानी जाती है। या पावत्र जगह से ऊपर से चार अंगुल मिट्टी हटाकर भीतर की मिट्टी का अथवा गङ्गादि पवित्र स्थानों की मिट्टी का संग्रह करे।

विना भस्मत्रिपुण्ड्रेण विना रुद्राक्षमालया।
पूजितोऽपि महादेवो न स्यात् तस्य फलप्रदः।
तस्मान्मृदापि कर्तव्यं ललाटे वै त्रिपुण्ड्रकम्॥

(लिंङ्गपुराण)

अष्टमी अमावस्या, पूर्णिमा, संक्रान्ति तथा सोमवार को बिल्वपत्र न तोड़े।

यवा, कुन्द, शिरीष, जूही, मालती तथा केतकी का पुष्प शिव जी को न चढ़ायें। कनेर, आक, धत्तूर, अपामार्ग (पुटकंडा), भांग के पुष्प-पत्र चढ़ाये। सुगन्धित पुष्प ही देवों को चढ़ायें।

पूजा से पहले पात्रों को क्रम से यथास्थान रखकर पूर्व दिशा की ओर मुख करके आसन पर बैठ कर तीन बार आचमन करना चाहिये—

ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः।

आचमन के पश्चात् दाहिने हाथ के अँगूठे के मूलभाग से '**ॐ हृषीकेशाय नमः, ॐ गोविन्दाय नमः**' कहकर ओठों को पोंछकर हाथ धो लेना चाहिये। तत्पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से पवित्री धारण करे—

ओं पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्।

पवित्री धारण करने के पश्चात् प्राणायाम करे। इसके बाद बायें हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ से अपने ऊपर और पूजा सामग्री पर छिड़कना चाहिये—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।

यः स्मरेत् पुण्डीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु (तीन बार बोलें)

तदनन्तर पात्र में अष्टदल-कमल बनाकर यदि गणेश-अम्बिकाकी मूर्ति न हो तो सुपारी में मौली लपेटकर अक्षत पर स्थापित कर देने के बाद हाथ में अक्षत और पुष्प लेकर स्वस्त्ययन पढ़ना चाहिये।

स्वस्त्ययन

ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः। देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे॥ देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानाꣳरातिरभि नो निवर्तताम्। देवानाꣳसख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे॥ तान्पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदितिं दक्षमस्त्रिधम्। अर्यमणं वरुणꣳसोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्॥ तन्नो वातो मयोभु वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः। तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणुतं धिष्ण्या युवम्॥ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥ पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसागमन्निह॥ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं

यदायुः॥ शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः॥ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वे देवा अदितिः पञ्च जना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्॥ (शु० य० २५।१४-२३) द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳशान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥ (शु० स० ३६। १७) यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं करु। शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः। सुशान्तिर्भवतु॥ (शु० य० ३६॥ २२)

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। उमामहेश्वराभ्यां नमः। वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। शचीपुरन्दराभ्यां नमः। मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः। इष्टदेवताभ्यो नमः। कुलदेवताभ्यो नमः। ग्रामदेवताभ्यो नमः। वास्तुदेवताभ्यो नमः। स्थानदेवताभ्यो नमः। सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः॥

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
सङ्ग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥

शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः॥

सर्वमङ्गलमङ्गल्ये! शिवे! सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके! गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते॥

सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम्।
येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनं हरिः॥

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।
विद्याबलं देवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि॥

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः॥

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्॥

स्मृतेः सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते।
पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्।

सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः॥

विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्।
वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम्॥

वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।
निर्विघ्नं करु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

गणेशाम्बिकाभ्यां नमः॥

हाथ में लिये अक्षत-पुष्प को गणेशाम्बिका पर चढ़ा दे। इसके बाद दाहिने हाथ में जल, अक्षत और द्रव्य लेकर संकल्प करें।

(क) निष्काम संकल्प

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवश्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे.....नगरे/ग्रामे/क्षेत्रे.....वैकमाब्दे.... संवत्सरे.....मासे..... शुक्ल/कृष्णपक्षे..... तिथौ.....वासरे.....प्रातः/सायंकाले....गोत्रः ..... शर्मा/

वर्मा/गुप्तः अहं ममोपात्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं ....साम्बशिवदेवस्य पूजनमभिषेकं च करिष्ये।

(ख) सकाम संकल्प

यदि सकाम पूजा करनी हो तो कामना-विशेषका नाम लेना चाहिये— या निम्नलिखित संकल्प करना चाहिये—

..........अहं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य क्षेमस्थैर्यायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थमाधिभौतिकाधिदैविकाध्यात्मिकत्रिविधतापशमनार्थं धर्मार्थकाममोक्षफलप्राप्त्यर्थं नित्यकल्याणलाभाय भगवत्प्रीत्यर्थं साम्बशिवस्य पूजनमभिषेकं च करिष्ये।

अथ षडङ्गन्यासाः। मनोजूतिरिति मन्त्रस्य बृहस्पतिर्ऋषिः बृहस्पतिर्देवता बृहतीच्छन्दः हृदयन्यासे जपे विनियोगः॥

ॐमनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमन्दधातु। विश्वदेवास इह मादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ॥ ॐहृदयाय नमः॥ १॥ अबोद्ध्यग्निरिति मन्त्रस्य बुधगविष्ठिरा ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः अग्निर्देवता शिरोन्यासे जपे विनियोगः ॐ अबोद्ध्यग्निःसमिधा जनानाम्प्रतिधेनुमिवायतीमुषासम्। यह्वाऽइव प्रवयामुज्जिहानाः प्रभानवः सिस्रते नाकमच्छ॥ ॐ शिरसे स्वाहा॥ २॥ मूर्द्धानमिति मन्त्रस्य भरद्वाज ऋषिः अग्निर्देवता त्रिष्टुप् छन्दः शिखान्यासे जपे विनियोगः। ॐ मूर्द्धानन्दिवोऽअरतिम्पृथिव्या वैश्वानरमृतऽआजातमग्निम्। कविꣳ सम्राजमतिथिञ्जनानामासन्ना पात्रञ्जनयन्त देवाः॥ ॐ शिखायै वषट्॥ ३॥ मर्म्माणि त इति मन्त्रस्य अप्रतिरथ ऋषिः मर्म्माणि देवता विराट्छन्दः कवचन्यासे जपे विनियोगः। ॐ मर्म्माणि ते वर्म्मणा च्छादयामि सोमस्त्वा राजामृतेनानुवस्ताम्। उरोर्व्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु जयन्तन्त्वानुदेवा मदन्तु॥ ॐ कवचाय हुम्॥ ४॥ विश्वतश्चक्षुरिति मन्त्रस्य विश्वकर्मा भौवन ऋषिः विश्वकर्मा देवता त्रिष्टुप्छन्दः नेत्रन्यासे जपे विनियोगः॥ ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुतविश्वतस्पात्। सम्बाहुब्भ्यान्धमति-

सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः॥ ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्॥ ५॥ मानस्तोक इति मन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिः एकरुद्रो देवता जगती छन्दः अस्त्रन्यासे जपे विनियोगः॥ ॐ मा नस्तोके तनये मा न ऽआयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान्रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे॥ ॐ अस्त्राय फट्॥ ६॥

गणपति और गौरी की पूजा

(पूजा में जो वस्तु विद्यमान न हो उसके लिए 'मनसा परिकल्प्य समर्पयामि' कहे। जैसे, आभूषण के लिए **'आभूषणं मनसा परिकल्प्य समर्पयामि'**।)

हाथ में अक्षत लेकर ध्यान करे —

भगवान गणेश का ध्यान—

ओं गजाननं भूतगणादिसेवितं कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम्।
उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम्॥

भगवती गौरी का ध्यान—

ओं नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्॥
श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ध्यानं समर्पयामि।

भगवान् गणेश का आवाहन—

ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳहवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳहवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्॥ (शु० यजुर्वेद २।१९)

एह्येहि हेरम्ब महेशपुत्र समस्तविघ्नौघविनाशदक्ष।
माङ्गल्यपूजाप्रथमप्रधान गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धिबुद्धिसहिताय गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च।

हाथ के अक्षत गणेशजी पर चढ़ा दे। फिर अक्षत लेकर गणेशजी की दाहिनी ओर गौरी जी का आवाहन करे।

भगवती गौरी का आवाहन —

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥

(शु० य० २३। १८)

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः, गौरीमावाहयामि, स्थापयामि. पूजयामि च।

प्रतिष्ठा— ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमं दधातु। विश्वे देवास इह मादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ॥

(यर्जुवेद २। १३)

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

गणेशाम्बिके! सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम्।

प्रतिष्ठापूर्वकम् आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि गणेशाम्बिकाभ्यां नमः।

(आसन के लिए अक्षत समर्पित करे)।

पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय, स्नानीय, पुनराचमनीय — **ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्॥** (शु० यजु० १। १०)

एतानि पाद्यार्घ्याचमनीयस्नानीयपुनराचमनीयानि समर्पयामि गणेशाम्बिकाभ्यां नमः। (इतना कहकर जल चढ़ा दे)।

दुग्धस्नान — ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥

(शु० यर्जुवेद ८। ३६)

कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पयःस्नानं समर्पयामि। (दूध से स्नान कराये।)

दधिस्नान— ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।
सुरभि नो मुखा करत्प्र ण आयूꣳषि तारिषत्॥
(यजु० २३। ३२)

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दधिस्नानं समर्पयामि। (दधि से स्नान कराये)।

घृतस्नान — ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम।
अनुष्वधमा वह मादयस्व स्वाहाकृते वृषभ वक्षि हव्यम्॥
(यजु० १७। ८८)

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, घृतस्नानं समर्पयामि। (घृत से स्नान कराये)।

मधुस्नान — ॐ मधुवाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥
मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳरजः। मधुद्यौरस्तु नः पिता॥
(यजु० १३। २७-२८)

पुष्परेणुसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजःपुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मधुस्नानं समर्पयामि। (मधु से स्नान कराये।)

शर्करास्नान—ॐ अपाꣳरसमुद्वयसꣳ सूर्ये सन्तꣳ समाहितम्। अपाꣳ रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्॥ (यजु० ९। ३)

इक्षुरससमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, शर्करास्नानं समर्पयामि। (शर्करा से स्नान कराये)।

पञ्चामृतस्नान— ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्त्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्॥
(यजु० ३४।११)

पञ्चामृतं मयानीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करया मया युक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि। (पञ्चामृत से स्नान कराये।)

गन्धोदकस्नान— ॐ अꣳशुना ते अꣳशुः पृच्यतां परुषा परुः।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः॥
(यजु० २०।२७)

मलयाचलसम्भूतचन्दनेन विनिःसृतम्।
इदं गन्धोदकस्नानं कुङ्कुमाक्तं च गृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, गन्धोदकस्नानं समर्पयामि। (गन्धोदक से स्नान कराये।)

शुद्धोदकस्नान — ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः
श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामा
अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः॥ (यजु० २४।३)

गङ्गा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदा सिन्धुकावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। (शुद्ध जल से स्नान कराये।)

आचमन — शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (आचमन के लिये जल दे।)

वस्त्र — ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात् स उ श्रेयान् भवति जायमानः।
तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो३ मनसा देवयन्तः॥
(ऋग्० ३।८।४)

शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रं समर्पयामि। (वस्त्र समर्पित करे।)

आचमन — वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (आचमन के लिये जल दे।)

उपवस्त्र — ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमाऽसदत्स्वः।
वासो अग्ने विश्वरूपꣳ सं व्ययस्व विभावसो॥
(यजु० ११। ४०)

यस्याभावेन शास्त्रोक्तं कर्म किञ्चिन्न सिध्यति।
उपवस्त्रं प्रयच्छामि सर्वकर्मोपकारकम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, उपवस्त्रं (उपवस्त्राभावे रक्तसूत्रं समर्पयामि)। (उपवस्त्र समर्पित करे।)

आचमन— उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (आचमन के लिये जल दे।)

यज्ञोपवीत— ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥
यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि॥
नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि। (यज्ञोववीत समर्पित करे।)

आचमन— यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (आचमन के लिये जल दे।)

चन्दन— ॐ त्वां गन्धर्वा अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत॥
(यजु० १२। ९८)

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्व गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, चन्दनानुलेपनं समर्पयामि। (चन्दन अर्पित करे।)

अक्षत— ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत।
अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मतीयोजा न्विन्द्र ते हरी॥
(यजु० ३। ५१)

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अक्षतान् समर्पयामि। (अक्षत चढ़ाये।)

पुष्पमाला — ॐ ओषधीः प्रति मोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अश्वा इव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः॥(यजु० १२। ७७)

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पुष्पमालां समर्पयामि। (पुष्पमाला समर्पित करे।)

दूर्वा — ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवा नो दूर्वे प्र तनु सहस्रेण शतेन च॥ (यजु० १३। २०)

दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि। (दूर्वाङ्कुर चढ़ाये।)

सिन्दूर — ॐ सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः।
घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः॥
(यजु० १७। ९५)

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सिन्दूरं समर्पयामि। (सिन्दूर अर्पित करे।)

अबीर-गुलाल आदि नाना परिमल द्रव्य — ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः। हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमाꣳसं परि पातु विश्वतः॥ (यजु० २९।५१)

अबीरं च गुलालं च हरिद्रादिसमन्वितम्।
नाना परिमलं द्रव्यं गृहाण परमेश्वर॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि। (अबीर आदि चढ़ाये।)

सुगन्धिद्रव्य — ॐ अहिरिव..............................विश्वतः॥

दिव्यगन्धसमायुक्तं महापरिमलाद्भुतम्।
गन्धद्रव्यमिदं भक्त्या दत्तं वै परिगृह्यताम्।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सुगन्धिद्रव्यं समर्पयामि। (सुगन्धित द्रव्य अर्पण करे।)

धूप — ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्व यं वयं धूर्वामः। देवानामसि वह्नितमꣳसस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्॥ (यजु० १।८)

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपमाघ्रापयामि। (धूप दिखाये।)

दीप — ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।
अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा॥
ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहाः॥ (यजु० ३।९)

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥

भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
त्राहि मां निरयाद् घोराद् दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दीपं दर्शयामि। (दीप दिखाये।)

हस्तप्रक्षालन —'**ॐ हृषीकेषाय नमः**' कहकर हाथ धो ले।

नैवेद्य — नैवेद्य को प्रोक्षित कर गन्ध-पुष्प से आच्छादित करे। तदनन्तर जल से चतुष्कोण घेरा लगाकर भगवान् के आगे रखे।

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्षꣳ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ अकल्पयन्॥
(यजु० ३१। १३)

ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।

ॐ प्राणायस्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा।
ॐ उदानाय स्वाहा।ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा।

शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नैवेद्यं निवेदयामि। (नैवेद्य निवेदित करे।)

नैवेद्यान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (जल समर्पित करे।)

ऋतुफल — **ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।**
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वꣳहसः॥
(यजु० १२। ८९)

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि॥

ॐ भूभुर्वः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ऋतुफलानि समर्पयामि। (ऋतुफल अर्पित करे।)

फलान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (आचमनीय जल अर्पित करे।)

उत्तरापोऽशन — उत्तरापोऽशनार्थे जलं समर्पयामि। गणेशाम्बिकाभ्यां नमः। (जल दे।)

करोद्वर्तन — ॐ अꣳशुना ते अꣳशुः पृच्यतां परुषा परुः।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः॥ (यजु० २०। २७)

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।
करोद्वर्तनकं देव गृहाण परमेश्वर॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, करोद्वर्तनकं चन्दनं समर्पयामि। (मलयचन्दन समर्पित करे।)

ताम्बूल — ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥ (यजु० ३१। १४)

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मुखवासार्थम् एलालवंगपूगीफलसहितं ताम्बूलं समर्पयामि। (इलायची, लौंग-सुपारी के साथ ताम्बूल अर्पित करे।)

दक्षिणा — ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥
(यजु० १३। ४)

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि। (द्रव्य दक्षिणा समर्पित करे।)

आरती — ॐ इदꣳ हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीरꣳसर्वगणꣳस्वस्तये।
आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि।
अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त॥
(यजु० १९। ४८)

ॐ आ रात्रि पार्थिवः रजः पितुरप्रायि धामभिः।
दिवः सदाः सि बृहती वि तिष्ठस आ त्वेषं वर्तते तमः॥

(यजु० ३४। ३२)

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आरार्तिकं समर्पयामि। (कर्पूर की आरती करे, आरती के बाद जल गिरा दे।)

पुष्पाञ्जलि — ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥

(यजु० ३१। १६)

ॐ गणानां त्वा.............॥
ॐ अम्बे अम्बिके.........॥

नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तो गृहाण परमेश्वर॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आरार्तिकं समर्पयामि। (कर्पूर की आरती करे, आरती के बाद जल गिरा दे।)

प्रदशिणा— ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः।
तेषाः सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।

(यजु० १६। ६१)

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणे पदे पदे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि। (प्रदक्षिणा करे।)

विशेषार्घ्य — ताम्रपात्र में जल, चन्दन , अक्षत, फल, फूल, दूर्वा और दक्षिणा रखकर अर्घ्यपात्र को हाथ में लेकर निम्नलिखित मन्त्र पढ़े —

ओं रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षक।
भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्॥

द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो।
वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद॥
अनेन सफलार्घ्येण वरदोऽस्तु सदा मम।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, विशेषार्घ्यं समर्पयामि। (विशेषार्घ्य दे।)

प्रार्थना — ओं विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय
लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय
गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते॥
भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय
सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय
भक्तप्रसन्नवरदाय नमो नमस्ते॥
नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः
नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः।
विश्वरूपस्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे
भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक॥
त्वां विघ्नशत्रुदलनेति च सुन्दरेति
भक्तप्रियेति सुखदेति फलप्रदेति।
विद्याप्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति
तेभ्यो गणेश वरदो भव नित्यमेव॥
त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या
विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्
त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः॥

---

* अचल प्रतिमा का विसर्जन नहीं किया जाता, किंतु आवाहित एवं प्रतिष्ठित देवप्रतिमाओं का विसर्जन करना चाहिये।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, **प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि।** (साष्टाङ्ग नमस्कार करे।)

गणेशपूजने कर्म यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
तेन सर्वेण सर्वात्मा प्रसन्नोऽस्तु सदा मम॥
अनया पूजया गणेशाम्बिके प्रीयेताम्, न मम।

(ऐसा कहकर समस्त पूजनकर्म भगवान् को समर्पित कर दे)* तथा पुनः नमस्कार करे।

वैदिक शिव-पूजन

भगवान् शङ्कर की पूजा के समय शुद्ध आसन पर बैठकर पहले आचमन, पवित्री-धारण, शरीर-शुद्धि और आसन-शुद्धि कर लेनी चाहिये। तत्पश्चात् पूजन-सामग्री को यथास्थान रखकर रक्षादीप प्रज्वलित कर ले, तदनन्तर स्वस्ति-पाठ करे। इसके बाद पूजन का संकल्प कर तदङ्गभूत भगवान् गणेश एवं भगवती गौरी का स्मरणपूर्वक पूजन करना चाहिये। रुद्राभिषेक, लघुरुद्र, महारुद्र तथा सहस्रार्चन आदि विशेष अनुष्ठानों में नवग्रह, कलश, षोडशमातृका आदि का भी पूजन करना चाहिये। यदि ब्राह्मणों द्वारा अभिषेक-कर्म सम्पन्न हो रहा हो तो पहले उनका पादप्रक्षालनपूर्वक अर्घ्य, चन्दन, पुष्पमाला आदि से अर्चन करे, फिर वरणीय सामग्री हाथ में ग्रहणकर संकल्पपूर्वक उनका वरण करे।

वरण का संकल्प — ॐ अद्य....मम...रुद्राभिषेकाख्ये कर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः अमुकामुकगोत्रोत्पन्नान् अमुकामुक-नाम्नो ब्राह्मणान् युष्मानहं वृणे।

तदनन्तर ब्राह्मण बोले —'**वृताः स्मः**'।

भगवान् शङ्कर की पूजा में उनके विशिष्ट अनुग्रह की प्राप्ति के लिये उनके परिकर-परिच्छद एवं पार्षदों का भी पूजन किया जाता है। संक्षेप में उसे भी यहाँ दिया जा रहा है।

नन्दीश्वर-पूजन

ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन् मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः॥

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करे—

ॐ प्रैतु वाजी कनिक्रदन्नानदद्रासभः पत्वा।
भरन्नग्निं पुरीष्यं मा पाद्यायुषः पुरा॥

वीरभद्र-पूजन

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करे—

ॐ भद्रो नो अग्निराहुतो भद्रा रातिः सुभग भद्रो अध्वरः।
भद्रा उत प्रशस्तयः॥

कार्तिकेय-पूजन

ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्।
श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन्॥

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करे—

ॐ यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशाखा इव। तन्न इन्द्रो
बृहस्पतिरदितिः शर्म यच्छतु विश्वाहा शर्म यच्छतु॥

कुबेर-पूजन

ॐ कुविदङ्ग यवमन्तो यवं चिद्यथा दान्त्यनुपूर्वं वियूय।
इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नम उक्तिं यजन्ति॥

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करे—

ॐ वयꣳ सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि॥

कीर्तिमुख-पूजन

ॐ असवे स्वाहा वसवे स्वाहा विभुवे स्वाहा विवस्वते स्वाहा गणश्रिये स्वाहा गणपतये स्वाहाऽभिभुवे स्वाहाऽधिपतये स्वाहा शूषाय स्वाहा स ꣳ सर्पाय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा ज्योतिषे स्वाहा मलिम्लुचाय स्वाहा दिवा पतयते स्वाहा॥

पूजन करके नीचे लिखे प्रार्थना करे—

ॐ ओजश्च मे सहश्च म आत्मा च मे तनूश्च मे शर्म च मे वर्म च मेऽङ्गानि च मेऽस्थीनि च मे परूꣳषि च मे शरीराणि च म आयुश्च मे जरा च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।

सर्प-पूजन

जलहरी में सर्प का आकार हो तो सर्प का पूजन कर पश्चात् शिव-पूजन करे।

शिव-पूजन

सर्वप्रथम हाथ में बिल्वपत्र और अक्षत लेकर भगवान् शिव का ध्यान करे[1]।

ध्यान— **ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं**
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, ध्यानार्थे बिल्वपत्रं समर्पयामि। (ध्यान करके शिवपर बिल्वपत्र चढ़ा दे।)

आसन— **ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी**
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि॥

---

१. प्रतिष्ठित शिवमूर्ति, ज्योतिर्लिङ्ग, स्वयम्भूलिङ्ग तथा नर्मदेश्वरलिङ्गादि में आवाहन एवं विसर्जन नहीं होता, उनमें ध्यान करके ही पूजा की जाती है।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, आसनार्थे बिल्वपत्राणि समर्पयामि। (आसन के लिये बिल्वपत्र चढ़ाये।)

पाद्य— ॐ यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे।
शिवां गिरित्र तां कुरु मा हि ँ सीः पुरुषं जगत्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, पादयोः पाद्यं समर्पयामि। (जल चढ़ाये।)

अर्घ्य— ॐ शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि।
यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मँ सुमना असत्।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि। (जल चढ़ाये।)

आचमन— ॐ अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्।
अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परा सुव॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, आचमनीयं जलं समर्पयामि। (जल चढ़ाये।)

स्नान — ॐ असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः।
ये चैन ँ रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषाँहेड ईमहे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः,स्नानीयं जलं समर्पयामि। स्नानान्ते आचमनीयं जलं च समर्पयामि (स्नानीय और आचमनीय जल चढ़ाये।)

पयःस्नान— ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, पयःस्नानं समर्पयामि, पयःस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि, शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (दूध से स्नान कराये, पुनः शुद्ध जल से स्नान कराये और आचमन के लिये जल चढ़ाये।)

दधिस्नान — ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।
सुरभि नो मुखा करत्प्र ण आयूँषि तारिषत्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, दधिस्नानं समर्पयामि, दधिस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि, शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (दही से स्नान कराकर शुद्ध जल से स्नान कराये तथा आचमन के लिये जल समर्पित करे।)

घृतस्नान— ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतस्वस्य धाम।
अनुष्वधमा वह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, घृतस्नानं समर्पयामि, घृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि, शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (घृत से स्नान कराकर शुद्ध जल से स्नान कराये और पुनः आचमन के लिये जल चढ़ाये।)

मधुस्नान—

ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥
मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता॥
मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ२ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, मधुस्नानं समर्पयामि, मधुस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि, शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (मधु से स्नान कराकर शुद्ध जल से स्नान कराये तथा आचमन के लिये जल समर्पित करे।)

शर्करास्नान— ॐ अपाꣳरसमुद्वयसꣳसूर्ये सन्तꣳसमाहितम्।
अपाꣳ रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतो-
ऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, शर्करास्नानं समर्पयामि, शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि, शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (शर्करा से स्नान कराकर शुद्ध जल से स्नान कराये तथा आचमन के लिये जल चढ़ाये।)

पञ्चामृतस्नान— ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्त्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि, पञ्चामृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि, शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (पञ्चामृत से स्नान कराकर शुद्ध जल से स्नान कराये तथा आचमन के लिये जल चढ़ाये।)

गन्धोदकस्नान— ॐ अꣳशुना ते अꣳशुः पृच्यतां परुषा परुः।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, गन्धोदकस्नानं समर्पयामि, गन्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (गन्धोदक से स्नान कराकर आचमन के लिये जल चढ़ाये।)

शुद्धोदकस्नान— ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः
श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा
अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। (शुद्ध जल से स्नान कराये)।

आचमनीय जल — ॐ अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्।
अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परा सुव॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, आचमनीयं जलं समर्पयामि। (आचमन के लिए जल चढ़ाये)।

अभिषेक

शुद्ध जल, गङ्गाजल अथवा दुग्धादि से निम्न 16 मन्त्रों का अथवा विशेष फल के लिये शतरुद्रिय का पाठ करते हुए शिवलिङ्ग का अभिषेक करे।

अथशतरुद्रियप्रारम्भः

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवं उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः॥ १॥

या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि॥ २॥

यामिषुङ्गिरिशन्त हस्तें बिभर्ष्यस्तंवे। शिवाङ्गिंरित्र ताङ्कुरु मा हिंᳫंसीः पुरुंषञ्जगंत्॥ ३॥

शिवेन वचंसा त्वा गिरिशाच्छां वदामसि। यथां नः सर्वमिज्जगंदयक्ष्मᳫंसुमना असंत्॥ ४॥

अद्ध्यंवोचदधिवक्ता प्रंथमो दैव्यों भिषक्।

अंहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वांश्च यातुधान्यो ऽ धराचीः परां सुव॥ ५॥

असौ यस्ताम्रो अंरुण उत बभ्रुः सुंमङ्गलंः। ये चैनᳫं रुद्रा अभितों-दिक्षु श्रिताः संहस्त्रशो वैषाᳫंहेड ईमहे॥ ६॥

असौ योंऽवसंर्पति नीलंग्रीवो विलोंहितः। उतैनंङ्गोपा अंदृश्रन्न-दृंश्रन्नुदहार्यः स दृष्टो मृंडयाति नः॥ ७॥

नमोंऽस्तु नीलंग्रीवाय सहस्त्राक्षायं मीढुषें। अथो ये अंस्य सत्त्वांनोऽ-हन्तेभ्योंऽकरन्नमंः॥ ८॥

प्रमुंञ्च धन्वंनस्त्वमुभयोरात्र्न्योंर्ज्याम्। याश्चं ते हस्त इषंवः परा ता भंगवो वप॥ ९॥

विज्यन्धनुंः कपर्दिनो विशंल्यो बाणंवाँ२उत। अनेंशन्नस्य या इषंवऽआभुरंस्य निषङ्गधिः॥ १०॥

या तें हेतिर्म्मीढुष्टम हस्तें बभूवं ते धनुंः। तयाऽस्मान्विश्वतस्त्व-मंयक्ष्मया परिं भुज॥ ११॥

परिं ते धन्वंनो हेतिरस्मान्वृंणक्तु विश्वतंः। अथो यऽ इंषुधिस्तवारे अस्मन्नि धेंहि तम्॥ १२॥

अवतत्य धनुष्ट्वᳫं सहंस्त्राक्ष शतेंषुधे। निशीर्य शल्यानाम्मुखां शिवो नंः सुमनां भव॥ १३॥

नमंस्त आयुंधायानांतताय धृष्णवें। उभाभ्यांमुत ते नमों बाहुभ्यान्तव धन्वंने॥ १४॥

मा नों महान्तंमुत मा नों अर्भकम्मा न उक्षंन्तमुत मा नं उक्षितम्। मा नों वधीः पितरम्मोत मातरम्मा नंः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः॥ १५॥

मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान्रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे॥ १६॥

नमो हिरण्यबाहवे सेनान्ये दिशाञ्च पतये नमो नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः पशूनाम्पतये नमो नमः शष्पिञ्जराय त्विषीमते पथीनाम्पतये नमो नमो हरिकेशायोपवीतिने पुष्टानाम्पतये नमः॥ १७॥

नमो बभ्लुशाय व्याधिनेऽन्नानाम्पतये नमो नमो भवस्य हेत्यै जगताम् पतये नमो नमो रुद्रायाततायिने क्षेत्राणाम्पतये नमो नमः सूतायाहन्त्यै वनानाम्पतये नमः॥ १८॥

नमो रोहिताय स्थपतये वृक्षाणां पतये नमो नमो भुवन्तये वारिवस्कृता-यौषधीनाम्पतये नमो नमो मन्त्रिणे वाणिजाय कक्षाणाम्पतये नमो नम-उच्चैर्घोषायाक्रन्दयते पत्तीनाम्पतये नमः॥ १९॥

नमः कृत्स्नायतया धावते सत्त्वनाम्पतये नमो नमः सहमानाय निव्याधिन आव्याधिनीनाम्पतये नमो नमो निषङ्गिणे ककुभाय स्तेनानाम्पतये नमो नमो निचेरवे परिचरायारण्यानाम्पतये नमः॥ २०॥

नमो वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनाम्पतये नमो नमो निषङ्गिण इषुधिमते तस्कराणाम्पतये नमो नमः सृकायिभ्यो जिघांꣳसद्भ्यो मुष्णताम्पतये नमो नमोऽसिमद्भ्यो नक्तञ्चरद्भ्यो विकृन्तानाम्पतये नमः॥ २१॥

नम उष्णीषिणे गिरिचराय कुलुञ्चानाम्पतये नमो नम इषुमद्भ्यो धन्वायिभ्यश्च वो नमो नम आतन्वानेभ्यः प्रतिदधानेभ्यश्च वो नमो नम आयच्छद्भ्योऽस्यद्भ्यश्च वो नमः॥ २२॥

नमो विसृजद्भ्यो विध्यद्भ्यश्च वो नमो नमः स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यश्च वो नमो नमः शयानेभ्यः आसीनेभ्यश्च वो नमो नमस्तिष्ठद्भ्यो धावद्भ्यश्च वो नमः॥ २३॥

नमः सभाभ्यः सभापतिभ्यश्च वो नमो नमोऽश्वेभ्योऽश्वपतिभ्यश्च वो नमो नम आव्याधिनीभ्यो विविध्यन्तीभ्यश्च वो नमो नम उगणाभ्यस्तृꣳहतीभ्यश्च वो नमः॥ २४॥

नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो

नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः॥ २५॥

नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यश्च वो नमो नमो रथिभ्यो अरथेभ्यश्च वो नमो नमः क्षत्तृभ्यःसङ्ग्रहीतृभ्यश्च वो नमो नमो महद्भ्यो अर्भकेभ्यश्च वो नमः॥ २६॥

नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमो नमः कुलालेभ्यः कर्म्मारेभ्यश्च वो नमो नमो निषादेभ्यः पुञ्जिष्ठेभ्यश्च वो नमो नमः श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च वो नमः॥ २७॥

नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमः शर्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च॥ २८॥

नमः कपर्दिने च व्युप्तकेशाय च नमः सहस्राक्षाय च शतधन्वने च नमो गिरिशयाय च शिपिविष्टाय च नमो मीढुष्टमाय चेषुमते च॥ २९॥

नमो ह्रस्वाय च वामनाय च नमो बृहते च वर्षीयसे च नमो वृद्धाय च सवृधे च नमोऽग्र्याय च प्रथमाय च॥ ३०॥

नम आशवे चाजिराय च नमः शीघ्र्याय च शीभ्याय च नम ऊर्म्याय चावस्वन्याय च नमो नादेयाय च द्वीप्याय च॥ ३१॥

नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजाय चापरजाय च नमो मध्यमाय चापगल्भाय च नमो जघन्याय च बुध्न्याय च॥ ३२॥

नमः सोभ्याय च प्रतिसर्याय च नमो याम्याय च क्षेम्याय च नमः श्लोक्याय चावसान्याय च नम उर्वर्याय च खल्याय च॥ ३३॥

नमो वन्याय च कक्ष्याय च नमः श्रवाय च प्रतिश्रवाय च नम आशुषेणाय चाशुरथाय च नमः शूराय चावभेदिने च॥ ३४॥

नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च॥ ३५॥

नमो धृष्णवे च प्रमृशाय च नमो निषङ्गिणे चेषुधिमते च नमस्तीक्ष्णेषवे चायुधिने च नमः स्वायुधाय च सुधन्वने च॥ ३६॥

नमः स्रुत्याय च पथ्याय च नमः काट्याय च नीप्याय च नमः कुल्याय च सरस्याय च नमो नादेयाय च वैशन्ताय च॥ ३७॥

नमः कूप्याय चावट्याय च नमो वीध्र्याय चातप्याय च नमो मेघ्याय च विद्युत्याय च नमो वर्ष्याय चावर्ष्याय च॥ ३८॥

नमो वात्याय च रेष्म्याय च नमो वास्तव्याय च वास्तुपाय च नमः सोमाय च रुद्राय च नमस्ताम्राय चारुणाय च॥ ३९॥

नमः शङ्गवे च पशुपतये च नम उग्राय च भीमाय च नमोऽग्रेवधाय च दूरेवधाय च नमो हन्त्रे च हनीयसे च नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमस्ताराय॥ ४०॥

नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥ ४१॥

नमः पार्याय चावार्याय च नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च नमस्तीर्थ्याय च कूल्याय च नमः शष्प्याय च फेन्याय च॥ ४२॥

नमः सिकत्याय च प्रवाह्याय च नमः किᳩशिलाय च क्षयणाय च नमः कपर्दिने च पुलस्तये च नम इरिण्याय च प्रपथ्याय च॥ ४३॥

नमो व्रज्याय च गोष्ठ्याय च नमस्तल्प्याय च गेह्याय च नमो हृदय्याय च निवेष्प्याय च नमः काट्याय च गह्वरेष्ठाय च॥ ४४॥

नमः शुष्क्याय च हरित्याय च नमः पाᳩसव्याय च रजस्याय च नमो लोप्याय चोलप्याय च नम ऊर्व्याय च सूर्व्याय च॥ ४५॥

नमः पर्णाय च पर्णशदाय च नम उद्गुरमाणाय चाभिघ्नते च नम आखिदते च प्रखिदते च नमऽइषुकृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्यश्च वो नमो नमो वः किरिकेभ्यो देवानाᳩ हृदयेभ्यो नमो विचिन्वत्केभ्यो नमो विक्षिणत्केभ्यो नम आनिर्हतेभ्यः॥ ४६॥

द्रापे अन्धसस्पते दरिद्र नीललोहित। आसाम्प्रजानामेषाम् पशूनाम्मा भेर्मा रोङ्मो च नः किञ्चनाममत्॥ ४७॥

इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्र भरामहे मतीः। यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्वम्पुष्टङ्ग्रामे अस्मिन्ननातुरम्॥ ४८॥

या ते॑ रुद्र शि॒वा त॒नूः शि॒वा वि॒श्वाहा॑ भेष॒जी। शि॒वा रु॒तस्य॑ भेष॒जी तया॑ नो मृड जी॒वसे॑॥ ४९॥

परि॑ नो रु॒द्रस्य॑ हे॒तिर्वृ॑णक्तु परि॑ त्वे॒षस्य॑ दुर्म॒तिर॑घा॒योः। अव॑ स्थि॒रा म॒घव॑द्भ्यस्तनुष्व॒ मीढ्व॑स्तो॒काय॒ तन॑याय मृड॥ ५०॥

मीढु॑ष्टम॒ शिव॑तम शि॒वो न॑ः सु॒मना॑ भव। प॒र॒मे वृ॒क्ष आयु॑धन्नि॒धाय॒ कृत्ति॒ं वसा॑न॒ आ च॑र॒ पिना॑क॒म्बिभ्र॒दा ग॑हि॥ ५१॥

विकि॑रिद्र॒ विलो॑हित॒ नम॑स्ते॒ अस्तु भगवः। यास्ते॑ स॒हस्र॑ꣳहे॒तयो॒ऽन्यम॒-स्मन्नि वप॑न्तु ताः॥ ५२॥

स॒हस्रा॑णि सहस्र॒शो बा॒ह्वोस्तव॑ हे॒तय॑ः। ता॒सा॒मीशा॑नो भगवः प॒रा॒चीना॒ मुखा॑ कृधि॥ ५३॥

अस॑ङ्ख्याता स॒हस्रा॑णि॒ ये रु॒द्रा अधि॒भूम्या॑म्। तेषा॑ꣳ सहस्रयोज॒नेऽव॒ धन्वा॑नि तन्मसि॥ ५४॥

अ॒स्मिन्म॑ह॒त्य॒र्ण॒वे॒ऽन्तरि॑क्षे भ॒वा अधि। तेषा॑ꣳ सह०॥ ५५॥

नील॑ग्रीवाः शिति॒कण्ठा॒ दिव॑ꣳ रु॒द्रा उप॑श्रिताः। तेषा॑०॥ ५६॥

नील॑ग्रीवाः शिति॒कण्ठा॑ः श॒र्वा अ॒धः क्ष॑माच॒राः। तेषा॑०॥ ५७॥

ये वृ॒क्षेषु॑ श॒ष्पिञ्ज॑रा॒ नील॑ग्रीवा॒ विलो॑हिताः। तेषा॑०। ५८॥

ये भू॒ता॒नामधि॑पतयो विशि॒खास॑ः कप॒र्दिन॑ः। तेषा०॥ ५९॥

ये प॒था॒म्प॑थि॒रक्ष॑य ऐलबृ॒दा आ॑यु॒र्युध॑ः। तेषा०॥ ६०॥

ये ती॒र्था॒नि॑ प्र॒चर॑न्ति सृ॒काह॑स्ता निष॒ङ्गिण॑ः। तेषा॑०॥ ६१॥

येऽन्ने॑षु वि॒विध्य॑न्ति॒ पात्रे॑षु पिब॑तो॒ जना॑न्। तेषा॑०॥ ६२॥

य ए॒ताव॑न्तश्च॒ भूया॑ꣳसश्च॒ दिशो॑ रु॒द्रा वि॑तस्थि॒रे। तेषा॑०॥ ६३॥

नमो॑ऽस्तु रु॒द्रेभ्यो॒ ये दि॒वि येषां॑ व॒र्षमिष॑वः। तेभ्यो॒ दश॒ प्राची॒र्दश॑ दक्षि॒णा दश॑ प्र॒तीची॒र्दशोदी॑ची॒र्दशो॒र्ध्वाः। तेभ्यो॒ नमो॑ अस्तु ते नो॑ऽवन्तु ते नो॑ मृडयन्तु ते यं द्वि॒ष्मो यश्च॑ नो॒ द्वेष्टि॒ तमे॑षा॒ञ्जम्भे॑ दध्मः॥ ६४॥

नमो॑ऽस्तु रु॒द्रेभ्यो॒ ये॒ऽन्तरि॑क्षे॒ येषा॒ं वात॒ इष॑वः। तेभ्यो॒ दश॒ प्राची॒र्दश॑ दक्षि॒णा दश॑ प्र॒तीची॒र्दशोदी॑ची॒र्दशो॒र्ध्वाः। तेभ्यो॒ नमो॑ अस्तु ते नो॑ऽवन्तु ते नो॑ मृडयन्तु ते यं द्वि॒ष्मो यश्च॑ नो॒ द्वेष्टि॒ तमे॑षा॒ञ्जम्भे॑ दध्मः॥ ६५॥

नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येषामन्नमिषवः। तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः। तेभ्यो नमो अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भे दध्मः॥ ६६॥

वयᳬसोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि॥ ६७॥

एष ते रुद्र भागः सह स्वस्राम्बिकया तञ्जुषस्व स्वाहैष ते रुद्र भाग आखुस्ते पशुः॥ ६८॥

अव रुद्रमदीमह्यव देवं त्र्यम्बकम्। यथा नो वस्यसस्करद्यथा नः श्रेयसस्करद्यथा नो व्यवसाययात्॥ ६९॥

भेषजमसि भेषजङ्गवेऽश्वाय पुरुषाय भेषजम्। सुखम्मेषाय मेष्यै॥ ७०॥

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्। त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पतिवेदनम्। उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः॥ ७१॥

एतत्ते रुद्रावसन्तेन परो मूजवतोऽतीहि। अवततधन्वा पिनाकावसः कृत्तिवासा अहिᳬसन्नःशिवोऽतीहि॥ ७२॥

त्र्यायुषञ्जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम्। यद्देवेषु त्र्यायुषन्तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्॥ ७३॥

शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मा मा हिᳬसीः। नि वर्त्तयाम्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय॥ ७४॥

नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः॥ ७५॥

या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी।
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि॥ ७६॥

यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे।
शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिᳬसीः पुरुषं जगत्॥ ७७॥

शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि।
यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मᳬसुमना असत्॥ ७८॥

अध्यंवोचदधिवक्ता प्रंथमो दैव्यों भिषक्।
अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वांश्च यातुधान्योऽधराचीः परां सुव॥ ७९॥
असौ यस्ताम्रो अंरुण उत बभ्रुः सुंमङ्गलंः।
ये चैनथ्ठं रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः संहस्त्रशोऽवैंषाथ्ठंहेडं ईमहे॥ ८०॥
असौ योंऽवसर्पति नीलंग्रीवो विलोंहितः।
उतैनं गोपा अंदृश्रन्नदृंश्रन्नुदहार्यः स दृष्टो मृंडयाति नः॥ ८१॥
नमोंऽस्तु नीलंग्रीवाय सहस्त्राक्षायं मीढुषें।
अथो ये अंस्य सत्वांनोऽहं तेभ्योंऽकरं नमंः॥ ८२॥
प्रमुंञ्च धन्वंनस्त्वमुभयोरात्न्योंर्ज्याम्।
याश्चं ते हस्त इषंवः परा ता भंगवो वप॥ ८३॥
विज्यं धनुंः कपर्दिनो विशंल्यो बाणंवाँ२ उत।
अनेंशन्नस्य या इषंव आभुरंस्य निषङ्गधिः॥ ८४॥
या तें हेतिर्मीढुष्टम हस्तें बभूवं ते धनुंः।
तयाऽस्मान्विश्वतस्त्वमंयक्ष्मया परिं भुज॥ ८५॥
परिं ते धन्वंनो हेतिरस्मान्वृंणक्तु विश्वतंः।
अथो य इंषुधिस्तवारे अस्मन्नि धेंहि तम्॥ ८६॥
अवतत्य धनुष्ट्वथ्ठं सहंस्त्राक्ष शतेंषुधे।
निशीर्यं शल्यानां मुखां शिवो नंः सुमनां भव॥ ८७॥
नमंस्त आयुंधायानांतताय धृष्णवें।
उभाभ्यांमुत ते नमों बाहुभ्यां तव धन्वंने॥ ८८॥
मा नों महान्तंमुत मा नों अर्भकं मा न उक्षंन्तमुत मा न उक्षितम्।
मा नों वधीः पितरं मोत मातरं मा नंः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः॥ ८९॥
मा नंस्तोके तनंये मा न आयुंषि मा नो गोषु मा नो अश्वेंषु रीरिषः।
मा नों वीरान् रुंद्र भामिनों वधीर्हविष्मन्तंः सदमित् त्वां हवामहे॥ ९०॥

एष ते रुद्र भागः सह स्वस्राम्बिकया तञ्जुषस्व स्वाहैष ते रुद्र भाग आखुस्ते पशुः॥ ९१॥

अव रुद्रमदीमह्यव देवन्त्र्यम्बकम्। यथा नो वस्यसस्करद्यथा नःश्रेय-सस्करद्यथा नो व्यवसाययात्॥ ९२॥

नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते अस्त्वर्चिषे। अन्याँस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यंशिवो भव॥ ९३॥

नमस्ते अस्तु विद्युते नमस्ते स्तनयित्नवे। नमस्ते भगवन्नस्तु यतः स्वः समीहसे॥ ९४॥

न तं विदाथ य इमा जजानान्यद्युष्माकमन्तरम्बभूव। नीहारेण प्रावृता जल्प्या चासुतृप उक्थशासश्चरन्ति॥ ९५॥

विश्वकर्मा ह्यजनिष्ट देव आदिद्गन्धर्वो अभवद् द्वितीयः॥ तृतीयः पिता जनितौषधीनामपां गर्भं व्यदधात्पुरुत्रा॥ ९६॥

मीढुष्टम शिवतम शिवो नः सुमना भव। परमे वृक्ष आयुधन्निधाय कृत्तिं वसान आ चर पिनाकम्बिभ्रदा गहि॥ ९७॥

विकिरिद्र विलोहित नमस्ते अस्तु भगवः। यास्ते सहस्रंहेतयोऽन्यम-स्मन्नि वपन्तु ताः॥ ९८॥

सहस्राणि सहस्रशो बाह्वोस्तव हेतयः। तासामीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि॥ ९९॥

असङ्ख्याता सहस्राणि ये रुद्रा अधिभूम्याम्। तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥ १००॥

शतरुद्रियसमाप्तिः

तदनन्तर शुद्धोदक स्नानतथा शान्ति-मन्त्रों से अभिषेक करे।

अथ रुद्रे स्वस्तिप्रार्थनामन्त्राऽध्याय:

हरिः ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥ १॥

ॐ पयः पृथिव्याम्पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥ २॥

ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्वा॥ ३॥

ॐ अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवताऽऽदित्या देवता मरुतो देवता विश्वे देवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता॥ ४॥

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः॥

भवेभवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः॥ ५॥

वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमः॥ ६॥

बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः॥ ७॥

अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः शर्व शर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥ ८॥

तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥ ९॥

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम्। ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्॥ १०॥

ॐ शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मा मा हिꣳसीः। नि वर्त्तयाम्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय॥ ११॥

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव॥ यद्भद्रन्तन्न आ सुव॥ १२॥

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥ १३॥

ॐ शान्तिः शान्तिः सुशान्तिर्भवतु सर्वारिष्टशान्तिर्भवतु॥ अनेन रुद्राभिषेककर्मणा कृतेन श्रीभगवान्साम्बसदाशिवः प्रीयतां न मम॥ ॐ सदाशिवार्पणमस्तु॥

इति स्वस्तिप्रार्थनामन्त्राऽध्याय:॥

तदनन्तर भगवान् को आचमन कराकर उत्तराङ्ग-पूजन करे।

वस्त्र — ॐ असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहित:।
उतैनं गोपा अदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्य: स दृष्टो मृडयाति न:॥

ॐ भूर्भुव: स्व: श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नम:, वस्त्रं समर्पयामि, वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (वस्त्र चढ़ाये तथा आचमन के लिये जल चढ़ाये।)

यज्ञोपवीत — ॐ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्त्राक्षाय मीढुषे।
अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नम:॥

ॐ भूर्भुव: स्व: श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नम:, यज्ञोपवीतं समर्पयामि, यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (यज्ञोपवीत समर्पित करे तथा आचमन के लिए जल चढ़ाये।)

उपवस्त्र — ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमाऽसदत्स्व:।
वासो अग्ने विश्वरूपꣳ सं व्ययस्व विभावसो॥

ॐ भूर्भुव: स्व: श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नम:, उपवस्त्रं समर्पयामि, उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (उपवस्त्र चढ़ाये तथा आचमन के लिए जल दे।)

गन्ध — ॐ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्याम्।
याश्च ते हस्त इषव: परा ता भगवो वप॥

ॐ भूर्भुव: स्व: श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नम:, गन्धानुलेपनं समर्पयामि। (चन्दन उपलेपित करे।)

सुगन्धित द्रव्य — ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

ॐ भूर्भुव: स्व: श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नम:, सुगन्धिद्रव्यं समर्पयामि। (सुगन्धित द्रव्य चढ़ाये।)

अक्षत — ॐ व्रीहयश्च मे यवाश्च मे माषाश्च मे तिलाश्च मे मुद्गाश्च मे खल्वाश्च मे प्रियङ्गवश्च मेऽणवश्च मे श्यामाकाश्च मे नीवाराश्च मे गोधूमाश्च मे मसूराश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, अक्षतान् समर्पयामि। (अक्षत चढ़ाये।)

पुष्पमाला — ॐ विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ२ उत।

अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, पुष्पमाला समर्पयामि। (पुष्पमाला चढ़ाये।)

बिल्वपत्र — ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च।

त्रिगुणं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुतम्।

त्रिजन्मपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, बिल्वपत्राणि समर्पयामि। (बिल्वपत्र समर्पित करे।)

नानापरिमलद्रव्य—

ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः।
हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमाꣳसं परि पातु विश्वतः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, नानापरिमल द्रव्याणि समर्पयामि। (विविध परिमलद्रव्य चढ़ाये।)

धूप — ॐ या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः॥

तयाऽस्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परि भुज॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, धूपमाघ्रापयामि (धूप आघ्रापित करे।)

दीप — ॐ परि ते धन्वनो हेतिरस्मान् वृणक्तु विश्वतः।

अथो य इषुधिस्तवारे अस्मिन्नि धेहि तम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, दीपं दर्शयामि। (दीप दिखलाये और हाथ धो ले।)

नैवेद्य — ॐ अवतत्य धनुष्ट्वᳯं सहस्राक्ष शतेषुधे।
निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, नैवेद्यं निवेदयामि। नैवेद्यान्ते ध्यानम्,ध्यानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (नैवेद्य निवेदित करे, तदन्तर भगवान् का ध्यान करके आचमन के लिये जल चढ़ाये।)

करोद्वर्तन— ॐ सिञ्चति परि षिञ्चन्त्युत्सिञ्चन्ति पुनन्ति च।
सुरायै बभ्र्वै मदे किन्त्वो वदति किन्त्वः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि। (चन्दन का अनुलेपन करे।)

ऋतुफल — ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वᳯंहसः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, ऋतुफलानि समर्पयामि। (ऋतुफल समर्पित करे।)

ताम्बूल-पूगीफल — ॐ नमस्त आयुधायानातताय धृष्णवे।
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्रसाम्बसदाशिवाय नमः, मुखवासार्थे सपूगीफलं ताम्बूलपत्रं समर्पयामि। (पान और सुपारी चढ़ाये।)

दक्षिणा — ॐ यद्दत्तं यत्परादानं यत्पूर्तं याश्च दक्षिणाः।
तदग्निर्वैश्वकर्मणः स्वर्देवेषु नो दधत्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि। (द्रव्य-दक्षिणा समर्पित करे।)

आरती — ॐ आ रात्रि पार्थिवᳯं रजः पितुरप्रायि धामभिः।
दिवः सदाᳯंसि बृहती वि तिष्ठस आ त्वेषं वर्तते तमः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, कर्पूरार्तिक्यदीपं दर्शयामि। (कपूर की आरती करे।)

भगवान् गङ्गाधर की आरती

ॐ जय गङ्गाधर जय हर जय गिरिजाधीश।
त्वं मां पालय नित्यं कृपया जगदीश॥ १॥ ओं हर हर हर महादेव ॥
कैलासे गिरिशिखरे कल्पद्रुमविपिने।
गुञ्जति मधुकरपुञ्जे कुञ्जवने गहने॥
कोकिलकूजित खेलत हंसावन ललिता।
रचयति कलाकलापं नृत्यति मुदसहिता॥ २॥ ओं हर०॥
तस्मिंल्ललितसुदेशे शाला मणिरचिता।
तन्मध्ये हरनिकटे गौरी मुदसहिता॥
क्रीडा रचयति भूषारञ्जित निजमीशम्।
इन्द्रादिक सुर सेवत नामयते शीशम्॥ ३॥ ओं हर०॥
बिबुधबधू बहु नृत्यत हृदये मुदसहिता।
किन्नर गायन कुरुते सप्त स्वर सहिता।
धिनकत थै थै धिनकत मृदङ्ग वादयते।
क्वण क्वण ललिता वेणुं मधुरं नाटयते॥ ४॥ ओं हर०॥
रुण रुण चरणे रचयति नूपुरमुज्ज्वलिता।
चक्रावर्ते भ्रमयति कुरुते तां धिक तां॥
तां तां लुप चुप तां तां डमरू वादयते।
अंगुष्ठांगुलिनादं लासकतां कुरुते॥ ५॥ ओं हर०॥
कर्पूरद्युतिगौरं पञ्चाननसहितम्।
त्रिनयनशशिधरमौलिं विषधरकण्ठयुतम्॥
सुन्दरजटाकलापं पावकयुतभालम्।
डमरुत्रिशूलपिनाकं करधृतनृकपालम्॥ ६॥ ओं हर०॥
मुण्डै रचयति माला पन्नगमुपवीतम्।

वामविभागे गिरिजारूपं अतिललितम्॥
सुन्दरसकलशरीरे कृतभस्माभरणम्।
इति वृषभध्वजरूपं तापत्रयहरणम्॥ ७॥ ओं हर०॥
शङ्खनिनादं कृत्वा झल्लरि नादयते।
नीराजयते ब्रह्मा वेदऋचां पठते॥
अतिमृदुचरणसरोजं हृत्कमले धृत्वा।
अवलोकयति महेशं ईशं अभिनत्वा॥ ८॥ ओं हर०॥
ध्यानं आरति समये हृदये अति कृत्वा।
रामस्त्रिजटानाथं ईशं अभिनत्वा॥
संगतिमेवं प्रतिदिन पठनं यः कुरुते।
शिवसायुज्यं गच्छति भक्त्या यः शृणुते॥ ९॥ हर०॥

आरती के बाद जल गिरा दे। देवता को फूल चढ़ाये। फिर दोनों हाथों से आरती लेकर हाथ धो ले।

प्रदिक्षणा —

**ॐ मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्।
मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि। (प्रदक्षिणा करे।)

पुष्पाञ्जलि—

**ॐ मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः।
मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित् त्वा हवामहे॥
ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।**

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। (मन्त्र-पुष्पाञ्जलि समर्पण करे, तदन्तर साष्टाङ्ग प्रणाम और पूजन कर्म शिवार्पण करे।)

नमः सर्वहितार्थाय जगदाधारहेतवे।
साष्टाङ्गोऽयं प्रणामस्ते प्रयत्नेन मया कृतः॥
पापोऽहं पापकर्माहं पापात्मा पापसम्भवः।
त्राहि मां पार्वतीनाथ सर्वपापहरो भव॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवाय नमः, प्रार्थनापूर्वक-नमस्कारान् समर्पयामि। अनया पूजया श्रीनर्मदेश्वरसाम्बसदाशिवः प्रीयतां न मम। श्रीसाम्बसदाशिवार्पणमस्तु।

इसके बाद भगवान् शङ्कर की विशेष उपासना की दृष्टि से पञ्चाक्षर-मन्त्र का जप, रुद्राभिषेक तथा बिल्बपत्र एवं कमलपुष्पों से सहस्रार्चन आदि किये जा सकते हैं। अन्त में संक्षेप में उत्तराङ्ग-पूजन कर आरती, पुष्पाञ्जलि एवं स्तुति करनी चाहिये। शिवरात्रि आदि पर्वों में बिल्व-पत्रादि से शिवार्चन तथा रात्रि-जागरण की विशेष महिमा है।

—0—

नमस्ते इत्यस्य परमेष्ठी ऋषिः। गायत्री छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे विनियोगः॥ १॥

भाष्यम् — हे रुद्र! यद्रोदनं रु दुःखं द्रावयति स रुद्रः। यद्वा रुद्रमुपशान्तयति। ये गत्यर्थास्ते ज्ञानार्थाः। रवणं रुत्, ज्ञानं। क्विप् तुगागमः। रुत्, ज्ञानं राति, ददातीति रुद्रः मोहनिवारकः परमेश्वरः। यद्वा पापिनो जनान् दुःखभोगेन दयतीति रोरुद्रः जगच्छासकः। हे रुद्र (ते) तव (मन्यवे) रोषाय (नमः) नमस्कारोऽस्तु। (उत) अपि (ते) तव (इषवे) शराय (नमः) नमस्कारोऽस्तु। (उत) अपि च (ते) तव बाहुभ्याम् भुजाभ्याम् (नमः)। तव क्रोधवाणहस्ता अस्मच्छत्रुष्वेव पतन्तु नास्मास्वित्यर्थः॥ १॥

भाषार्थ —हे दुःख के दूर करने अथवा ज्ञान के देने वाले अथवा पापीजनों को उनका कर्मफल देकर रुलाने वाले रुद्रदेव! आपके क्रोध के निमित्त नमस्कार है। और तुम्हारे बाणों के निमित्त नमस्कार है। और तुम्हारी दोनों भुजाओं के निमित्त नमस्कार है, अर्थात् हे रुद्रदेव! आपका क्रोध और बाणधारी हस्त शत्रुओं पर पड़े हमको शान्ति हो॥ १॥

विशेषतत्त्ववादी मेघों के अन्दर शक्तिमय रुद्र का निवास कहते हैं। गर्जना उनका क्रोध है। उल्का पात बाण हैं, समुद्र में उठे तरंग एक भुजा, और महाधारा वर्षा उनकी दूसरी भुजा-रूप हैं। उससे शत्रुओं का अनिष्ट हो, और हमको मंगल हो। अथवा पापियों के नाश को तुम बाण और क्रोधरूप हो। इस अध्याय में परमेश्वर का सगुणनिर्गुणरूप उग्रदेवोपासना से वर्णन किया गया है॥ १॥

या त इत्यस्य परमेष्ठी ऋषिः। आर्षीस्वराडनुष्टुपछन्दः। रुद्रो देवता। पा० वि०॥ २॥

भाष्यम् — (रुद्र) हे देव (या) (ते) तव (अघोरा) सौम्या (अपापकाशिनी) पापमसुखं काशयति, प्रकाशयति पापकाशिनी। न पापकाशिनी, या भक्तानाम् पुण्यफलमेव ददाति न पापफलमित्यर्थः। (शिवा) शान्ता मङ्गलरूपा (तनूः) शरीरमस्ति, (गिरिशन्तः) कैलाशवासी, गिरौ कैलासे स्थितः प्राणिनां शं सुखं विस्तारयति वा गिरि वाचि स्थितः)। शं तनोति वा गिरौ मेघे स्थितो वृष्टिद्वारेण शं तनोति वा

गिरौ शेते गिरिशः। अमति गच्छति जानातीति वा अन्तः सर्वज्ञः, अमगतौ भजने शब्दे कर्तरि क्तः। गिरिशश्चासावन्तश्च गिरिशन्तस्तत्सम्बुद्धिः शकन्ध्वादित्वात्पररूपम्। (तया) शन्तमया) सुखतमया (तन्वा) शरीरेण (नः) अस्मान् (अभिचाकशीहि) अभिपश्य॥ २॥

भाषार्थ —कैलासपर्वत स्थिर होकर प्राणियों के सुख को विस्तार करने वाले अथवा वाणी में स्थित होकर सुख का विस्तार करने वाले अथवा मेघ में स्थित होकर वर्षा आदि के रूप से सुख को विस्तार करने वाले, वा पर्वत पर शयन करने वाले सर्वज्ञ, हे रुद्र! जो तुम्हारा शान्त मंगलरूप विषमतारहित होने से सौम्य, पापफल को न देकर पुण्यफल को ही देने वाले शरीर से हमको अवलोकन कीजिये॥ २॥

विशेष —जो सर्वव्यापी आत्मा का भी आत्मा है दृश्य अदृश्य संपूर्ण शरीरों में उसकी स्थिति है केवल तत्त्व विचारवाले कहते हैं कि इस मन्त्र में रुद्र का मेघोदयरूप शरीर देखने की प्रार्थना है, किन्तु जिससे गृहपतन और बाढ़ की प्राप्ति हो उसकी उदय की प्रार्थना नहीं है। किन्तु जिसके उदय से कृषि आदि की उन्नति हो उसकी प्रार्थना है। यहां रुद्र का कल्याणमय शरीर और कैलाश होने से शिव के विग्रह का भी कथन किया गया है; अथवा हे रुद्र! आपका कल्याणकारी विस्तार मनोहर है; पापों को दूर करके हमको सुख दो। इससे सगुण ब्रह्म प्रतिपादित है॥ २॥

यामिषुमित्यस्य परमेष्ठीऋषि। विराडार्ष्यनुष्टुप् छं०। रुद्रो देवता। पा० वि०॥ ३॥

भाष्यम् —**(गिरिशन्त) देव (याम्) (इषुम्) शरम् (अस्तवे) शत्रून् क्षेप्तुं (हस्ते) करे (विभर्षि) धारयसि। (गिरित्र) गिरौ कैलासे स्थित्वा भूतानि त्रायते इति तत्सम्बुद्धिः। (ताम्) बाणम्(शिवाम्) कल्याणकारिणीं (कुरु)। किञ्च (पुरुषम्) पुत्रपौत्रादिकम् (जगत्) जङ्गममन्यदपि गवाश्वादिकम् (मा हिꣳसीः) मा वधीः सर्वथाऽस्मद्गेहे शान्तिं कुर्वित्यर्थः॥ ३॥**

भाषार्थ —हे वेदवाणी में स्थित व पर्वत पर उदित मेघवृन्द के अन्दर स्थित होकर जगत् का कल्याण करने वाले; कैलाश व वेदवाणी में स्थित होकर

प्राणियों की रक्षा करने वाले तुम जिस बाण को शत्रुओं के नाश व प्रलय में जगत् के अस्त करने को हाथ में धारण करते हो; हे रक्षक! उस बाण को कल्याणकारी करो। पुत्र पौत्र आदि जगत् के गवाश्वादि को मत मारो, अर्थात् अकाल में हमको और इस संपूर्ण जगत् को नष्ट मत करो॥ ३॥

विशेष —गिरिशृङ्ग में जो रहते हैं निम्न भाग में मेघोपद्रव उनका अनिष्ट नहीं कर सकते। इस निमित्त अधश्चारी दुर्घटना के अन्दर स्थित देवता को गिरित्र कहते हैं। यह तत्त्ववादी जन कहते हैं॥ ३॥

शिवेनेत्यस्य परमेष्ठी ऋषिः। निच्यृदार्ष्यनुष्टुप् छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे वि०॥ ४॥

भाष्यम् —(गिरिश) गिरौ कैलासे शेते गिरिशः तत्सम्बुद्धौ हे गिरिश! (शिवेन) मंगलरूपेण (वचसा) वचनेन (त्वा) त्वाम् (अच्छ) प्राप्तुम् (वदामसि) वदामः प्रार्थयामहे; (नः) अस्माकम् (सर्वम्) सम्पूर्णम् (जगत्) जंगमं मनुष्यपश्वादि (यथा) येन प्रकारेण (अयक्ष्मम्) (व्याधिरहितम्) (सुमनः) शोभनं मनः (असत्) तथा कुर्वित्यर्थः॥ ४॥

भाषार्थ —हे वेदवचन वा कैलास में शयन करने वाले! मंगलस्तुतिरूप वचन से तुमको प्राप्त होने को हम प्रार्थना करते हैं। हमको सब ही जंगम, मनुष्य, पशु आदि जिस प्रकार नीरोग शुभ मन वाला होवे सो करो, अर्थात् यह जगत् स्वस्थ और रोगरहित हो। यही आपसे हमारी प्रार्थना है सो स्वीकार करो॥ ४॥

विशेष —जिसका उदय सर्वदा ही पर्वत पृष्ठ पर देखा जाता है, ऐसे मेघ के अन्दर स्थित देवता को गिरिश कहते हैं, यह तत्त्ववादी जनों का कथन है। तात्पर्य यह है कि रुद्रदेवता सर्वत्र विद्यमान है। वह जगत् में मंगल करे प्रजा में कोई रोग न हो॥ ४॥

अध्यवोचदित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः। भुरिगार्षी बृहती छन्दः। रुद्रो देवता॥ पा० वि०॥ ५॥

भाष्यम्—(अधिवक्ता) अधिवदनशीलः निगमकथनतत्परः (प्रथमः) पूज्यत्वात्सर्वेषां मुख्यः (दैव्यः) देवेभ्यो हितः (भिषक्) स्मरणेनैव रोगनाशको रुद्रः (अध्यवोचत्) मां सर्वाधिकं वदति, अयं याजकः

सर्वाधिको भवत्विति। परोक्षमुक्त्वा प्रत्यक्षमाह-हे रुद्र! (च) (सर्वान्) सम्पूर्णान् (अहीन्) सर्पव्याघ्रादीन् (जम्भयन्) विनाशयन् (सर्वाः) समस्ताः (अधराचीः) अधोगमनशीलाः (यातुधान्यः) राक्षसीः (च) परासुव अस्मत्तो दूरीकुरु ॥ ५ ॥

भाषार्थ—अधिक वदनशील सर्वदा निगम कथन करने वाले, सब देवताओं में मुख्य, पूजनीय, देवताओं के हितकारी, स्मरण से ही संसार तथा जन्म मरण के रोग नाशक रुद्र हमको सबसे अधिक कहें, अर्थात् सबसे अधिक करें और सब सर्प व्याघ्रादि को विनाश करते हुए संपूर्ण अधोगमनशील राक्षसी आदि को भी हमसे दूर करो ॥ ५ ॥

अध्यात्म— परमात्मा, हमको महावाक्य का उपदेश करो और सर्प के समान डसने वाले काम आदि को नाश करो, और अधोगमनशील कामकला रूपी राक्षसियों को दूर करो, अथवा संपूर्ण विद्याओं के कहने से ही यह सबमें श्रेष्ठ गिने जाते हैं। इसी से दिव्यगुणयुक्त ज्ञान से सबके संसारी रोग के दूर करने वाले हैं ॥ ५ ॥

जड़वादी कहते हैं कि, गर्जन ही प्रधान शब्द है। अतिवृष्टि होने से ज्वरादि रोग और सर्पों का प्रादुर्भाव होता है। इनसे मृत्यु-संख्या अधिक होने की संभावना है, प्रेतभय उपस्थित न हो इस कारण तीनों भय के निवारण करने के निमित्त रुद्र देव से प्रार्थना है ॥ ५ ॥

असौ य इत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः। विराडार्षी पंक्तिश्छन्दः। रुद्रो देवता। पा० वि० ॥ ६ ॥

भाष्यम् — आदित्यरूपेणाऽत्र रुद्रः (स्तूयते)-(यः असौ) प्रत्यक्षो रुद्रो रविरूपश्च (ताम्रः) उदयेऽत्यन्तरक्तवर्णः) (च अरुणः) अरुणरूपः (उत) अपि (बभ्रुः) अस्तकाले पिंगलवर्णः, (सुमंगलः) शोभनानि मंगलानि यस्य सः। सूर्योदये सर्वमंगलप्रवर्तनात् क्रमेणैतानि रूपाणि दधातीत्यभिप्रायः। अथवा असौ यस्ताम्रः अरुणः सुमंगलः प्रयोजनवशात् नानारूपाणि करोति। (च) पुनः (ये) सहस्रशः) सहस्रशः संख्याः (रुद्राः) रुद्राः (एनम्) (अभितः) सर्वतः (दिक्षु) प्राच्यादिदिक्षु (श्रिता) आश्रिताः (एषाम्) रुद्राणाम् (हेडः) अस्मदपराधजं क्रोधम् (ईमहे) भक्त्या निवारयामः ॥ ६ ॥

भाषार्थ— जो यह प्रत्यक्ष रुद्र सूर्यरूप उदय समय में अत्यन्त लालवर्ण, अस्त के समय रक्त वर्ण और मध्याह्न समय में पिंगलवर्ण मंगल रूप कर्मों का उदय में विस्तार करने वाले हैं, और जो सहस्रों रुद्रांशरूप वा किरण रूप से इनके सब ओर दिशाओं में स्थित हैं, अर्थात् जो सब सहस्रों देवता नक्षत्र मंगल इन देवता के दसों दिशाओं में देदीप्यमान हैं इन्हीं का क्रोध हम भक्ति द्वारा निवारण करते हैं ॥ ६ ॥

असौ य इत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः। विराडार्षी पंक्तिश्छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे वि० ॥ ७ ॥

भाष्यम् —(यः) (असौ) आदित्यरूपः (नीलग्रीवः) विषधारणेन नीला ग्रीवा कण्ठो यस्य अस्तमये नीलकण्ठ इव लक्ष्यः (उत) (विलोहितः) रक्तः (अवसर्पति) उदयास्तमयौ कुर्वन्निरन्तरं गच्छति (एनम्) रुद्रम् (गोपाः) गोपालाः वेदोक्तसंस्कारहीनाः (अदृश्रन्) पश्यन्ति (उदहार्यः) जलहारिण्यो योषित अपि (अदृश्रन्) पश्यन्ति (सः) शंकरः (दृष्टः) दृष्टः सन् (नः) अस्मान् (मृडयाति) सुखयतु ॥ ७ ॥

भाषार्थ—जो यह विषधारण से नीलग्रीव वा अस्त समय में नीलकंठ के समान और विशेष रक्तवर्ण आदित्य रूप से उदय-अस्त करते निरन्तर गमन करते हैं, इनको वेदोक्त संस्कारहीन गोपाल तक देखते हैं, जल ले जाने वाली नारियाँ भी दर्शन करती हैं, वह रुद्र दर्शन पथ में गोपाल नदी आदि के तीर पर पनिहारी इनकी शोभा अतिशय देखती हैं। पक्षान्तर में इन्द्रियों के रक्षक देव गोप और अमृत की प्राप्ति करने वाली प्रज्ञाशक्ति उदकहारी है ॥ ७ ॥

नमोऽस्त्वित्यस्य। प्रजापतिर्ऋषिः। निच्यृदार्ष्यनुष्टुप् छन्दः। रुद्रो देवता॥ पाठे वि० ॥ ८ ॥

भाष्यम् —(नीलग्रीवाय) नीलकण्ठाय (सहस्राक्षाय) सहस्रमक्षीणि यस्य इन्द्रस्वरूपीणि (मीढुषे) वृष्टिकर्त्रे पर्जन्यरूपाय (नमः) नमस्कारः (अस्तु) भवतु। (अथो) अपि (अस्य) रुद्रस्य (ये) सत्त्वानः प्राणिनः सेवकाः सन्ति (तेभ्यः) (अहम्) स्तुतिकर्ता (नमः) नमस्कारं (अकरम्) करोमि ॥ ८ ॥

भाषार्थ — नीलकण्ठ, सहस्रनेत्र, सब जगत् को देखने वाले, अथवा इन्द्रस्वरूप वा बहु-रश्मि रूप सेचन में समर्थ पर्जन्यरूप रुद्र के निमित्त नमस्कार

हो। और इस रुद्र देवता के जो अनुचरविशेष हैं, मेषादि राशि हैं, उनके निमित्त मैं नमस्कार करता हूँ। तात्पर्य यह कि सब ही शिवरूप हैं सब में रुद्र वर्तमान है॥ ८॥

प्रमुञ्चेत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः। भुरिगार्ष्युष्णिक् छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे विनि०॥ ९॥

भाष्यम् —(भगवः) हे भगवन् परमैश्वर्यसम्पन्न (धन्वनः) धनुषः (उभयोः) द्वयोः (आर्त्न्योः) कोट्योः स्थिताम् (ज्याम्) मौर्वीम् (त्वं) (प्रमुञ्च) दूरीकरु (च) (याः) (ते) तव (हस्ते करे) (इषवः) बाणाः सन्ति (ताः) शरान् (परावप) पराक्षिप॥ ९॥

भाषार्थ— हे षडैश्वर्य-संपन्न भगवन्। आप धनुष की दोनों कोटियों में स्थित ज्या को दूर करो अर्थात् उतार लो। और जो आपके हाथ में बाण है उनको दूर त्याग दो। हमारे निमित्त सौम्यमूर्ति हो जाओ। हमारे लिए किसी प्रकार का रोग-शोक न हो यही आपसे प्रार्थना है॥ ९॥

विज्यन्धनुरित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः भुरिगार्ष्यनुष्टुप्छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे वि०॥ १०॥

भाष्यम् —(कपर्दिनः) कपर्दो जटाजूटोऽस्यास्तीति कपर्दी, तस्य रुद्रस्य (धनुः) शरासनम् (विज्यम्) मौर्वीरहितमस्तु, (उत) च बाणवान् इषुधिः (विशल्यः) विफलोऽस्तु, (अस्य) रुद्रस्य (याः) (इषवः) शराः ताः (अनेशन्) नश्यन्तु, (अस्य) रुद्रस्य (निषंगधिः) कोशः सः (आभुः) खड्गरहितोऽस्तु। रुद्रः अस्मान्प्रति न्यस्तसर्व-शस्त्रोऽस्त्वित्यर्थः॥ १०॥

भावार्थ— जटाजूटधारी रुद्र का धनुष ज्या-रहित हो, और तरकस भाल वाले बाणों से रीता हो, इन देवता के जो बाण है वे अदर्शन को प्राप्त हों, इनके खड्ग रखने का कोश रीता हो अर्थात् रुद्र हमारे प्रति सर्वथा न्यस्तशस्त्र हों॥ १०॥

या त इत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः। निच्यृदनुष्टुप्छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे वि०॥ ११॥

भाष्यम् —(मीढुष्टम) सेक्तृतम ववर्षुक (ते) तव हस्ते (या) (हेतिः) धनूरूपमायुधमस्ति (ते हस्ते) करे (धनुः) धनुः (बभूव) अस्ति

(तया) धनूरूपया (अयक्ष्मया निरुपद्रवया दृढया हेत्या (विश्वतः) सर्वतः (अस्मान्) नः (परिभुज) परिपालय॥ ११ ॥

भाषार्थ —हे अत्यन्त ज्ञानामृत वा वर्षा से सींचने वाले तुम्हारे हाथ में जो आयुध है आपके हाथ में जो धनुष है उस उपद्रव रहित धनुषरूप हेति से आप सब ओर से हमको पालन करो अर्थात् आप वर्षा करने वाले अस्त्र को ही धारण कीजिए किन्तु उससे कोई उपद्रव न हो॥ ११ ॥

परीत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः। निच्यृदार्ष्यनुष्टुप्छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे वि० ॥ १२ ॥

भाष्यम् — **हे रुद्र (ते) तव (धन्वनः) धनुः सम्बन्धि (हेतिः) आयुधम् (विश्वतः) सर्वतः (अस्मान्) परिवृणक्तु (त्यजतु)। अथो (अपिच) यः (तव) (इषुधिः) कोशोऽस्ति (तम् अस्मत्) सकाशात् (आरे) दूरे (निधेहि) स्थापय॥ १२ ॥**

भाषार्थ—हे रुद्र! तुम्हारे धनुषसंबंधी आयुघ सब ओर से हमको त्याग करें और जो तुम्हारा तरकस है उसको हमारे निकट से दूर स्थापन करो। आशय यह कि हमारे कर्मो द्वारा जो व्याधि होती है वह तुम्हारी सत्ता से है सो हमको कष्ट न दें॥ १२ ॥

अवतत्येत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः। निच्यृदार्ष्यनुष्टुप् छन्दः। रुद्रो देवता पाठे वि० ॥ १३ ॥

भाष्यम्— (सहस्त्राक्ष) सहस्त्रमक्षीणि यस्य तत्सम्बुद्धौ, (शतेषुधे) शतमिषुधयो यस्य तत्सम्बुद्धौ, (त्वम्) (धनुः) शरासनम् (अवतत्य) अपज्याकं कृत्वा (शल्यानाम्) शराणाम् (मुखाः) अग्राणि (निशीर्य) शीर्णानि कृत्वा (नः) अस्मान्प्रति (शिवः) शान्तः (सुमनाः) शोभनचित्तश्च (भव) अनुगृहाणेत्यर्थः॥ १३ ॥

भाषार्थ —हे विराट्! हे सहस्त्रनेत्र! हे सहस्त्रों तरकस वाले तुम धनुष को ज्या रहित करो और बाणों के मुख (भाल) निकाल कर हमको शान्त, शोभनचित्त हो अर्थात् हम पर कृपा करो॥ १३ ॥

नमस्त इत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः। भुरिगार्ष्युष्णिक् छन्दः। रुद्रो देवता०। पाठे वि० ॥ १४ ॥

भाष्यम्— हे रुद्र (ते) तव (अनातताय) धनुष्यनारोपिताय (आयुधाय) बाणाय (नमः) नमोऽस्तु। (ते) तव (धृष्णवे) धर्षशीलाय रिपून् हन्तुं प्रगल्भाय (धन्वने) धनुषेऽपि (नमः) नतिरस्तु। (उत) च (ते) तव (आभ्याम्) द्वाभ्याम् (बाहुभ्याम्) भुजाभ्याम् (नमः) नमस्कारोऽस्तु॥ १४॥

भाषार्थ—हे रुद्र! आप के धनुष पर न चढ़ाये हुए बाण के निमित्त नमस्कार है, आपके दोनों बाहुओं के निमित्त और आपके शत्रु में प्रगल्भ धनुष के निमित्त नमस्कार है॥ १४॥

मा नो महान्तम् इत्यस्य कुत्स ऋषिः। निच्यृदार्षी जगती छन्दः। रुद्रो देवता॥ पाठे वि०॥ १५॥

भाष्यम् —हे रुद्र (नः) अस्माकम् (महान्तम्) वृद्धं गुरुपितृव्यादिकम् (मा वधीः) मा हिंसीः। (उत) अपि (नः) अस्माकम् (अर्भकम्) बालकम् (मा) मा वधीः)। (नः) अस्माकम् (उक्षन्तम्) सिञ्चन्तं तरुणम् (मा) मा वधीः। (उत) अपि (नः) अस्माकम् (उक्षितम्) सिक्तं गर्भस्थम् (मा) मा वधीः। (नः) अस्माकम् (पितरम्) जनकम् (मा) मा वधीः। (उत) अपि (नः) (मातरम्) जननीम् (मा) मा वधीः। (नः) अस्माकम् (प्रियाः) वल्लभाः (तन्वः) पुत्रपौत्ररूपाणि शरीराणि (मा रीरिषः) मा हिंसीः)॥ १५॥

भाषार्थ —हे रुद्र! हमारे वृद्ध गुरु पितृव्य आदि को कर्मानुसार मत मारो। और बालक को मत मारो, हमारे तरुण को मत मारो और हमारे गर्भस्थ बाल को मत मारो, हमारे पिता को मत मारो, और हमारी माता को मत मारो, हमारे प्यारे शरीर पुत्र पौत्र आदि को मत मारो। आशय यह कि, यदि कर्मानुसार उनकी आयु पूरी हो गई हो तो भी आपकी कृपा होनी चाहिये॥ १५॥

मा नस्तोक इत्यस्य कुत्स ऋषिः। निच्यृदार्षी जगती छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे वि०॥ १६॥

भाष्यम् —हे रुद्र! (नः) अस्माकम् (तोके) पत्रे, (तनये) पौत्रे (मा रीरिषः) मा हिंसीः। (नः आयुषि) जीवने (मा) मा हिंसीः। (नः) गोषु (धेनुषु (मा) मा हिंसी। (नः) (अश्वेषु) तुरगेषु (मा) मा हिंसीः। (नः भामिनः) क्रोधयुतान् (वीरान्) भृत्यान् (मा वधीः) मा हिंसीः।

(हविष्मन्तः) हविर्युक्ताः (सदमित्) सदैव (त्वा) (हवामहे) वयं यागायाह्वयामः। त्वदेकशरणा वयमित्यर्थः॥ १६॥

भाषार्थ —हे रुद्र! हमारे पौत्र पुत्र को मत मारो, हमारी आयु को मत नष्ट करो, हमारी गौओं में प्रहार मत करो, हमारे घोड़ों में प्रहार मत करो, हमारे क्रोधयुक्त वीरपुरुषों को मत मारो। हवियुक्त निरन्तर आपको हम यज्ञ के निमित्त आह्वान करते हैं। अर्थात् आपकी ही शरण हैं। तात्पर्य यह है कि —ईश्वर रुद्र किसी को नहीं मारते पर कर्मानुसार रोगादि में अपनी शक्ति की प्रेरणा करते हैं। उन पापों से अनिष्ट न होने की प्रार्थना है॥ १६॥

नम इत्यस्य कुत्स ऋषिः। निच्यृदतिधृतिश्छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे विनियोगः॥ १७॥

भाष्यम् — (हिरण्यवाहवे) हिरण्यमाभरणरूपं वाह्वोर्यस्य स हिरण्यबाहुः, तस्मै (सेनान्ये) सेनां नयतीति सेनानीः तस्मै (नमः) रुद्राय नमः। (च) विशांपतये) पालकाय रुद्राय (नमः)। (हरिकेशेभ्यः) हरितवर्णाः केशाः पर्णरूपाः येषां ते हरिकेशास्तेभ्यः, (वृक्षेभ्यः) वृक्षरूपरुद्रेभ्यः (नमः)। (पशूनाम्) जीवानाम् (पतये) पालकाय रुद्राय (नमः)। (त्विषीमते) त्विषिर्दीप्तिरस्यास्ति तस्मै (शष्पिञ्जराय) शष्पं बालतृणं तद्वत्पिञ्जराय पीतरक्तवर्णाय रुद्राय (नमः) नमोऽस्तु। (पथीनाम्) मार्गाणां पालकाय रुद्राय (नमः)। (हरिकेशाय) नीलवर्णकेशाय जरारहिताय (उपवीतिने (मंगलार्थयज्ञोपवीतधारिणे रुद्राय (नमः) नतिरस्तु। (पुष्टानाम्) गुणपूर्णानां नराणाम् (पतये) पालकाय स्वामिने (नमः) नमोऽस्तु॥ १७॥

भाषार्थ—भुजाओं में सुर्वण धारण करने वाले महाबाहु सेनापालक रुद्र के निमित्त नमस्कार है, दिशाओं के अधिपति अर्थात् समस्त जगत् को अपनी भुजाओं के नीचे रक्षा करने वाले सेनापति के निमित्त भी नमस्कार है, पर्णरूप हरे बालों वाले वृक्षरूप रुद्रों के निमित्त बारंबार नमस्कार है, जीवों के पालन करने वाले रुद्र के निमित्त नमस्कार है, कान्तिमान् बालतृणवत् पीतवर्ण वाले रुद्र के निमित्त नमस्कार है, मार्गों के पालन करने वाले रुद्र के निमित्त नमस्कार है, मंगल के निमित्त उपवीत धारण करने वाले नीलवर्ण केश वा जरारहित रुद्र के निमित्त नमस्कार है, गुणपूर्ण मनुष्यों के स्वामी रुद्र के निमित्त नमस्कार है॥ १७॥

तात्पर्य—तात्पर्य यह कि मार्गों में शान्तरूप रुद्र है, अश्वत्थादि वृक्षों पर जैसे आकाश-बेल आदि निर्मूल लताएँ होती हैं तद्वत् यज्ञोपवीत धारण किए हैं। विना रुद्र के किसी की स्थिति नहीं हो सकती। इससे रुद्र सबके स्वामी कहलाते हैं॥ १७॥

नम इत्यस्य कुत्स ऋषिः। निच्यृदष्टिश्छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे वि०॥ १८॥

भाष्यम् — (बभ्लुशाय) कपिलवर्णाय यद्वा-बिभर्ति रुद्रमिति बभ्लुबृर्षभस्तस्मिन् शेते स बम्लुशस्तस्मै रुद्राय (नमः)। (व्याधिने) विध्यति शत्रूनिति व्याधी तस्मै रुद्राय नमः। (अन्नानाम्) धान्यानाम् (पतये) पालकाय (नमः) नमः। भवस्य (संसारस्य) हेत्यै) आयुधाय संसारनिवर्तकाय रुद्राय (नमः) नतिरस्तु। (जगतां पतये) पालकाय रुद्राय (नमः) नमः। (आततायिने) आततेन विस्तृतेन धनुषा सह एति गच्छतीति आततायी उद्यतायुधस्तस्मै रुद्राय (नमः)। (क्षेत्राणाम्) देहानाम् (पतये) रक्षकाय पालकाय (नमः)। (अहन्त्रे) न हन्तीति अहन्ता तस्मै। (सूताय) सारथये तद्रूपाय (नमः)। (वनानाम्) अरण्यानाम् (पतये) पालकाय (नमः) नमोऽस्तु॥ १८॥

भाषार्थ—कपिलवर्ण वा वृषभ पर स्थित होने वाले शत्रुओं को बेधने वाले व्याधिरूप रुद्र को नमस्कार है। अन्नों के पालक रुद्रों के निमित्त नमस्कार है, संसार के आयुघ अर्थात् संसार निवर्तक रुद्र के निमित्त नमस्कार है, संसार के पालक रुद्र के निमित्त नमस्कार है, उद्यत आयुध वाले रुद्र के निमित्त नमस्कार है, देहों के पालन करने वाले रुद्र के निमित्त नमस्कार है, नहीं मारने वाले, पाप से रक्षक प्रधान सारथी रूप के निमित्त नमस्कार है, वनों के पालक के निमित्त नमस्कार है॥ १८॥

विवरण—रोगियों का रक्तह्रास होने पर जो वर्ण होता है उसको बभ्लुश कहते हैं॥ १८॥

नम इत्यस्य कुत्स ऋषिः। विराडतिधृतिश्छन्दः। रुद्रो देवता पाठे विनियोगः॥ १९॥

भाष्यम् —(रोहिताय) लोहितवर्णाय (स्थपतये) स्थपर्तिगृहादिकर्ता विश्वकर्मरूपेण तस्मै (नमः) नतिरस्तु। (वृक्षाणाम्) तरूणाम् (पतये)

पालकाय (नमः)। (भुवन्तये) भूमण्डलविस्तारकारिणे (वारिवस्कृताय) स्थानभोग्यकराय (नमः) नमोऽस्तु। (ओषधीनाम् ग्राम्यारण्यानामोषधीनाम् (पतये) पालकाय (नमः) नमोऽस्तु। (मंत्रिणे) सचिवरूपिणे (वाणिजाय) व्यापारकर्त्रे रुद्राय (नमः) नमोऽस्तु। (कक्षाणाम्) वनोत्पन्ना गुल्मवीरुधादयः कक्षास्तेषाम् (पतये) पालकाय (नमः) नमोऽस्तु। (उच्चैःघोषाय) युद्धे महाशब्दाय (आक्रन्दयते) रिपुरोदकाय (नमः) नमोऽस्तु। (पत्तीनाम्) पदातीनाम् (पतये) पालकाय (नमः) नमोऽस्तु॥ १९॥

भाषार्थ —लोहितवर्ण गृहादिकर्ता विश्वकर्मरूप के निमित्त नमस्कार है, वृक्षों के पालक के निमित्त नमस्कार है, भूमंडल के विस्तार करने वाले स्थानभोग्य करने वाले के निमित्त नमस्कार है, ग्राम्य और आरण्य औषधियों के पालक के निमित्त नमस्कार है, आलोचन में कुशल व्यापार कर्ताओं के रूप में स्थित के निमित्त नमस्कार है, वन के गुल्मवीरुधादि के निमित्त नमस्कार है, शत्रुओं के रुलाने वाले, युद्ध में बड़ा उग्र शब्द करने वाले रुद्र के निमित्त नमस्कार है, एक रथ, एक हाथी तीन घोड़े, पांच पैदल का नाम पत्ति है। इस प्रकार सेनाविशेष के पालक रुद्र के निमित्त नमस्कार है॥ १९॥

विशेष —स्थपति-शब्द से गृह आदि निर्माण करने वाले इनके मन में सदा ही इष्टका की चिन्ता लगी रहती है, इस कारण इनका अन्तर्- देवता लोहितवर्ण कहा है, कारण कि इष्टका लाल होती है॥ १९॥

नम इत्यस्य कुत्स ऋषिः। अतिधृतिश्छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे वि०॥ २०॥

भाष्यम् —(कृत्स्नायतया) कृत्स्नं समग्रमायतं विस्तृतम् अर्थाद्धनुर्यस्य स कृत्स्नायतस्तस्य भावः कृत्स्नायता तया आकर्णपूर्णधनुष्ट्वेन (धावते) युद्धे शीघ्रं गच्छते रुद्राय (नमः) नतिरस्तु। अथवा कृत्स्नः सर्व आयो लाभो यस्य सः कृत्स्नायस्तस्य भावः कृत्स्नायता तया (धावते) सर्वलाभप्रापकत्वेन धावते। (सत्त्वानाम्) शरणागतानां प्राणिनाम् (पतये) पालकाय (नमः) नमोऽस्तु। (सहमानाय) अभिभवनशीलाय (निव्याधिने) नितरां विध्यति हन्ति शत्रूनिति निव्याधी तस्मै (नमः)। (आव्याधिनीनाम्)

'आ समन्ताद्विध्यन्तीत्याव्याधिन्यः शूरसेनास्तासाम् (पतये) पालकाय (नमः)। (निषङ्गिणे) खड्गयुक्ताय (ककुभाय) महते रुद्राय नमः। (स्तेनानाम्) गुप्तचोराणाम् (पतये) पालकाय (नमः)। (निचेरवे) नितरां चेरुः निचेरुः तस्मै (परिचराय) परितः चरतीति परिचरस्तस्मै (नमः)। (अरण्यानाम्) वनानाम् (पतये) पालकाय (नमः) नतिरस्तु॥ २०॥

भाषार्थ —जो हमारी रक्षा निमित्त कर्णपर्यन्त धनुष खेंचकर धावमान होते हैं, उन रुद्र के निमित्त नमस्कार है, अथवा सब लाभ प्राप्त करने वाले के निमित्त नमस्कार है, शरण में आये हुए प्राणियों के पालक रुद्र के निमित्त नमस्कार है, शत्रुओं का तिरस्कार करने वाले, शत्रुओं को अधिक मारने वाले के निमित्त नमस्कार है, सब प्रकार के प्रहार करने वाली शूद्रसेनाओं के पालक के निमित्त नमस्कार है, उपद्रवकारियों पर खड्ग चलाने वाले महान् रुद्र के निमित्त नमस्कार है, गुप्तधनहारी जनों के, समरूप होने से, पालन करने वाले के निमित्त नमस्कार है, अपहार की बुद्धि से निरन्तर फिरने वाले अथवा आपण स्थान में हरण की इच्छा से फिरने वालों (गठकटों) के अन्तर्यामी के निमित्त नमस्कार है, वनों के पालन करने वाले के निमित्त नमस्कार है॥ २०॥

विवरण —जगत् भर में सर्वात्मा रुद्र हैं, इस कारण से स्तेनादि भी रुद्ररूप हैं। स्तेनादि के शरीर में जीव, ईश्वर इन दो रूपों से ईश्वर स्थित हैं, जीवरूप स्तेनादि शब्दवाच्य है, ईश्वर रूद्र रूप से लक्षित है— जैसे शाखा के अग्र से चन्द्रमा को दिखाते हैं इस प्रकार लक्ष्यार्थ की विवक्षासे मंत्रों में लौकिक शब्द लिखे गये हैं॥ २०॥

नमो वञ्चत इत्यस्य कुत्स ऋषिः। निच्यृदतिधृतिश्छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे वि०॥ २१॥

भाष्यम्—(वञ्चते) वञ्चति प्रतारयति तस्मै, वा गमनशीलाय रुद्राय (नमः) नमोऽस्तु। (परिवञ्चते) सर्वतो गमनशीलाय वा सर्वव्यवहारे धनापह्नवः परिवञ्चनम्। गुप्तचौरा द्विविधाः-रात्रौ वेश्मनि खातादिना द्रव्यहर्तारः, स्वीया एवाऽहर्निशं ज्ञातारो हर्तारश्च। पूर्वे स्तेना उत्तरे स्तायवः। तेषाम् (पतये) पालकाय (नमः) नमोऽस्तु। (निषङ्गिणे) खड्गिने (इषुधिमते) इषुधिस्तूणस्तत्सहिताय (नमः) नमोऽस्तु। (तस्कराणाम्)

प्रकटचोराणाम् (पतये) पालकाय (नमः) नमोऽस्तु। (सृकायिभ्यः) सृकेण वज्रेण सह यन्ति गच्छन्तीत्येवंशीलाः सृकायिणः। तेभ्यः (जिघांसद्भ्यः) हन्तुमिच्छद्भ्यः तेभ्यो रुद्रेभ्यः (नमः) नमोऽस्तु। (मुष्णताम्)क्षेत्रादिषु धान्यानामपहर्तारो मुष्णन्तस्तेषाम् (पतये) पालकाय (नमः) नमोऽस्तु। (असिमद्भ्यः) असियुक्तेभ्य (नक्तञ्चरद्भ्यः) रात्रौ गच्छद्भ्यः रुद्रेभ्यः (नमः) नमोऽस्तु। (विकृन्तानां) विकर्तनशीलानाम् (पतये) पालकाय (नमः) नमोऽस्तु॥ २१॥

भाषार्थ— ठगों के अन्तर्यामी के निमित्त स्वामी को अपना विश्वास दिलाकर व्यवहार में उनको वंचन करने वालों के साक्षी के निमित्त नमस्कार है, गुप्तचरों के पालक के निमित्त नमस्कार है, खङ्गधारी, बाणधारी के अर्थात्-उपद्रव करने वाले के शान्त करने वालों के निमित्त नमस्कार है, प्रकाश चोरों के पालक के निमित्त नमस्कार है, वज्र लेकर चलने वाले हत्याकारी जनों के अन्तर्यामी व उनके रूप रुद्रों के निमित्त नमस्कार है, क्षेत्र आदि से धान्यादि के हरण करने वालों के पालन करने वाले रुद्र के निमित्त नमस्कार है, खड्गधारी रात्रि में फिरने वाले दस्युगणों के हृदय में स्थित के निमित्त नमस्कार है, छेदन करके पराया धन हरने वाले दस्युगण के पालन करने वाले के निमित्त नमस्कार है॥ २१॥

नम ऊष्णीषिण इत्यस्य कुत्सऋषिः। निच्यृदष्टिश्छंदः। रुद्रो देवता। पाठे वि०॥ २२॥

भाष्यम् —(उष्णीषिणे) उष्णीषं शिरोवेष्टनमस्यास्तीत्युष्णीषी तस्मै, (गिरिचराय) गिरौ चरते पर्वतसंचारिणे (नमः) नमोऽस्तु। (कुळुञ्चानाम्) कुंभूमिं क्षेत्रगृहादिरूपां लुञ्चन्ति हरन्ति कुलुञ्चाः तेषाम् (पतये) पालकाय (नमः) नमोऽस्तु। (इषुमद्भ्यः) जनान् भीषयितुं बाणधारिणस्तेभ्यो रुद्रेभ्यः (नमः) नमोऽस्तु। (च) अपि (धन्वायिभ्यः) हे रुद्राः— धनुर्धारिभ्यः (वः) युष्मभ्यम् (नमः) नमोऽस्तु। (आतन्वानेभ्यः) आतन्वन्त्यारोपयन्ति ज्यां धनुषीत्यातत्वानास्तद्रूपेभ्यः (नमः) नमोऽस्तु। (च) अपि (प्रतिदधानेभ्यः) प्रतिदधते सन्दधते बाणं धनुषीति सन्दधानास्तेभ्यः (वो) युष्मभ्यं) (नमः) नमोऽस्तु। (आयच्छद्भ्यः) आयच्छन्त्याकर्षन्ति धनूंषि ते आयच्छन्तस्तेभ्यः (नमः)। (च) अपि (अस्यद्भ्यः) अस्यन्ति क्षिपन्ति बाणानित्यस्यन्तस्तेभ्यः (वः) युष्मभ्यम् (नमः) नमोऽस्तु॥ २२॥

भाषार्थ —उष्णीष (पगड़ी) धारण करने वाले सभ्यगण ग्रामों में विचरने वाले शून्यमस्तगिरि वन में फिरने वाले दोनों प्रकार के दलों के हृदय में स्थित रुद्र के निमित्त नमस्कार है, छल बल कौशल से दूसरे के गृहभूमि आदि हरण करने वालों के पालक के निमित्त नमस्कार है, मनुष्य को डराने को बाण धारण करने वाले और धनुष साथ लेकर चलने वाले वा कुलुञ्चगणों के दमनार्थ बाणधारी आप रुद्र के निमित्त नमस्कार है, कुलुंचों के दमनार्थ धनुष पर ज्या आरोपण करने वाले के निमित्त नमस्कार है और धनुष पर बाण चढ़ाने वाले आप के निमित्त नमस्कार है। कुलुंचों के दमन के निमित्त धनुष को आकर्षण करने वाले के निमित्त नमस्कार है, और बाणों के निक्षेप करने वाले आपके निमित्त नमस्कार है॥ २२॥

नमो विसृजद्भ्य इत्यस्य कुत्स ऋषिः। निच्यृदति-जगती छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे वि०॥ २३॥

भाष्यम् —(विसृजद्भ्यः) विमुञ्चन्ति बाणानरिष्विति विसृजन्तः तेभ्यः (नमः)। (च) अपि (विध्यद्भ्यः) शत्रून् ताडयद्भ्यः (वः) युष्मभ्यम्) (नमः) नमोऽस्तु। (स्वपद्भ्यः) स्वप्नावस्थामनुभवद्भ्यः (जाग्रद्भ्यश्च) जाग्रदवस्थावन्तस्तेभ्यो (वः) युष्मभ्यम् नमोऽस्तु। (शयानेभ्यः) सुषुप्त्यवस्थावद्भ्यः (च आसीनेभ्यः) आसते ते आसीना तेभ्यश्च (वो नमः) नमोऽस्तु। (तिष्ठद्भ्यः) स्थितिं कुर्वद्भ्यः (नमः) नमोऽस्तु। (धावद्भ्यः) धावन्ति ते धावन्तो वेगवद्गतयस्तेभ्यः (वो नमः) नमोऽस्तु। परमाद्वैतप्रतिपादनाय स्तुतिः॥ २३॥

भाषार्थ—पापियों के दमनार्थ बाण त्यागने वाले के निमित्त नमस्कार है, और शत्रुओं के लक्ष्य बेधने वाले आप के निमित्त नमस्कार है, और जाग्रत् अवस्था के अनुभवी आपके निमित्त नमस्कार है, सुषुप्ति अवस्थावालों के अन्तर में स्थित आपके निमित्त नमस्कार है, बैठे हुओं के अन्तर में स्थित के निमित्त नमस्कार है, वेगवान् गतिवालों के अन्तर में स्थित आपके निमित्त नमस्कार है॥ २३॥

नमः सभाभ्य इत्यस्य कुत्स ऋषिः। शक्वरी छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे वि०॥ २४॥

भाष्यम् —(सभाभ्यः) सभारूपेभ्यः रूद्रेभ्यः (नमः) नमोऽस्तु। (च सभापतिभ्यः) सभायाः पतिभ्यः (वो नमः) नमोऽस्तु। सभादिषु रुद्रदृष्टिः कर्तव्येव तात्पर्यम्। (अश्वेभ्यः) अश्वास्तुरगास्तेभ्यः (नमः) नमोऽस्तु। (अश्वपतिभ्यः) अश्वानां पतिभ्यः (वो नमः) नमोऽस्तु। (आव्याधिनीभ्यः) आविध्यन्तीत्याव्याधिन्यः सेनास्ताभ्यः (नमः)। (च) अपि (विविध्यन्तीभ्यः) विशेषेण विध्यन्तीति विविध्यन्त्यः ताभ्यः (वो नमः) नमोऽस्तु। (उगणाभ्यः) उत्कृष्टा गणाः भृत्यसमूहाः यासां ताः उगणा ब्राह्म्यादयः मातरस्ताभ्यः (नमः) नमोऽस्तु। (च) अपि (तृꣳहतीभ्यः) हन्तुं समर्थाः दुर्गादयस्ताभ्यः (वो नमः) नमोऽस्तु॥ २४॥

भाषार्थ —अब वातसंज्ञक रुद्र जो रुद्रलोक में निवास करते हैं, अद्वैत-प्रतिपादन के निमित्त उनका वर्णन करते हैं—सभारूप रुद्र के निमित्त नमस्कार है। सभा आदि में रुद्र दृष्टि करनी चाहिये। सभापतिरूप आपके निमित्त नमस्कार है, प्रत्येक अश्व के अन्तर में स्थित आपके निमित्त नमस्कार है, और अश्वों के अधिपति आपके निमित्त नमस्कार है। देव-सेनाओं में स्थित आपके निमित्त नमस्कार है, और विशेषकर बेधने वाली देव-सेनाओं में स्थित रुद्र के निमित्त नमस्कार है, और युद्ध में प्रहार करने वाले दुर्गादि में स्थित आपके निमित्त नमस्कार है॥ २४॥

नमो गणेभ्य इत्यस्य कुत्स ऋषिः। भुरिक्छक्वरी छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे वि०॥ २५॥

भाष्यम् — (गणेभ्यः) गणः समूहः तत्स्वरूपेभ्यः (नमः)। (गणिपतिभ्यश्च) गणपालकास्तेभ्यश्च (वो नमः) नमस्कारः। (व्रातेभ्यः) नानाजातीयानां संघास्तेभ्यः (नमः)। (च) व्रातपतिभ्यः व्रातपालकास्तेभ्यः (वः) (नमः)। (गृत्सेभ्यः) गृत्सा मेधाविनस्तेभ्यः (नमः)। (च) गृत्सपतयस्तत्पालकास्तेभ्यः (वः) युष्मभ्यम् (नमः)। (विरूपेभ्यः) नग्नमुण्डजटिलादयस्तेभ्यः (नमः)। (विश्वरूपेभ्यः) नानाविधं रूपं विश्वरूपास्तुरङ्गवदनहयग्रीवादयस्तेभ्यः (वः) (नमः)॥ २५॥

भाषार्थ — देवानुचर भूत-विशेषों के निमित्त नमस्कार है, गणों के अधिपति आपके निमित्त नमस्कार है, विशेष गण अथवा अनेक जातियों के समूह

के निमित्त नमस्कार है, वातगणों के अधिपति आपके निमित्त नमस्कार है, बुद्धिमानों के अथवा विषय-लंपट के निमित्त नमस्कार है, और बुद्धिमानों के रक्षक आपके निमित्त नमस्कार है, नग्न-मुण्ड-जटिलादि विकृतरूप के निमित्त वा विविध रूपवालों के निमित्त नमस्कार है, सर्वस्वरूप नानाविधरूप वा तुरंगवदन हयग्रीवादि रूप आपके निमित्त नमस्कार है॥ २५॥

नमः सेनाभ्य इत्यस्य कुत्स ऋषिः। भुरिगतिजगती छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे वि०॥ २६॥

भाष्यम् —(सेनाभ्यः) चमूस्वरूपेभ्यः (नमः)। (च) (सेनानिभ्यः) सेनाः नयन्तीति सेनान्यः तेभ्यः (वः) (नमः)। (रथिभ्यः) रथा येषां ते रथिनस्तेभ्यः (नमः)। (च) अरथेभ्यः) रथवर्जिता योद्धारस्तेभ्यः (वो नमः)। (क्षतृभ्यः) रथानामधिष्ठातारस्तेभ्यः (नमः)। (च) संग्रहीतृभ्यः) संग्रहीतारः सारथयस्तेभ्यः (वो नमः)। (महद्भ्यः) जातिविद्यादिभिरुत्क्रष्टास्तेभ्यः (च) (अर्भकेभ्यः) प्रमाणादिभिरल्पा-स्तैभ्यः (वो नमः)॥ २६॥

भाषार्थ —सेनारूप के निमित्त नमस्कार है, सेनापतिरूप आपके निमित्त नमस्कार है, प्रशंसित रथवालों के निमित्त नमस्कार है, रथहीन आपके निमित्त नमस्कार है रथ के अधिष्ठाता के अंतर में स्थित के निमित्त नमस्कार है, और सारथियों के अन्तर में स्थित वा रण-सामग्रीसंग्रहकर्त्ता आपके निमित्त नमस्कार है, ज़ाति, विद्या और ऐश्वर्य में उत्कृष्ट पूज्यरूप के निमित्त नमस्कार है, प्रामाणादि से अल्परूप आपके निमित्त नमस्कार है॥ २६॥

नमस्तक्षभ्य इत्यस्य कुत्स ऋषिः। निच्यृच्छक्वरी छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे वि०॥ २७॥

भाष्यम् —(तक्षभ्यः) तक्षाणः शिल्पजातयस्तेभ्यः (नमः)। (च) (रथकारेभ्यः) रथं कुर्वन्तीति रथकारास्तेभ्यः (वः) (नमः)। (कुलालेभ्यः) कुंभकारेभ्यः (नमः)। (च कर्मारेभ्यः) लोहकारेभ्यः (वो नमः) नमोऽस्तु। (निषादेभ्यः) भिल्लेभ्यः (नमः)। (च (पुञ्जिष्ठेभ्यः) पुल्कसादिभ्यः (वो नमः) नमोऽस्तु। (श्वनिभ्यः) शुनो नयन्तीति श्वनयस्तेभ्यः (नमः) नमोऽस्तु। (च मृगयुभ्यः) मृगान् कामयन्त इति लुंब्धकास्तेभ्यः (वो नमः) नमोऽस्तु॥ २७॥

भाषार्थ— काष्ठ की शिल्प विद्या के जानने वालों में व्याप्त के निमित्त नमस्कार, और विमान रथ निर्माणकारी उत्कृष्ट तक्षा के अन्तर में स्थित आपको नमस्कार है, प्रशंसित मृत्तिका के पात्र बनाने वालों में स्थित के निमित्त नमस्कार, और लोहे के शस्त्र बनाने वालों में स्थित के निमित्त नमस्कार है, गिरिचारी भील आदि में स्थित रुद्र के निमित्त नमस्कार, और पक्षिघातक पुल्कस आदि वा संकीर्ण जातियों के अन्तर में व्याप्त आपके निमित्त नमस्कार है, कुत्तों के गले में रस्सी बांधकर धारण करने वालों के अन्तर को जानने वाले के निमित्त नमस्कार है, मृगों की कामना वाले व्याधों के अन्तर में स्थित आपको नमस्कार है॥ २७॥

नमः श्वभ्य इत्यस्य कुत्स ऋषिः। आर्षी जगती छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे वि०॥ २८॥

भाष्यम्— (श्वभ्यः) कुक्कुररूपेभ्यः (नमः) नमोऽस्तु। (श्वपतिभ्यः) श्वपालकेभ्यः (वः) युष्मभ्यम् (नमः) नमोऽस्तु। इत उत्तरं रुद्रनामानि। (च भवाय) भवन्ति उत्पद्यन्ते जन्तवोऽस्मादिति भवस्तस्मै (नमः) नमोऽस्तु। (च रुद्राय) रु दुःखं द्रावयतीति रुद्रस्तस्मै (नमः) नमोऽस्तु। (च शर्वाय) पापहारिणे (नमः) नमोऽस्तु। (च पशुपतये) जीवानां पालकाय वा अज्ञान् पाति रक्षतीति पशुपतिस्तस्मै (नमः) नमोऽस्तु। (च नीलग्रीवाय) नीला श्यामा ग्रीवा यस्य स तस्मै, (शितिकण्ठाय) शितिः श्वेतः कण्ठो नीलातिरिक्तभागो यस्य स शितिकण्ठस्तस्मै (नमः) नमोऽस्तु॥ २८॥

भाषार्थ —कुक्कुरों के अन्तर में स्थित के निमित्त नमस्कार है, कुक्कुरों के अधिपति किरातों के अन्तर में स्थित आपके निमित्त नमस्कार है, (यह पूजावाचक श्वः-शब्द है)। जिनसे सब जगत् उत्पन्न होता है उनके निमित्त नमस्कार है, दुःख दूर करने वाले देव के निमित्त नमस्कार है और पाप के नाश करने वाले के निमित्त नमस्कार है, प्राणियों के अधिपति के निमित्त नमस्कार है, नीलवर्ण ग्रीवावाले अथवा नीलवर्ण आकाश में उदित सूर्य्य में स्थित के निमित्त नमस्कार है नीलकण्ठवाले वा मेघसहित आकाश में उदित हुए सूर्य्य के अन्तर में स्थित के निमित्त नमस्कार है॥ २८॥

नमः कपर्दिन इत्यस्य कुत्स ऋषिः। भुरिगतिजगती छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे वि०॥ २९॥

भाष्यम् — (कपर्दिने) जटाजूटधारिणे (नमः) नमोऽस्तु। (च व्युप्तकेशाय) मुण्डितकेशाय (नमः) नमोऽस्तु। (च सहस्राक्षाय) बहुनेत्राय (च शतधन्वने) बहुधन्वने (नमः) नमोऽस्तु। (च गिरिशयाय) गिरौ शेते गिरिशयस्तस्मै (च शिपिविष्टाय) विष्णुरूपाय, यद्वा-शिपिषु पशुषु विष्टः प्रविष्टः तस्मै 'पशवो वै शिपिः' इति श्रुतेः। (च मीढुष्टमाय) सेक्तृतमाय यूने परिणामहीनाय (च इषुमते) शरयुक्ताय (नमः) नमोऽस्तु॥ २९॥

भाषार्थ—जटाजूटधारी के निमित्त भी नमस्कार है, मुण्डित केश के निमित्त नमस्कार है, और सहस्रलोचन इन्द्ररूप के निमित्त नमस्कार है, बहुत धनुष धारण करने वाले के निमित्त नमस्कार और सब प्राणियों के अन्तर व्यापक विष्णुरूप के निमित्त नमस्कार है, ("विष्णुः शिपिविष्टः" इति श्रुतेः अथवा पशवो वै शिपिः इति श्रुतेः)। वसुगणों में व्याप्त के निमित्त नमस्कार है। (अथवा यज्ञो वै शिपिः) यज्ञ में अधिष्ठातृ देवतारूप से प्रविष्ट अथवा शिपिः आदित्य मंडलमें स्थित ("शिपयोऽत्र रश्मय उच्यन्ते तैराविष्टो भवति" इति) के निमित्त नमस्कार है और तृप्तिकर्ता मेघरूप से तृप्तिकर्ता वा चार पदार्थों के वर्षा करने वाले के निमित्त और बाणधारी के निमित्त नमस्कार है॥ २९॥

नमो ह्रस्वायेत्यस्य कुत्स ऋषिः। विराडार्षी त्रिष्टुप् छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे वि०॥ ३०॥

भाष्यम् —(ह्रस्वाय) लघुप्रमाणकः ह्रस्वः तस्मै (नमः) नमोऽस्तु। (च वामनाय) संकुचितावयवाय (च बृहते) बृहन् प्रौढाङ्गस्तस्मै। (च वर्षीयसे) वर्षीयानतिशयेन वृद्धस्तस्मै (नमः) नमोऽस्तु। (च वृद्धाय) वृद्धो वयसाधिकस्तस्मै (च सवृधे) वर्धन्ते विद्याविनयादिगुणैस्ते वृधः पण्डिताः) क्विप्। तैः सह वर्तत इति सवृत् तस्मै (नमः) नमोऽस्तु। (च अग्र्याय) जगतामग्रे भव अग्र्यस्तस्मै (च प्रथमाय) मुख्याय (नमः) नमोऽस्तु॥ ३०॥

भाषार्थ—अल्प शरीर के निमित्त भी नमस्कार है, और संकुचित अवयव में व्यापृत के निमित्त नमस्कार है, प्रौढाङ्ग के निमित्त नमस्कार है, अतिवृद्ध के

निमित्त नमस्कार है, अवस्था में अधिक के निमित्त नमस्कार है, विद्याविनय आदि गुणयुक्त पंडित के साथ वर्तने वाले युवा के निमित्त नमस्कार है, और मुख्य, सब जगत् में प्रथम प्रादुर्भाव होने वाले के निमित्त नमस्कार है, सब में प्रथम मुख्य के निमित्त नमस्कार है॥ ३०॥

विशेष—आशय यह कि जब सृष्टि नहीं थी तब से आप सबसे प्रथम और अग्र्य कहे जाते हैं। आपको नमस्कार है॥ ३०॥

नमः आशव इत्यस्य कुत्स ऋषिः। स्वराडार्षी पंक्तिश्छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे वि०॥ ३१॥

भाष्यम् — (आशवे) जगद्व्यापिने, (च अजिराय) गतिशीलाय (नमः) नमोऽस्तु। (च शीघ्र्याय) वेगवद्वस्तुनि भवः शीघ्र्यः तस्मै, (च शीभ्याय) शीभते कत्थते इति शीभ आत्मश्लाघी। पचाद्यच् तत्र भव इति छान्दसो यत्प्रत्ययः। शीभो जलप्रवाहो वा स्थिरो वा तत्र भवाय (नमः) नमोऽस्तु। (च ऊर्म्याय) कल्लोलेषु भवः ऊर्म्यः तस्मै, (च अवस्वन्याय) अर्वाचीनं गच्छत उदकस्य स्वनो ध्वनिः अवस्वनः तत्र भवाय (नमः)। (च नादेयाय) नद्यां भवो नादेयस्तस्मै, (च द्वीप्याय) द्वीपे भवो द्वीप्यस्तस्मै नमः नमोऽस्तु॥ ३१॥

भाषार्थ —जगत्-व्यापक के निमित्त भी नमस्कार है, गतिशील के निमित्त तथा सर्वत्र व्यापक के निमित्त नमस्कार है, और वेगवाली वस्तुओं में विद्यमान और जलप्रवाह में विद्यमान आत्मश्लाघी वा आत्मरूप के निमित्त नमस्कार है, जलतरंग में होने वाले और स्थिर जलों में विद्यमान के निमित्त नमस्कार है, नदी में होने वाले के निमित्त और द्वीप अर्थात् टापू में होने वाले के निमित्त नमस्कार है॥ ३१॥

गूढार्थ—प्राणों के पुष्ट करने वाले अन्तकरण-चतुष्टय के पुष्ट करने वाले शीघ्रगमनादि सुख की प्राप्ति की लहरें शब्दादि का सुनना, शब्द करना इत्यादि शक्तियों के दाता आपको नमस्कार है, द्वीप-द्वीपान्तरों की शक्ति देने वाले आप को नमस्कार है॥ ३१॥

नमो ज्येष्ठायेत्यस्य कुत्स ऋषिः। स्वराडार्षी त्रिष्टुप् छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे वि०॥ ३२॥

भाष्यम् —(ज्येष्ठाय) अत्यन्तं प्रशस्यो ज्येष्ठस्तस्मै, (च कनिष्ठाय) अत्यन्तं युवाऽल्पो वा कनिष्ठस्तस्मै (नमः) नमोऽस्तु। (च पूर्वजाय) पूर्वं जगदादौ हिरण्यगर्भरूपेणोत्पन्नः पूर्वजस्तस्मै, (च अपरजाय) अपरस्मिन्काले प्रलये कालाग्निरूपेण जातः अपरजस्तस्मै (नमः)। (च मध्यमाय) मध्ये भवो मध्यमस्तस्मै देवतिर्यगादिरूपिणे, (अपगल्भाय) अव्युत्पन्नेन्द्रियरूपाय, वा एकगर्भान्तरितोऽपगल्भस्तस्मै (नमः) नमोऽस्तु। (च जघन्याय) जघनं गवादीनां पश्चाद्भागस्तत्र भवो जघन्यस्तस्मै, (च बुध्न्याय) बुध्ने वृक्षादिमूले भवो बुध्न्यस्तस्मै (नमः) नमोऽस्तु॥ ३२॥

भाषार्थ—अति प्रशस्य ज्येष्ठरूप के निमित्त और अतियुवा वा कनिष्ठरूप के निमित्त नमस्कार है, (अर्थात् सृष्टि के आरंभ में जो प्रथम उत्पन्न हुआ उसके अन्तर में भी विद्यमान और उसके पीछे जो कुछ हो रहा है उस सब के हृदय में भी विद्यमान होने से ज्येष्ठ-कनिष्ठ रूप है) और जगत् के आदि में हिरण्यगर्भरूप से उन्पन्न और प्रलयकाल में कालाग्निरूप से होने वाले के निमित्त नमस्कार है। और सृष्टि संसार के अनन्तर देवतिर्यगादिरूप से होने वाले के निमित्त नमस्कार है। और अप्रगल्भ अव्युत्पन्न इंद्रिय-प्रकाश रहित अण्डरूप के निमित्त नमस्कार है और गवादि के पश्चाद्भाग में होने वाले स्वेदज कृमि कीट आदि में वर्तमान के निमित्त नमस्कार है, तथा वृक्षादि के मूल में होने वाले के निमित्त नमस्कार है॥ ३२॥

विशेष —यह अवयव विधायक नमस्कार है॥ ३२॥

नमः सोभ्यायेत्यस्य कुत्स ऋषिः। आर्षी त्रिष्टुप्छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे वि०॥ ३३॥

भाष्यम् —(सोभ्याय) सोर्भ गन्धर्वनगरं तत्र भवस्तस्मै, यद्वा सोभ्याः उभाभ्यां पुण्यपापाभ्यां सहितः मनुष्यलोकस्तत्र भवः सोभ्यस्तस्मै; (च प्रतिसर्य्याय) प्रतिसरो विवाहोचितं हस्तसूत्रमभिचारो वा तत्र भवस्तस्मै नमः) नमोऽस्तु। (च याम्याय) पापिनां नरकार्तिदाता तस्मै, (च क्षेम्याय) क्षेमे कुशले भवः क्षेम्यस्तस्मै (नमः) नमोऽस्तु। (च श्लोक्याय) श्लोका वैदिकमन्त्रा यशो वा तत्र भवः श्लोक्यस्तस्मै; (च अवसान्याय) अवसानं समाप्तिर्वेदान्तो वा तत्र भवः तस्मै (नमः) नमोऽस्तु। (उर्वर्य्याय) उर्वरा

सर्वसस्याढ्या भूमिस्तत्र धान्यरूपेण भवस्तस्मै, (च खल्याय) खलो धान्यविवेचनदेशस्तत्र भवस्तस्मै (नमः) नमोऽस्तु॥ ३३॥

भाषार्थ—गन्धर्वनगर में होने वाले अथवा पुण्यपाप सहित वर्तमान मनुष्य लोक में होने वाले ("पुण्येन पुण्यलोकं नयति पापेन पापमुभाभ्यां मनुष्यलोकम्" इति) अथवा पृथिवी लोक में उत्पन्न होने के समय जन्मे बालक के अन्तर देवतारूप के निमित्त भी नमस्कार है, और विवाहादि कार्य में हाथ में बाँधे मंगलसूत्र में विद्यमान के निमित्त नमस्कार है और पापियों को दुःख देने को यम में वर्तमान और कुशल में होने वाले वा परलोक गये हुए प्राणी के कल्याण में विद्यमान के निमित्त नमस्कार है, और इस संसार में यश प्रचार के कारण भूत वा वैदिक मंत्ररूपी यज्ञ में होने वाले को और वेदान्त में स्थित वा जिसके प्रसाद से प्राणी जन्म मृत्यु से छुटकारा पाता है उसके निमित्त नमस्कार है, उपजाऊ भूमि में उत्पन्न हुए धान्यादि के अन्तर में भी विद्यमान के निमित्त नमस्कार है और धान्य विवेचन देश में होने वाले के निमित्त नमस्कार है॥ ३३॥

नमो वन्यायेत्यस्य कुत्स ऋषिः। स्वराडार्षी त्रिष्टुप् छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे वि०॥ ३४॥

भाष्यम् —(वन्याय) वने वृक्षादिरूपेण भवो वन्यस्तस्मै (च नमः) नमोऽस्तु। (च कक्ष्याय) कक्षं तृणं वा तत्र भवः कक्ष्यस्तस्मै (नमः) नमोऽस्तु। (च श्रवाय) शब्दरूपाय, (च प्रतिश्रवाय) प्रतिशब्दरूपाय (नमः) नमोऽस्तु, (च आशुषेणाय) आशु शीघ्रा सेना यस्य सः तस्मै, (च आशुरथाय) शीघ्रो रथो यस्य सः आशुरथस्तस्मै (नमः)। (च शूराय) युद्धधीराय, (च अवभेदिने) अवभेदी अर्वाचीनं भेत्तुं शीलमस्येति अवभेदी तस्मै (नमः) नमोऽस्तु॥ ३४॥

भाषार्थ—वन में वृक्षादिरूप से होने वाले के निमित्त वा घर में विद्यमान को भी नमस्कार है, और तृणवल्ली में होने वाले के निमित्त नमस्कार है, शब्दरूप वा ध्वनि में वर्तमान के निमित्त नमस्कार है, और प्रतिध्वनि में विद्यमान के निमित्त नमस्कार है, शीघ्र चलने वाली सेना की श्रेणी में विद्यमान के निमित्त नमस्कार है, और शीघ्र चलने वाले रथों की श्रेणी में विद्यमान के निमित्त नमस्कार है, युद्ध, विशारदों के हृदय में विद्यमान के निमित्त, और शत्रु का हृदय वेधने वाले शस्त्र में भी विद्यमान के निमित्त नमस्कार है॥ ३४॥

ॐ नमो विल्मिन इत्यस्य कुत्स ऋषिः। स्वराडार्षी त्रिष्टुष् छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे वि०॥ ३५॥

भाष्यम्— (बिल्मिने) विल्ममस्यास्तीति बिल्मी, बिल्मं शिरस्त्राणमस्यास्तीति बिल्मी तस्मै, (च कवचिने) पटस्यूतं कर्पासगर्भं देहरक्षकं कवचं तदस्यास्तीति तस्मै (नमः) नमोऽस्तु। (च वर्मिणे) लोहमयं शरीररक्षकं वर्म तदस्यास्तीति तस्मै, (च वरूथिने) वरूथः रथगुप्तिर्वा सोऽस्यास्तीति वरूथी तस्मै (नमः) नमोऽस्तु। (च श्रुताय) प्रसिद्धाय, (च श्रुतसेनाय) श्रुता प्रसिद्धा सेना यस्य स श्रुतसेनः तस्मै (नमः) नमोऽस्तु, (च दुन्दुभ्याय) दुन्दुभौ भवः दुन्दुभ्यस्तस्मै, (च आहनन्याय) आहनने भव आहनन्यः तस्मै (नमः) नमोऽस्तु॥ ३५॥

भाषार्थ—शिरस्त्राण धारण करने वाले के निमित्त नमस्कार है, वा बेलपत्र धारण से प्रसन्न होने वाले के निमित्त नमस्कार है। और देहावरण स्यूत अंगरखा कवच धारण करने वाले के निमित्त नमस्कार है, बख्तर धारण करने वाले के निमित्त नमस्कार है, रथ का गोपस्थान वा हाथी के ऊपर की अम्बरी में विद्यमान के निमित्त नमस्कार है और प्रसिद्ध के निमित्त नमस्कार है, प्रसिद्ध सेना वाले के निमित्त भी नमस्कार है और रण के वाजे में विद्यमान के निमित्त और वाद्य साधन-दंड होने वाले के निमित्त नमस्कार है॥ ३५॥

भावार्थ—यह संसार बिल्वके तुल्य है, इसमें जल के तुल्य आपकी शीतल वेदवाणी है, आप कवच के समान माया से ऐसे ढके हैं जिस प्रकार शरीर बख्तर से आच्छादित होता है, सद्गुण सत्यविज्ञान धनादि सेनारूप हैं, जिनसे पापादि शत्रु भागते हैं, आपका यश वेदादि में बहुत प्रकार से सुना है, इसी से वेद को श्रुति कहते हैं वह दोषरूपी शत्रु के निवारण करने की सेना है, उसके शब्द दुन्दुभी हैं, जिस सेना से पापादि शत्रुओं का हनन होता है ऐसे आपके निमित्त नमस्कार है॥ ३५॥

नमो धृष्णव इत्यस्य कुत्स ऋषिः। भुरिगार्षी पंक्तिश्छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे वि०॥ ३६॥

भाष्यम् —(च धृष्णवे) धृष्णुः प्रगल्भः तस्मै (नमो) नमोऽस्तु। (च प्रमृशाय) पण्डिताय नमः, (च निषङ्गिणे) खड्गयुताय, (च इषुधिमते)

तूणयुताय (नमः) नमोऽस्तु। (च तीक्ष्णेषवे) तीक्ष्णा असह्या इषवो वाणा यस्य सः तीक्ष्णेषुस्तस्मै, (च आयुधिने) आयुधधारिणे (नमः) नमोऽस्तु। (च स्वायुधाय) शोभनायुधाय, (च सुधन्वने) शोभनधनुषे (नमः) नमोऽस्तु॥ ३६॥

भाषार्थ—प्रगल्भरूप अपने पक्ष की रक्षा करने वाले के निमित्त नमस्कार है, विचारशील पंडितरूप वा विपक्षदलन करने वाले के निमित्त नमस्कार है और खड्गधारी के निमित्त नमस्कार है, तरकसयुक्त के निमित्त नमस्कार है, तीक्ष्णबाणधारी के निमित्त और मुद्गरादि आयुध धारण करने वाले के निमित्त नमस्कार है, शोभन आयुध, त्रिशूल, लोह, शिलादि धारण करने वाले के निमित्त नमस्कार है और पिनाक श्रेष्ठ धनुषधारी के निमित्त नमस्कार है॥ ३६॥

नमः स्रुत्यायेत्यस्य कुत्स ऋषिः। निचृदार्षी त्रिष्टुप् छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे वि०॥ ३७॥

भाष्यम् —(च स्रुत्याय) स्रुतिः क्षुद्रप्रवाहस्तत्र भवः स्रुत्यस्तस्मै, (च पथ्याय) पथि भवः पथ्यः तस्मै (नमः) नमोऽस्तु। (च काट्याय) काटे भवः काट्यः, कुत्सितम् अटति काटः विषयमार्गः तत्र भवः काट्यः तस्मै, (च नीप्याय) नीचैर्गच्छन्त्यापो यत्र स नीपः निम्नभूमिः तत्र भवः तस्मै (नमः) नमोऽस्तु। (च कुल्याय) कुल्या अल्पा कृत्रिमा सरित् कुलेषु देहेषु वाऽन्तर्यामिरूपेण भवः कुल्यः तस्मै, (च सरस्याय) सरसि भवः सरस्यः तस्मै (नमः), (च नादेयाय) नद्यां भवो नादेयः तस्मै नदीजलरूपाय, (च वैशन्ताय) वेशन्तोऽल्पतरः तत्र भवः वैशन्तः तस्मै (नमः) नमोऽस्तु॥ ३७॥

भाषार्थ—क्षुद्रमार्ग ग्राम की बाट में स्थित के निमित्त और राजमार्ग में होने वाले के निमित्त नमस्कार है, दुर्गम मार्ग में स्थित के निमित्त और पर्वत के नीचे भाग में स्थित के निमित्त नमस्कार है, नहर के मार्ग में स्थित के निमित्त वा देहों में अन्तर्यामी रूप से स्थिर के और सरोवरों में होने वाले के निमित्त नमस्कार है, नदी में जल रूप से स्थित के निमित्त और अल्प, सरोवर गोष्पदादि के जल में स्थित के निमित्त नमस्कार है॥ ३७॥

गर्भित आशय—वेद ही सबके निमित्त सुगम मार्ग है, इसमें चलने से दुःखादि नहीं सताते कारण कि इसमें कंटक नहीं हैं। छोटे बड़े सरोवररूप जो आश्रमों का वर्णन है उनके द्वारा रूद्र प्राप्त होते हैं॥ ३७॥

नमः कूप्यायेत्यस्य कुत्स ऋषिः। भुरिगार्षी पंक्तिश्छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे वि०॥ ३८॥

भाष्यम् —(च कूप्याय) कूपे भवः कूप्यः तस्मै, (च अवट्याय) अवटे गर्ते भवः अवट्यः तस्मै (नमः) नमोऽस्तु। (च वीध्र्याय) विशेषेण इध्रं निर्मलं शरदभ्रं तत्र भवो वीध्र्यः। यद्वा-विगत इध्रो दीप्तिर्यस्मात्स वीध्रीः धनागमः तत्र भवाय, (च आतप्याय) आतपे भवः आतप्यः तस्मै (नमः) नमोऽस्तु। (च मेघ्याय) मेघे भवः मेघ्यः तस्मै, (च विद्युताय) विद्युति भवः विद्युत्यः तस्मै (नमः) नमोऽस्तु। (च वर्ष्याय) वर्षे भवो वर्ष्यः तस्मै, (च अवर्ष्याय) अवर्षे भवोऽवर्ष्यस्तस्मै (नमः) नमोऽस्तु॥ ३८॥

भाषार्थ—कूप में होने वाले के निमित्त और गर्त में होने वाले के निमित्त नमस्कार है, और महाप्रकाश वा घोर अन्धकार में स्थित के निमित्त और धूप वा प्रकाश में होने वाले के निमित्त नमस्कार है, मेघ में होने वाले के निमित्त और बिजली में होने वाले के निमित्त नमस्कार है। और वर्षा की धारा में स्थित के निमित्त, तथा वृष्टि के प्रतिबंध में होने वाले के निमित्त नमस्कार है॥ ३८॥

नमो वात्यायेत्यस्य कुत्स ऋषिः। स्वराडार्षी पंक्तिश्छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे वि०॥ ३९॥

भाष्यम् —(च वात्याय) वाते भवः वात्यः तस्मै, (च रेष्म्याय) रिष्यन्ते नश्यन्ति भूतान्यत्रेति रेष्मा प्रलयकालः तत्र भवः रेष्म्यः तस्मै (नमः) नमोऽस्तु। (च वास्तव्याय) वास्तु गृहं तत्र भवः वास्तव्यः तस्मै, (च वास्तुपाय) वास्तु गृहं पाति वास्तुपः तस्मै (नमः) नमोऽस्तु। (च सोमाय) उमासहितः सोमस्तस्मै, (च रुद्राय) दुःखनाशकाय (नमः) नमोऽस्तु। (च ताम्राय) उदयाद्रविरूपेण तस्मै, (च अरुणाय) अरुणरूपाय (नमः) नमोऽस्तु॥ ३९॥

भाषार्थ—वायुप्रवाह में होने वाले के निमित्त नमस्कार है और प्रलय की पवन में होने वाले के निमित्त नमस्कार है। वास्तुगृह में होने वाले के निमित्त और वास्तुगृह के पालने वाले के निमित्त नमस्कार है। चन्द्रमा में स्थित वा उमासहित के निमित्त और दुःखनाशक रुद्ररूप वा अग्निरूप के निमित्त नमस्कार है। सायंकाल के सूर्य में स्थित के निमित्त प्रभातकालीन सूर्य में स्थित के निमित्त

नमस्कार है वा उदयकालीन ताम्र और उदयकाल के उपरान्त कुछ रक्तरूप सूर्य्य में स्थित के निमित्त नमस्कार है॥ ३९॥

आशय—आयुआदि के परमाणुओं को एकत्र कर पंचीकरण रीति से इस संसार की संपूर्ण वस्तुओं के रचने वाले और सबके रक्षक सोम यव आदि के उत्पादक पापादि दोष निवारण को भयानकरूप अग्नि से तप्तधातु के समान शुद्ध रजोगुण से संसार उत्पादक के निमित्त नमस्कार है॥३९॥

नमः शङ्गव इत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्देवा ऋषयः। भुरिगतिशक्वरी छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे वि०॥ ४०॥

भाष्यम् —(शङ्गवे) शं सुखं गमयतीति शङ्गुः, सुखरूपा गावो वाचो वेदरूपा यस्येति वा तस्मै, (च पशुपतये) प्राणिनां पालकाय (नमः) नमोऽस्तु। (च उग्राय) शत्रून् हन्तुमुद्गूर्णायुधाय, (च भीमाय) भीमः शत्रुभयोत्पादकः तस्मै (नमः) नमोऽस्तु। (च अग्रे वधाय) अग्रे स्थितो हन्तीति अग्रेवधः तस्मै, (च दूरे वधाय) दूरे स्थितो हन्तीति दूरेवधः तस्मै (नमः) नमोऽस्तु, (च हन्त्रे) हननकर्त्रे लोके यो हन्ति तद्रूपेण रुद्र एव हन्तीत्यर्थः। (च हनीयसे) अतिशयहननकर्त्रे (नमः) नमोऽस्तु। (च (हरिकेशेभ्यः) हरिता वर्णा केशा इव येषां तेभ्यः, (वृक्षेभ्यः) कल्पतरुरूपेभ्यः (नमः); (च ताराय) तारयति संसारमिति तारः तस्मै (नमः) नमोऽस्तु॥ ४०॥

भाषार्थ—कल्याणरूप वेदवाणी वाले के निमित्त नमस्कार है और प्राणियों के पालक के निमित्त नमस्कार है, शत्रुओं के मारने को कठिन आयुध उठाये कठिन अन्तःकरण वाले के निमित्त और शत्रुभय उत्पादक भयानक दर्शन के निमित्त नमस्कार है, सन्मुख के शत्रु का वध करने वाले के निमित्त और दूर के शत्रु का वध करने वाले के निमित्त नमस्कार है, मारने वाले के रूप में स्थिर स्थावर पदार्थ के लयकारी के निमित्त नमस्कार है और अतिशयहन्ता सदा को मृत्यु का अभाव करने वाले के निमित्त नमस्कार है हरे पत्तेरूप केश वाले कल्पतरुरूप के निमित्त नमस्कार है, संसार के तारने वाले ॐकार रूप के निमित्त नमस्कार है॥ ४०॥

नमः सम्भवायेत्यस्य परमेष्ठी ऋषिः। रुद्रो देवता। पाठे वि०॥ ४१॥

भाष्यम् — (शम्भवाय) शं भवत्यस्मादिति शम्भवः। यद्वा शं सुखरूपश्चासौ भवः संसाररूपश्च मुक्तिरूपो भवरूपश्च आनन्दविज्ञानघनरूपश्च तस्मै (नमः) नमोऽस्तु। (च मयोभवाय) सुखरूपाय, (च शंकराय) शं करोतीति शंकरः तस्मै लौकिकसुखकराय (नमः) नमोऽस्तु। (च मयस्कराय) मयः मोक्षसुखं करोतीति मयस्करस्तस्मै, (च शिवाय) कल्याणरूपाय (नमः), (च शिवतराय) निर्विकाराय निरतिशयसर्वबीजाय भक्तानपि निष्पापान् करोतीत्यर्थः; तस्मै (नमः) नमोऽस्तु॥ ४१॥

भाषार्थ—इस लोक के कल्याणकारी जिनसे सुख होता है अथवा सुखरूप, संसाररूप और मुक्तिरूप के निमित्त नमस्कार है, संसार सुखदाता पारलौकिक कल्याण के आकारके निमित्त नमस्कार है, लौकिकसुख करने वाले के निमित्त नमस्कार है और मोक्षसुख करने वाले के निमित्त नमस्कार है, कल्याणरूप निष्पाप के निमित्त नमस्कार है और भक्तों के अत्यन्त कल्याणकारक और निष्पाप करने वाले के निमित्त नमस्कार है।

विशेष—स्रक्चंदनादि रूप से लौकिकसुख तथा शास्त्रज्ञान से मोक्षसुख देने वाले हैं॥ ४१॥

नमः पार्य्यायेत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्देवा ऋषयः। निच्यृदार्षी त्रिष्टुप् छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे वि०॥ ४२॥

भाष्यम् — (च पार्याय) पारे भवः पार्यः संसाराब्धेः परतीरे जीवन्मुक्तरूपेण वा भवः पार्यः तस्मै, (च अवार्य्याय) अर्वाक्तीरे संसारमध्ये संसारित्वेन भव अवार्य्यः तस्मै (नमः) नमोऽस्तु। (च प्रतरणाय) प्रकर्षेण मंत्रजपादिना पापतरणहेतुर्वा प्रतरति येन प्रतरणं वा नौकादि लघुद्रव्यं तत्र भवः तस्मै, (च उत्तरणाय) उत्कृष्टेन तत्त्वज्ञानेन संसारतरणहेतुरुत्तरणं वा उत्तरति अनेनेत्युत्तरणं तीरः, तत्र भवः तस्मै, (नमः), (च तीर्थ्याय) तीर्थे प्रयागादौ भवः तीर्थ्यः तस्मै, (च कूल्याय) कूले तटे भवः कूल्यः तस्मै (नमः) नमोऽस्तु। (च शष्प्याय) शष्पे शरतृणे भवः शष्प्यः तस्मै, (च फेन्याय) फेने भवः फेन्यः तस्मै (नमः) नमोऽस्तु॥ ४२॥

भाषार्थ—समुद्र के पार में भी विद्यमान अथवा संसार सागर के परंपार में

जीवन्मुक्तरूप से वर्त्तमान के निमित्त और सागर के इस पार में भी विद्यमान वा संसारमध्यवर्ती के निमित्त नमस्कार है, जहाज में विद्यमान वा अतिमंत्र जपादि से पाप के तारने के कारण के निमित्त और डोंगे में भी विद्यमान वा उत्कृष्ट तत्त्वज्ञान से संसार-सागर के पार करने वाले के निमित्त नमस्कार है, सागर आदि के गर्भ में वा तीर्थ प्रयाग पुष्कर आदि में विद्यमान के निमित्त और जलप्रणाली वा किनारों में प्रगट होने वाले के निमित्त नमस्कार है, गंगादि के तट में उत्पन्न कुश-अंकुरादि में विद्यमान के निमित्त और सागरादि के फेन में होने वाले के निमित्त नमस्कार है॥ ४२॥

नमः सिकत्यायेत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्देवादय ऋषयः। जगती छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे वि०॥ ४३॥

भाष्यम् —(च सिकत्याय) सिकतासु भवः सिकत्यः तस्मै, (च प्रवाह्याय) प्रवाहे स्त्रोतसि भवः प्रवाह्य तस्मै (नमः)। (च किंशिलाय) कुत्सिताः क्षुद्राः शिलाः शर्करारूपाः पाषाणा यत्र प्रदेशे स किंशिलः तद्रूपाय, (च क्षयणाय) क्षियन्त्यस्मिन्नाप इति क्षयणस्तस्मै (नमः) नमोऽस्तु। (च कपर्दिने) जटाजूटयुक्ताय, (च पुलस्तये) पुराऽग्रे तिष्ठति, पुलस्तिः यद्वा पूर्षु शरीरेषु अस्ति सत्ता यस्य स पुलस्तिः सर्वान्तर्यामी तस्मै (नमः) नमोऽस्तु। (च इरिण्याय) इरिणे भवः इरिण्यः तस्मै, (च प्रपथ्याय) प्रकृष्टः पन्थाः प्रपन्थो बहुसेवितो मार्गस्तत्र भवः प्रपथ्यः तस्मै (नमः) नमोऽस्तु॥ ४३॥

भाषार्थ—नदी आदि की रेती में विद्यमान और नदी आदि के प्रवाह में होने वाले के निमित्त नमस्कार है, नदी आदि के भीतर वृक्षकंकरादि में विद्यमान वा क्षुद्र पाषाण की शर्करायुक्त स्थान में स्थित के निमित्त और स्थिरजल में विद्यमान के निमित्त नमस्कार है, जटाजूटयुक्त वा घूमते हुए जल में विद्यमान और पुरजल में विद्यमान अथवा शरीरों में अन्तर्यामी रूप से विद्यमान के निमित्त और तृणरहित ऊषरभूमि में विद्यमान और बहुसेवित मार्ग व नालों में विद्यमान के निमित्त नमस्कार है॥ ४३॥

नमो व्रज्यायेत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिः। आर्षी त्रिष्टुप् छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे वि०॥ ४४॥

भाष्यम् — (च व्रज्याय) व्रजे गोसमूहे भवः व्रज्यः तस्मै, (च गोष्ठ्याय) गावस्तिष्ठन्ति यत्रेति गोष्ठः तत्र भवो गोष्ठ्यस्तस्मै (नमः) नमोऽस्तु। (च तल्प्याय) तल्पं शय्या तत्र भवस्तल्प्यः तस्मै, (च गेह्याय) गेहे भवो गेह्यः तस्मै (नमः) नमोऽस्तु। (च हृदय्याय) हृदये भवो हृदय्यो जीवस्तस्मै, (च निवेष्प्याय) निवेष्प्य आवर्तो नीहारजलं वा तत्र भवो निवेष्प्यः तस्मै (नमः) नमोऽस्तु। (च काट्याय) काटे भवः काट्यः, काटः कूपः कुस्सितमटन्ति गच्छन्ति जना यत्र स काटो दुर्गारण्यदेशस्तत्र भवः तस्मै, (च गह्वरेष्ठाय) गह्वरे विषमे गिरिगुहादौ गम्भीरे जले वा तिष्ठतीति गह्वरेष्ठः तस्मै (नमः) नमोस्तु॥ ४४॥

भाषार्थ — गोचरस्थान में विद्यमान और गोठ में विद्यमान के निमित्त नमस्कार है। शय्या में विद्यमान के निमित्त और घर में विराजमान के निमित्त नमस्कार है, हृदय में जीवरूप में स्थित के निमित्त और हि समूह में विराजमान के निमित्त नमस्कार है, दुर्गम मार्ग में विराजमान के निमित्त और गिरिगुहा वा गंभीरगुहा वा गंभीरजल में विराजमान के निमित्त नमस्कार है॥ ४४॥

ॐ नमः शुष्क्यायेत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्वा देवा ऋषयः। निच्यृदार्षी त्रिष्टुप् छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे वि०॥ ४५॥

भाष्याम् —(च शुष्क्याय) शुष्के काष्ठादौ भवः शुष्क्यस्तस्मै, (च हरित्याय) आर्द्रे काष्ठादौ भवः हरित्यः तस्मै (नमः) नमोऽस्तु। (च पांसव्याय) पांसुषु धूलिषु भवः पांसव्यः तस्मै, (च रजस्याय) रजसि गुणे परागे वा भवः रजस्यः तस्मै (नमः) नमोऽस्तु। (च लोप्याय) लोपे भवः लोप्यः तस्मै, (च उलप्याय) उलपा बल्वजादितृणविशेषास्तत्र भवः उलप्यः तस्मै (नमः) नमोऽस्तु। (च ऊर्व्याय) ऊर्व्यां भूमौ भवः ऊर्व्यः तस्मै, (च सूर्व्याय) शोभनः ऊर्व्यः कल्पानलः तत्र भवः तस्मै (नमः) नमोऽस्तु॥ ४५॥

भाषार्थ—सूखे काष्ठादि में विराजमान के निमित्त और हरे पत्ते आदि में विराज मान के निमित्त नमस्कार है, धूलि में विराजमान के निमित्त और रजोगुण वा पुष्पधूरी में विराजमान के निमित्त नमस्कार है, अगम्यदेश में विराजमान के निमित्त और बल्वजादि तृण में विराजमान के निमित्त नमस्कार है, भूमि वा

बडवानल में विराजमान के निमित्त और महाप्रलय अग्नि में विराजमान के निमित्त नमस्कार है॥ ४५॥

नमः पर्णायेत्यस्य परमेष्ठी ऋषिः स्वराट् प्रकृतिश्छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे वि०॥ ४६॥

भाष्यम्—(च पर्णाय) पत्ररूपाय, (च पर्णशदाय) पतितपर्णाय स्थानकर्त्रे (नमः) नमोऽस्तु। (च उद्गुरमाणाय) उद्यमशीलाय, (च अभिघ्नते) अभिहन्ति शत्रूनित्यभिघ्नन् तस्मै (नमः) नमोऽस्तु। (च आखिदते) आसमन्तात् खिद्यते दैन्यं करोत्यभक्तानामित्याखिदन् तस्मै, (च प्रखिदते) प्रकर्षेण खेदयति पापिन इति प्रखिदन् तस्मै (नमः) नमोऽस्तु। (च इषुकृद्भ्यः) ये इषवो बाणान् कुर्वन्ति तेभ्यः, (च धनुष्कृद्भ्यः) ये धनुष्कृतस्तेभ्यः (वः) युष्मभ्यम् (नमः) नमोऽस्तु। इदानीं रुद्राणां हृदयभूतानामग्निवायुसूर्याणां सम्बन्धीनि यजूंषि उच्यन्ते। (वः) युष्मभ्यम् (नमः) नमोऽस्तु, केभ्यः (किरिकेभ्यः) कुर्वन्तीदं जगद्वृष्ट्यादिद्वारेणेति किरिका वाय्वग्निसूर्याः। किंभूतेभ्यः (देवानां हृदयेभ्यः) देवानामग्निवायु-सूर्याणां हृदयभूता इत्यर्थः! (नमः) नमोऽस्तु। (विचिन्वत्केभ्यः) विचिन्वन्ति पृथक्कुर्वन्ति धर्मकारिणं पापकारिणं चेति विचिन्वत्काः तेभ्यः (नमः) नमोऽस्तु। (विक्षिणत्केभ्यः) विविधं क्षिण्वन्ति हिंसन्ति पापमिति विक्षिणत्कास्तेभ्योऽग्न्यादिभ्यो नमः। (आनिर्हतेभ्यः) आ समन्तान्निर्गताः सर्गादौ लोकेभ्यः इत्यानिर्हतास्तेभ्यो नमः। हन्तिर्गत्यर्थः। "तेभ्यस्तप्तेभ्यस्त्रीणि ज्योतिंष्यजायन्ताग्निर्योऽयं पवते सूर्यः"। इति श्रुतेः॥ ४६॥

भाषार्थ—पर्ण में विद्यमान के निमित्त और पूर्णपतित पर्णस्थित देशरूप वा पर्ण से उत्पन्न कीटादि में भी विद्यमान के निमित्त नमस्कार है, निरन्तर उद्यमी उत्पन्न करने वाले के निमित्त और शत्रुओं के संहार के निमित्त नमस्कार है, अभक्तों को सदा दुःखदाता त्रिविध ताप के प्रेरक के निमित्त और त्रिविध ताप के उत्पन्नकर्ता व पापियों को अति दुःखदायी के निमित्त नमस्कार है, बाण को उत्पन्न करने वाले के निमित्त और धनुष के करने वाले रुद्ररूप आपके निमित्त नमस्कार है। (युष्मदादेश से यह प्रत्यक्ष रूप है)। जो देवताओं के हृदयस्वरूप प्रधान अग्नि सूर्य्य के हृदयरूप वृष्ट्यादि द्वारा जगत् को सृजन करते हैं; ऐसे आपके निमित्त नमस्कार है, जो देवता देवताओं के हृदयस्वरूप हैं, जो वृष्टि

आदि से जगत् का पालन करते, जो धर्मात्मा और पापात्माओं को पृथक् करते हैं उन अग्नि, वायु और सूर्य्य के हृदयरूप के निमित्त नमस्कार है, विविधपापों को दूरी करने वाले अग्नि के निमित्त नमस्कार है, अर्थात् जो देवताओं का हृदयस्वरूप विक्षिणत्क वृष्टि आदि से जगत् का संहार करते हैं अग्नि वायु सूर्य्य के हृदयस्वरूप हैं उनके निमित्त बारबार नमस्कार है। सृष्टि की आदि में होने वाले रुद्रावतारों के निमित्त नमस्कार है अर्थात् जो देवताओं का हृदयस्वरूप अनिर्हत "काल प्राप्त होने से स्वयं भी गुप्त हो जाता है" वा जो सृष्टि की आदि में होते हैं जो अग्नि, वायु और सूर्य्य के भी हृदयस्वरूप है, उसको बार बार नमस्कार है॥ ४६॥

द्राप इत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिः। भुरिगार्षी बृहती छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे वि०॥ ४७॥

भाष्यम् —(द्रापे) द्रा कुत्सायां गतौ च, द्रापयतीति द्रापि पापकारिणे कुत्सितां गतिं नयतीत्यर्थः, (अन्धसस्पते), हे सोमस्य पालक, (दरिद्र) हे निष्परिग्रह, (नीललोहित) कण्ठे नीलोऽन्यत्र लोहितः शिवः, (नः) अस्माकम्, (आसाम् प्रजानाम्) पुत्रादीनां, (एषाम्) (पशूनाम्) अस्मदीयानां गवादीनाम् (मा भेः) मा भैषीः भयं मा कुरु, (मा रोक्) भङ्गं मा कार्षीः, (च किञ्चन) अपत्यादि (मा आममत्) मा भेः मा रुग्णं कुरु॥ ४७॥

भाषार्थ—हे पापियों की दुर्गति करने वाले, हे सोमके पालक! अद्वितीय होने से सहायशून्य निष्परिग्रह! हे नील और लोहित एक अंश नील दूसरा लाल शुक्ल कृष्ण उभयात्मक वा कंठ में नील अन्यत्र लोहित शिव! हमारे इन पुत्र-पौत्रादि और इन पशुओं को मत भय करो तथा प्रजा पशुओं का भंग मत करो और किसी प्रकार भी हम तथा हमारी प्रजा पशु को रुग्ण न करो सब प्रकार प्रजापशु में मंगल करो॥ ४७॥

इमा रुद्रायेत्यस्य कुत्सऋषिः। आर्षी जगती छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे वि०॥ ४८॥

भाष्यम् — (यथा) येन प्रकारेण (द्विपदे) पुत्रादये (चतुष्पदे) गवादिपशवे (शम्) सुखम् भवतु तथा (अस्मिन् ग्रामे) वासस्थाने

(विश्वम्) सर्वं प्राणिजातम् (पुष्टम्) समृद्धम् (अनातुरम्) निरुपद्रवम् (असत्) भवत् तेन प्रकारेण वयम् (इमाः) अस्मदीया (मतीः) बुद्धीः (तवसे) महते (कपर्दिने) जटिलाय (क्षयद्वीराय) क्षयन्तो निवसन्तो वीराः शूरा यत्र स क्षयद्वीरस्तस्मै, क्षयन्तो नश्यन्तो वीरा रिपवो यस्मादिति वा तस्मै (रुद्राय) रुद्रदेवाय (प्रभरामहे) समर्पयामः ॥ ४८ ॥

भाषार्थ—जिस प्रकार पुत्रादि एवं गवादि पशुओं में सुख की प्राप्ति हो तथा इस ग्राम में संपूर्ण प्राणिसमूह पुष्ट उपद्रवरहित हों उसी प्रकार हम इन अपनी बुद्धियों का महाबली जटिल शूरवीरों के निवासभूत रुद्रदेवता के निमित्त समर्पण करते हैं ॥ ४८ ॥

या ते रुद्र इत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्वा देवा ऋषयः । आर्ष्यनुष्टुप् छन्दः । रुद्रो देवता। पाठे वि० ॥ ४९ ॥

भाष्यम् — (रुद्र) हे शंकर (या) (ते) तव (शिवा) शान्ता (विश्वाहा) सर्वदा (शिवा) कल्याणकारिणी (भेषजी) औषधरूपा संसारव्याधिनिवर्तका तथा (रुतस्य) व्याधेः (शिवा) समीचीना (भेषजी) निवर्तकौषधिः (तनूः) शरीरमस्ति (तया) (तन्वा) शरीरेण शक्त्या वा (नः) अस्मान् (जीवसे) जीवतुम् (मृड) सुखय ॥ ४९ ॥

भाषार्थ—हे शंकर! जो आपकी शान्त निरंतर कल्याणकारिणी औषधिरूप संसार की व्याधि निवृत्त करने वाली तथा शरीरव्याधि की समीचीन औषधीरूप शरीर वा शक्ति है उस शक्ति से हमारे जीवन को सुखी करो ॥ ४९ ॥

भावार्थ—हे रुद्र! तुम्हारी कल्याणरूपिणी जो तनु सबसे कल्याणसाधनी जो सब रोगों की महौषधि है उस तनु के द्वारा हमको सुखी करो ॥ ४९ ॥

परि न इत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्देवा ऋषयः । आर्षी त्रिष्टुप् छन्द । रुद्रो देवता। पाठे वि० ॥ ५० ॥

भाष्यम् — (रुद्रस्य) शिवस्य (हेतिः) आयुधम् (नः) अस्मान् (परिवृणक्तु) परिवर्तयतु, (त्वेषस्य) क्रुद्धस्य (अधायोः) पापशीलस्य (दुर्मतिः) दुष्टा मतिर्द्रोहश्चास्मान् (परि) परिवृणक्तु, (मीढ्वः) हे सेक्तः (मघवद्भ्यः) मघं हविर्लक्षणं धनं विद्यते येषां ते यजमानास्तदर्थं यजमानानां भयनिवृत्तये (स्थिरा) स्थिराणि दृढानि धनूंषि (अवतनुष्व) अवतारय

ज्यारहितानि कुरु, किञ्च (तोकाय) पुत्राय (तनयाय) पौत्राय (मृड) सुखय॥ ५०॥

भाषार्थ—रुद्र के संपूर्ण आयुध हमको परित्याग करें। पापियों की दण्ड देने की इच्छा वाली दुर्मति हमको सब प्रकार त्याग करे। हे अभिलषितफलप्रद! हविरूप धन से युक्त यजमानों के भय दूर करने को दृढधनुषों को ज्याहीन करो हमारे पुत्र-पौत्रादि को सुख दो॥ ५०॥

मिढुष्टम इत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्देवा ऋषयः। निच्यृदार्षी यवमध्यात्रिष्टुप्। रुद्रो देवता। पाठे वि०॥ ५१॥

भाष्यम् —(मिठुष्टम) सेक्तृतम (शिवतम) हे अत्यन्तं कल्याणकर्तः (नः) अस्माकम् (शिवः) शान्तः (सुमनाः) (हृष्टचित्तः भव) भवतु। (परमे) दूरस्थे उन्नते वा (वृक्षे) वटादौ (आयुधम्) त्रिशूलादिकं (निधाय) संस्थाप्य (कृत्तिं वसानः) चर्म परिदधानः सन् (आचर) आगच्छ तपश्चरेति वा। (पिनाकम्) धनुः (बिभ्रत्) (आगहि) आगच्छ ज्याशरहीनं धनुर्मात्रं शोभार्थं धारयन्नागच्छेत्यर्थः॥ ५१॥

भाषार्थ—हे अतिशय फलप्रदाता! हे अत्यन्त कल्याणकर्त्ता! हमको शान्त सुन्दर मन वाले हो दूरस्थित वा ऊँचे वृक्षपर अपना त्रिशूल रखकर मृगचर्म धारण किये आगमन कीजिये व तप कीजिये, पिनाक धनुष को धारण किये आगमन करो अर्थात् ज्या और बाणों से हीन धनुष शोभा के निमित्त धारण किये आइये॥ ५१॥

भावार्थ—भाव यह कि, संसार रूपी वृक्षों पर पापों के संहार की शक्ति को फैलाकर कार्यकारिणी शक्ति से हमारी रक्षा करो। तात्पर्य बड़ा गूढ है, इसमें सांसारियों के निमित्त शस्त्र है, मुमुक्षओं के निमित्त अभय है॥ ५१॥

विकिरिद्रेत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिः। आर्ष्यनुष्टुप् छन्द। रुद्रो देवता। पाठे वि०॥ ५२॥

भाष्यम् —(विकिरिद्र) विविधघाताद्युपद्रवं द्रावयतीति विकिरिद्रः तत्सम्बुद्धौ हे विकिरिद्र, (विलोहित) विगतकलुषभाव (भगवः) हे भगवन् (ते नमः अस्तु)। (सा ते सहस्रं हेतयः) असंख्यान्यायुधानि सन्ति (ताः) तानि (अस्मत् अन्यम्) अस्मव्द्यतिरिक्तम् (निवपन्तु ध्नन्तु)॥ ५२॥

भाषार्थ —हे अनेक उपद्रव नाश करने वाले! हे शुद्धस्वरूप भगवन्! आपके निमित्त नमस्कार हो तुम्हारे जो सहस्रों शस्त्र हैं वे हमको छोड़कर और कहीं उपद्रवियों पर पड़ें (विलोहित का अर्थ अत्यन्त रक्तवर्ण संहारमूर्ति भी है)॥ ५२॥

सहस्राणीत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिः। निच्यृदार्ष्यनुष्टुप् छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे वि०॥ ५३॥

भाष्यम् —(भगवः) हे षड्गुणैश्वर्यसंपन्न (तव बाह्वोः) हस्तयोः (सहस्राणि) असंख्यतानि (सहस्रशः) (हेतयः) आयुधानि सन्ति। (ईशानः) जगन्नाथस्त्वम् (तासाम्) हेतीनाम् (मुखाः) मुखानि (पराचीनाः) अस्मत्तः पराङ्मुखानि (कृधि) कुरु॥ ५३॥

भाषार्थ —हे भगवन्! षडैश्वर्यसंपन्न आपकी भुजाओं में बहुत प्रकार के सहस्रों खड्ग शूलादि आयुध हैं, जगत् के पति आप उन संहारकारी आयुधों के मुख हमसे पराङ्मुख कीजिये॥ ५३॥

भावार्थ—दृश्यादृश्य जितने बाहुयुगल हैं वह सब ही उनके हैं वा सब ही में उनकी सत्ता है। आशय यह कि पापों के द्वारा प्राणी दुःख पाते हैं आप उन पापों को नीचे मुख कीजिये और हमको सुखी कीजिये॥ ५३॥

असंख्याता इत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिः। विराडार्ष्यनुष्टुप्छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे वि०॥ ५४॥

भाष्यम् —(असंख्याता सहस्राणि) असंख्यतानि सहस्राणि अमितानि (ये) रुद्राः (भूम्याम्) भूमेः (अधि) उपरि स्थिताः (तेषाम्) रुद्राणाम् (धन्वानि) धनूंषि (सहस्रयोजने) सहस्राणि योजनानि यस्मिंस्तादृशे पथि सहस्रयोजनव्यवहिते मार्गे (अवतन्मसि) अवतारयामः॥ ५४॥

भाषार्थ—जो असंख्य सहस्रों रुद्र भूमि के ऊपर स्थित हैं, उनके धनुष सहस्र योजन दूर डालकर हम अभय होते हैं॥ ५४॥

अस्मिन्नित्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषि। भुरिगार्ष्युष्णिक् छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे वि०॥ ५५॥

भाष्यम् —(अन्तरिक्षस्था रुद्रा उच्यन्ते। (अस्मिन्) (महति) विशाले (अर्णवे) अर्णांसि जलानि विद्यन्ते यत्र तदर्णवम् मेघाधारत्वात् (अन्तरिक्षे)

(अधि) अधिश्रित्य ये (भवाः) रुद्राः सन्ति तेषां धन्वान्यवतन्मसीति पूर्ववत्॥ ५५॥

भाषार्थ—इस अंतरिक्ष में और बड़े सागर अर्थात् आकाश गंगा नाम से प्रसिद्ध नक्षत्रपुंज धाराप्रवाह में आश्रय करके जो रुद्र स्थित हैं उनके संपूर्ण धनुष मंत्रबल से सहस्त्रयोजन दूर ज्यारहित कर डालते हैं॥ ५५॥

गूढाशय—इस बड़े संसाररूपी समुद्र में उत्पन्न हुए जीवों के हृदय अन्तर में जो ज्ञानयुक्त परमेश्वर स्थित है उस असंख्यात फलदाता का विचार करो॥ ५५॥

नीलग्रीवा इत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषि। निच्यृदार्ष्यनुष्टुप्छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे वि०॥ ५६॥

भाष्यम् —द्युलोकस्थिता रुद्रा उच्यन्ते। (नीलग्रीवाः) कृष्णकण्ठाः (शितिकण्ठाः) श्वेतकण्ठाश्च (रुद्राः) ये रुद्राः (दिवम्) द्युलोकम् (उपश्रिताः) उपरिस्थिताः तेषामित्यादि पूर्ववत्॥ ५६॥

भाषार्थ—द्युलोक स्थित रुद्रों का वर्णन करते हैं। नीलग्रीवा वाले श्वेतकंठ वाले विष भक्षण से कंठ का श्वेत और नील भाग वाले अथवा निर्मल आकाश और मेघ सहित आकाश में चन्द्रतारादि में वर्तमान जो रुद्र द्युलोक में आश्रय किये हुए हैं उनके सब धनुष सहस्त्र योजन दूर मंत्रबल से निक्षेप करते हैं॥ ५६॥

नीलग्रीवा इत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषि। निच्यृदार्ष्यनुष्टुप् छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे वि०॥ ५७॥

भाष्यम् — पातालस्था रुद्रा उच्यन्ते। (नीलग्रीवाः) कृष्णग्रीवाः (शितिकण्ठाः) श्वेतग्रीवाः ये (शर्वाः) रुद्राः (अधः) अधोभागे (क्षमाचराः) पाताले वर्तमानाः तेषामित्यादि पूर्ववत्॥ ५७॥

भाषार्थ—पाताल स्थित रुद्रों का वर्णन। नीली गर्दनवाले, श्वेतकंठवाले जो शर्वनामक रुद्र नीचे पाताल में स्थित हैं, उनके सब धनुष सहस्त्रयोजन दूर मंत्रबल से निक्षेप करते हैं॥ ५७॥

ये वृक्षेष्वित्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिः। निच्यृदार्ष्यनुष्टुप् छन्दः। रुद्रो देवता पाठे विनियोग॥ ५८॥

भाष्यम् — ये (शष्पिञ्जराः) शष्पा इव पिञ्जरवर्णाः हरितवर्णाः (नीलग्रीवाः) नीलकण्ठाः (विलोहिताः) विशेषेण रक्तवर्णाः विगतकळुषभावा वा (वृक्षेषु) अश्वत्थादिषु स्थिताः तेषामित्यादि पूर्ववत्। लोहितशब्देन धातव उच्यन्ते तेन त्वग्लोहितमज्जादियुक्ता इत्यर्थः॥ ५८॥

भाषार्थ— जो हरितवर्ण नीलग्रीवा वाले विशेष रक्तवर्ण अथवा तेजोमय शरीर वाले वृक्षों में अर्थात् पत्ते शाखा कोंपल आदि में वर्तमान हैं, उनके संपूर्ण धनुष सहस्त्रयोजन दूर मंत्र बलसे निक्षेप करते हैं॥ ५८॥

ये भूतानामित्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिः। आर्ष्यनुष्टुप् छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे वि०॥ ५९॥

भाष्यम् — (ये) रुद्राः (भूतानाम्) देवविशेषाणाम् (अधिपतयः) अन्तर्हितशरीराः सन्तो मनुष्योपद्रवकरा भूतास्तेषां पालकाः (विशिखासः) शिखारहिता मुण्डा इत्यर्थः (कपर्दिनः) अन्ये जटाजूटयुताः तेषामित्यादि पूर्ववत्॥ ५९॥

भाषार्थ— जो रुद्र देव-विशेषों के अधिपति हैं अर्थात् अन्तर्हित शरीर होकर मनुष्यों में उपद्रव करने वाले भूतों का पालक हैं, तथा शिखाहीन मुण्डित शिर और जो जटाजूट से युक्त हैं, उनके संपूर्ण धनुष सहस्त्रयोजन दूर प्रक्षेप करते हैं॥ ४९॥

ये पथामित्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिः। आर्ष्यनुष्टुप् छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे वि०॥ ६०॥

भाष्यम् — (ये) ये रुद्रा (पथाम्) लौकिकवैदिकमार्गाणाम् (पथिरक्षयः) अधिपतयः तथा पथिरक्षसः (ऐलबृदा) इलानामन्नानां समूहः ऐलं ये बिभ्रति ते। यद्वा-इला पृथिवी तस्या इदमैलमन्नं तद्बिभ्रतः अन्नैर्जन्तूनां पोषका इत्यर्थः। (आयुर्युधः) यावज्जीवयुद्धकराः। आयुरेव जीवनं पाणौ कृत्वा युध्यन्ति तेषामित्यादि पूर्ववत्॥ ६०॥

भावार्थ —जो लौकिक वैदिक मार्गों के अधिपति, मार्गों के पालक, राज्य शासनकारी वा अन्न के धारक अथवा अन्न से प्राणियों को पुष्ट करने वाले जीवनपर्यन्त युद्ध करने में रत हैं उनके सब धनुष सहस्त्रयोजन दूर निक्षेप करते हैं॥ ६०॥

ये तीर्थानीत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिः। निच्यृदार्ष्यनुष्टुप् छन्दः। रुद्रो देवता॥ पाठे वि०॥ ६१॥

भाष्यम् —(ये) रुद्राः (सृकाहस्ताः) सृकेत्यायुधनाम सृका आयुधानि हस्ते येषां ते (निषङ्गिणः) निषङ्गा खड्गा हस्ते येषां ते (तीर्थानि) प्रयागकाश्यादीनि (प्रचरन्ति) गच्छन्ति तेषामित्यादि पूर्ववत्॥ ६१॥

भाषार्थ—जो रुद्र आयुध विशेष (ढाल) हाथ में लिये तथा खड्ग धारण किये, काशीप्रयागादि तीर्थों में फिरते हैं वा जो तीर्थों का तथा धर्म का प्रचार करते हैं, उनके संपूर्ण धनुष सहस्र योजन दूर निक्षेप करते हैं॥ ६१॥

येऽन्नेष्वित्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्देवा ऋषयः। विराडार्ष्यनुष्टुप् छन्द। रुद्रो देवता। पाठे वि०॥ ६२॥

भाष्यम् —(ये) रुद्राः (अन्नेषु भुज्यमानेषु (जनान्) प्राणिजातान् (विविद्ध्यन्ति) विशेषण ताडयन्ति धातुवैषम्यं कृत्वा रोगानुपादयन्तीत्यर्थः। तथा (पात्रेषु) पात्रस्थक्षीरोदकादिषु स्थिताः सन्तः (पिबतः) क्षीरादिपानं कुर्वतो जनान् विविद्ध्यन्ति तेषामित्यादि पूर्ववत्॥ ६२॥

भाषार्थ —जो रुद्र अन्नभोजन करने में प्राणियों को विशेष करके ताडन करते हैं अर्थात् धातु की विषमता कर रोगों को उत्पन्न करते हैं, पात्रों में जल दूध आदि पीते हुए जनों के कुत्सित जल आदि से रोग प्रसिद्ध करते हैं, उनके संपूर्ण धनुषों का सहस्रयोजन दूर निक्षेप करते हैं॥ ६२॥

य इत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्देवता ऋषयः। निच्यृदार्ष्यनुष्टुप् छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे वि०॥ ६३॥

भाष्यम् —(ये) रुद्राः (एतावन्तः च) एतत्प्रमाणं येषां ते (च भूयांसः) अतिशयेन बहवो भूयांसः (दिशः) दश दिशः (वितस्थिरे) आश्रिताः दश दिशो व्याप्य स्थितास्तेषामित्यादि पूर्ववत्॥ ६३॥

भाषार्थ—और जो रुद्र इन दशों दिशाओं में अथवा इतने और इन कहे हुओं से भी अधिक संपूर्ण दिशाओं में आश्रित हैं अर्थात् जिनके दर्शन हमको नहीं होते और जिनका दर्शन इन मंत्रों मे हुआ उनके संपूर्ण धनुष सहस्रयोजन की दूरी पर मंत्रबल से निक्षेप करते हैं॥ ६३॥

नमोऽ स्त्वित्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिः। निच्यृद्धृतिश्छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे वि० ॥ ६४॥

भाष्यम् —त्रिलोकस्था रुद्रा उच्यन्ते —(ये रुद्राः) (दिवि) द्युलोके वर्तन्ते (येषाम्) रुद्राणाम् (वर्षम्) वृष्टिरेव (इषवः) शराः आयुधस्थानीया वृष्टिः (तेभ्यः रुद्रेभ्यः नमोऽस्तु) नमस्कारोऽस्तु। (तेभ्यः) रुद्रेभ्यः (दश प्राचीः) दशसंख्याकाः प्राचीः प्रागभिमुखाः अङ्गुलीः कुर्व इति शेषः। (दश दक्षिणाः) दक्षिणाभिमुखाः दशाङ्गुलीः कुर्वे। (दशप्रतीचीः) प्रत्यङ्मुखाः दशाङ्गुलीः कुर्वे। (दशोदीचीः) उदीचीः उदङ्मुखाः दशाङ्गुलीः कुर्वे। (दशोर्ध्वाः) उपरि दशाङ्गुलीः कुर्वे, अञ्जलिं बद्ध्वा सर्वदिक्षु नमस्करोमीत्यर्थः। तेभ्यो (नमोऽस्तु)। (ते) रुद्राः (नः) अस्मान् (अवन्तु) रक्षन्तु। (ते) (नः) अस्मान् (मृडयन्तु) सुखयन्तु। (ते) रुद्राः (यम्) पुरुषम् (द्विष्मः) द्वेषं कुर्मः (च यः) पुरुषः नः अस्मान् (द्वेष्टि) द्वेषं करोति (तम्) पुरुषम् (एषाम्) पूर्वोक्तानां रुद्राणाम् (जम्भे) दंष्ट्राकराले मुखे (दध्मः) स्थापयामः। अस्मद्विषयस्य द्वेष्यं च नरं पूर्वोक्ता रुद्रा भक्षयन्तु अस्माञ्चावन्तु चेत्यर्थः ॥ ६४॥

भाषार्थ—जो रुद्र द्युलोक में विद्यमान हैं, जिन रुद्रों के वृष्टि ही बाण हैं उन रुद्रों के निमित्त नमस्कार है, उन रुद्रों के निमित्त पूर्व दिशा में दश अंगुली हो करके अर्थात् हाथ जोड़ कर, दक्षिणा दिशा में दश अंगुली होकर, पश्चिम में दश अंगुली होकर उत्तर में दश अंगुली होकर ऊर्ध्व में दश अंगुली अर्थात् कर जोड़कर प्रार्थना करता हूँ, उनके निमित्त नमस्कार हो, वे रुद्र हमारी रक्षा करें, वे हमको सुखी करें वे रुद्र जिससे हम द्वेष करते हैं और जो हमसे द्वेष करता है उनको इन रुद्रों के गढ़ में स्थापन करते हैं ॥ ६४॥

भावार्थ—जो देवता द्युलोक में हैं जिनके बाण वृष्टि हैं अर्थात् वृष्टि द्वारा सृजन, पालन और अतिवृष्टि से संहार किया जाता है, सब दिशाओं में उनको हाथ जोड़ कर प्रणाम करते हैं ॥ ६४॥

नमोऽस्त्वित्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिः। धृतिश्छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे वि० ॥ ६५॥

भाष्यम् —(रुद्रेभ्यः नमोऽस्तु) नमस्कारोऽस्तु। (ये अन्तरिक्षे) वर्तन्ते (येषाम्) रुद्राणाम् (वातः) वायुः (इषवः) आयुधस्थानीयः कुवातेनान्नं

विनाश्य वातरोगं वोत्पाद्य जनान् घ्नन्ति तेभ्योऽन्तरिक्षस्थेभ्यो रुद्रेभ्यो नमः। शेषं पूर्ववत्॥ ६५॥

भाषार्थ —उन रुद्रों के निमित्त नमस्कार हो, जो रुद्र अन्तरिक्ष में विद्यमान हैं जिनके बाण पवन हैं अर्थात् पवनद्वारा जो सृजन, पालन और आंधी आदि से संहार करते हैं उनके निमित्त नमस्कार है, शेष पूर्ववत्॥ ६५॥

नमोऽस्त्वित्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्वा देवता ऋषयः। धृतिश्छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे वि०॥ ६६॥

भाष्यम् —(रुद्रेभ्यः नमः अस्तु)। (ये) रुद्राः (पृथिव्याम्) भूम्याम् वर्तन्ते (येषाम् इषवः) बाणाः (अन्नम्) अदनीयं वस्तु आयुधम् अयथान्नं भक्षणे चौर्ये वा प्रवर्त्य रोगमुत्पाद्य जनान् ध्वन्ति तेभ्यो नमः। तेऽस्मानवन्तु शेषम्पूर्ववत्॥ ६६॥

भाषार्थ—उन रुद्रों के निमित्त नमस्कार है, जो रुद्र पृथिवी में स्थित हैं, जिनके बाण अन्न हैं जो अन्न द्वारा ही सृजन, पालन और मिथ्याहार विहार से रोग उत्पन्न कर प्राणियों का संहार करते हैं, उनके निमित्त नमस्कार है, शेष पूर्व के समान॥ ६६॥

भावार्थ—जिस समय मनुष्य को रुद्र का सर्वभाव विदित हो जाय और उसकी दृष्टि में यह भाव समा जाय कि, यह सब कुछ रुद्र द्वारा हो रहा है वही शंकर रुद्र नील लोहित कपर्दी आदि अनेक नामों को कार्यानुसार धारण कर रहा है उसके सिवाय कुछ नहीं है तब वह अद्वैतनिष्ठ होता है और रुद्र की महिमा को प्राप्त हो जीवन्मुक्त होकर विचरता है। इस प्रकार इस अध्याय में रुद्रदेवता का संपूर्ण जगत् में अधिकार वर्णन किया गया है अर्थात् संपूर्ण जगत् में वह परमात्मा रुद्र रूप से व्याप्त है कोई स्थान उससे भिन्न नहीं है, इसी कारण स्थावर जङ्गम सब ही को प्रणाम किया गया है। इष्ट-अनिष्ट सब इसी के द्वारा होता है, त्रिलोकी की उत्पत्ति, पालन, प्रलय सब रुद्र से ही होती है, (एको रुद्रो न द्वितीयः) इस श्रुति के अनुसार एक अद्वैत-रुद्र का प्रतिपादन होता है, वेदानुसार उनकी उपासना करनी चाहिये, रुद्र की उपासना से सब उपद्रव दूर होकर चारों पदार्थों की प्राप्ति होती है। इसका पाठ करने से सब मनोरथ सिद्ध होते हैं॥ ६६॥

वयꣳसोम इत्यस्य बन्धुर्ऋषिः। गायत्रीछन्दः। सोमो देवता। पाठे विनियोगः॥ ६७॥

भाष्यम् —(सोम) हे सोमदेव (वयं) बन्ध्वादयः (तव व्रते) त्वदीयकर्मणि वर्तमानाः (तनूषु) त्वदीयेष्वङ्गेषु जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यादिषु (मनः बिभ्रतः) धारयन्तः (प्रजावन्तः) पुत्रपौत्रादिभिर्युक्ताः सन्तः (सचेमहि) सङ्गच्छेमहि। (यजु० ३।५६)॥ ६७॥

भाषार्थ— हे सोम बन्धुसहित हम आपके व्रतनिष्ठ रहते हुए आपके विविध स्वरूपों में मन लगाते हुए आपकी कृपा से पुत्रपौत्रादि प्रजा से युक्त रहते हैं॥ ६७॥

एष त इत्यस्य बन्धुर्ऋषिः। प्राजापत्या बृहती छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे विनियोगः॥ ६८॥

भाष्यम् —(रुद्र) हे रुद्र (एषः) अस्माभिरुपकीर्यमाणोऽतिरिक्तः पुरोडाशः (ते) तव (स्वस्रा) भगिन्या (अम्बिकया) अम्बिकानाम्न्या (सह) (भागः) भजनीयः स्वीकर्तुं योग्यः, "अम्बिका ह वै नामास्य स्वसा" इत्यादिश्रुतेः, (तम्) पुरोडाशम् (जुषस्व) सेवस्व (स्वाहा) सुहुतमस्तु। (रुद्र) हे रुद्र (एषः) अस्माभि- रुपकीर्यमाणोऽतिरिक्तः पुरोडाशः (ते) तव (भागः) अंशः तथा (ते) तव (आखुः) मूषकः (पशुः) पशुत्वेन समर्पितः। आखुदानेन तुष्टो रुद्रस्तयाऽम्बिकया यजमानपशून्न मारयतीत्यर्थः। (यजु० ३। ५७) ॥ ६८॥

भाषार्थ—विरोधियों को, पापियों को, अधर्मियों को, अन्यायियों को उनके कर्म का फल देकर रुलाने वाले हे रुद्रदेवता! तुम्हारी भगिनी अम्बिका के साथ यह हमसे दिया हुआ पुरोडाश स्वीकार करने के योग्य है। इस पुरोडाश को सेवन करो। हे रुद्र! हमारे द्वारा अवकीर्ण (बिखेरा) हुआ यह पुरोडाश तुम्हारे द्वारा सेवनीय है। रुद्रका बिल-मध्य में रहने वाला मूसा (चूहा) रक्षणीय पशु है, इस कारण शेष भाग इसको भी देते हैं॥ ६८॥

विशेष— अम्बिका-नाम की रुद्र की बहन है, उसके साथ रुद्रदेव विरोधियों के मारने की इच्छा करते हैं, सो इस क्रूर देवता अम्बिका के साथ उसे

मारते हैं, वह अंबिका ही जरादिक उत्पन्न कर उस विरोधी को मारती है, रुद्र तथा अम्बिका की उग्रता इस हवि से शान्त होती है॥ ६८॥

अव रुद्रमित्यस्य बन्धुर्ऋषि। विराट् पंक्तिश्छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे विनियोगः॥ ६९॥

भाष्यम् —(रुद्रम् अव) असौ रुद्र इति मनसा तम् अवगत्य (अदीमहि त्वदनुग्रहादन्नं भक्षयेम। तथा (त्र्यम्बकम्) त्रीणि अम्बकानि नेत्राणि यस्य तादृशं (देवम्) (अव) अवगत्यादीमहीत्यनुवर्तते। यद्वाऽन्यदेवताभ्यः पृथक्कृत्य रुद्रमहीमहि अद्यामो भोजयामः। (यथा) येन प्रकारेण (नः) अस्मान् (वस्यसः) वस्तृतरान् वसनशीलान् (करत्) असौ कुर्यात् (यथा) येन प्रकारेण (नः) अस्मान् (श्रेयसः करत्) ज्ञातिषु प्रशस्ततरान् कुर्यात्। (यथा) यथा च (नः) अस्मान् (व्यवसाययात्) सर्वेषु कार्येषु निश्चययुक्तान् कुर्यात् तथैनं जपाम इत्यर्थः। (यजु० ३।५८)॥ ६९॥

भाषार्थ— पापियों को रुलाने वाले तीन नेत्र वा भूलोक, अन्तरिक्ष लोक, द्युलोकरूप वा गमनशील वा जिनके नेत्र से तीन लोक प्रकाशित होते हैं वा जिनके नेत्र प्रकाश से तीन लोक आकृष्ट होते हैं अथवा तीन वेद, तीन काल, आधिदैविक आध्यात्मिक, आधिभौतिक ही जिनके नेत्र हैं ऐसे सर्गादि से क्रीड़ा करने वाले शत्रुजेता प्राणियों में आत्मरूप से वर्तमान द्युतिमान् स्तोत्रों से स्तुति किये हुए रुद्रदेव की और देवताओं से पृथक् कर वा उत्कृष्ट जान कर सब दुख नाश करते हैं वा उनके अनुग्रह से अन्न भक्षण करते हैं वा त्रिनेत्र जानकर उनको भाग देते हैं जिस प्रकार हमको वह उत्तम प्रकार से निवास करने वाले करें, जिस प्रकार हमको ज्ञातियों में श्रेष्ठतर करें, जिस प्रकार हमको सब कार्यों में निश्चययुक्त करें, इस प्रकार इनका जप करते हैं (आशीर्वाद) है॥ ६९॥

तत्त्वविचार—जिनकी अम्बिका भगिनी है वह त्र्यंबक होते हैं, तीन लोक में गमन होने से अम्बिका विद्युदग्नि-विशेष रुद्रदेवता की भगिनीस्थानीय है॥ ६९॥

भाषार्थ— तीन कालों में एकरसरूप परमात्मा का भजन करना सबको उचित है वह रुद्ररूप से प्रार्थनीय है धनसंपत्ति वही देता है, तेज की वृद्धि वही करता है॥ ६९॥

भेषजमसीत्यस्य बन्धुर्ऋषिः। स्वराड्गायत्री छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे विनियोगः॥ ७०॥

भाष्यम् — हे रुद्र त्वम् (भेषजम्) औषधवत्सर्वोपद्रवनिवारकः (असि) सर्वप्राणिनां हितकारी भवसि। अतः प्रार्थयामि-अस्मदीयेभ्यः (गवे अश्वाय पुरुषाय भेषजम्) सर्वव्याधिनिवारकमौषधं देहि। (मेषाय मेष्यै सुखम्) क्षेमं देहीति शेषः। सुहितं खेभ्यः प्राणेभ्यः इति सुखम्। अनेन मन्त्रेण गृहपशूनां क्षेमप्राप्तिर्भवति (यजु० ३।५९)॥ ७०॥

भाषार्थ—हे रुद्र! आप औषधवत् संपूर्ण उपद्रवों के निवारण करने वाले हो। इस कारण हमारे गौ, घोड़े, पुत्र, पौत्र, भ्राता और परिजनों के निमित्त सब रोग दूर करने को औषध दो वा औषधरूप प्रकाश करो, तथा मेष, मेषी आदि पशुओं के उपद्रव-रहित जीवन के निमित्त सुखदायक अपना भेषज स्वरूप प्रकाश करो (इस मंत्र से घर के पशुओं की क्षेमप्राप्ति होती है)॥ ७०॥

त्र्यम्बकमित्यस्य वशिष्ठ ऋषिः। वाग्ब्राह्मी त्रिष्टुप् छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे विनियोगः॥ ७१॥

भाष्यम् —(सुगन्धिम्) दिव्यगंधोपेतं मर्त्यधर्महीनम् (पुष्टिवर्द्धनम्) धनधान्यादि वर्द्धयितारम् (त्र्यम्बकम्) नेत्रत्रयोपेतं शिवम् (यजामहे) पूजयामः। ततो रुद्रप्रसादात् (मृत्योः) अपमृत्योः संसारमृत्योश्च (मुक्षीय) मुक्तो भूयासम् (अमृतात्) स्वर्गरूपान्मुक्तिरूपाच्च (मा) मुक्तो भूयासम्। अभ्युदयनिःश्रेयसरूपात् फलद्वयान्मुक्तिः मा भूदित्यर्थः। मृत्योर्मोचने दृष्टान्तः- (इव) यथा (उर्वारुकम्) कर्कन्ध्वादेः फलमत्यन्तपक्वं सत् (बन्धनात्) वृन्तात् स्वयमेव मुच्यते तद्वत् त्र्यम्बकप्रसादेन मुक्तो भूयासम्। यजमान-सम्बन्धिन्यः कुमार्योऽपि त्र्यम्बकमन्त्रेणाग्निं त्रिः परियन्ति। (पतिवेदनम्) पतिं वेदयतीति तं भर्तुर्लम्भयितारं (सुगन्धिम्) दिव्यगन्धयुक्तं (त्र्यम्बकम्) देवं शिवम् (यजामहे) पूजयामः। (इतः) मातृपितृभ्रातृवर्गान् (मुक्षीय) मुक्ता भूयासम्। (अमुतः) विवाहादूर्ध्वं भविष्यतः पत्युः (मा) मुक्ता भूयासम्। जनकस्य गोत्रं गृहं च परित्यज्य पत्युर्गोत्रे गृहे च सर्वदा त्र्यम्बकप्रसादात् वसामीत्यर्थः। सा यदित इत्याह ज्ञातिभ्यस्तदाह मामुत इति पतिभ्यस्तदाहेति श० ब्रा० २। ६। २।१४

श्रुतेरितोऽमुतःशब्दाभ्यां पितृपतिवर्गौ ग्राह्यौ (यजु० ३।६०) ''समुद्दिश्य महादेवं त्र्यम्बकं त्र्यम्बकेत्यृचा। एतत्पर्वशतं कृत्वा जीवेद्वर्षशतं सुखी॥ १॥ त्रिरात्रं नियतोपोष्य श्रपयेत्पायसं चरुम्। तेनाहुतिशतं पूर्णं जुहुयाच्छंसितव्रतः॥ २॥''॥ ७१॥

भाषार्थ — दिव्यगंध से युक्त, मर्त्यधर्महीन उभयलोकों के फलदाता धनधान्यादि से पुष्टि बढ़ानेवाले पूर्वोक्त नेत्रसंपन्न शिवशंकर का पूजन करते हैं, वह रुद्र हम को मृत्यु, अपमृत्यु वा संसार के मरण से मुक्त करे वा छुड़ावे, जिस प्रकार अपने बंधन से पके हुए कर्कटीफल टूटकर भूपतित होता है इस प्रकार शिवकी कृपा से जन्म मरण बंधन से चिरमुक्त हो जाऊं और स्वर्गरूप मुक्ति से न छूटूं। अभ्युदयनिःश्रेयसरूप दोनों फलों से भ्रष्ट न होऊं, पति के प्राप्त कराने वाले व संपूर्णगुणसंपन्न सुन्दर पति के विधान करने वाले दिव्ययश सौरभपूर्ण धर्माधर्म के ज्ञाता त्र्यंबकदेव शिव को पूजन करती हूँ, जैसे उर्वारुकफल बंधन से छूट जाता है इस प्रकार इस माता-पिता-भ्रातृवर्ग से व इनके गोत्र से छूटकर विवाह उपरान्त पति से मत छुड़ाओ। आशय यह कि पिता के गोत्र और घर को छोड़कर पति के गोत्र और घर में शिवजी के प्रसाद से सदा निवास करें॥ ७१॥

विशेष— पहला मंत्र ही महामृत्युंजय कहलाता है। इसको विधिपूर्वक शिवपूजन करके जप करने से अपमृत्यु निवारण होती है इसमें संदेह नहीं, और इस मंत्र से यह भी विदित होता है कि मुक्त होकर फिर संसार में नहीं आता। इस मंत्र से तीन दिन तक व्रत पूर्वक चरुकी सौ आहुति दे तो १०० वर्ष जिये॥ ७१॥

एतत्त इत्यस्य वशिष्ठ ऋषिः। भुरिगास्तारपंक्तिश्छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे विनियोग॥ ७२॥

भाष्यम् —(रुद्र) हे रुद्र (एतत् ते) तव (अवसम्) हविःशेषाख्यं भोज्यम् ''अवसशब्देन देशान्तरं गच्छतो मार्गमध्ये तटाकादिसमीपे भोक्तव्य ओदनविशेष उच्यते''— तेन सहितस्त्वम् (मूजवतः) पर्वतात् ''मूजवान्नाम कश्चित्पर्वतो रुद्रस्य वासस्थानम्। (परः) परभागवर्ती सन् (अतीहि) अतिक्रम्य गच्छ। कीदृशस्त्वम् (अवततधन्वा) अवरोपितधनुष्कः तथा (पिनाकावसः) पिनाकाख्यं त्वदीयं धनुः सर्वत आच्छादयतीति

पिनाकवासः। यथा धनुर्दृष्ट्वा प्राणिनो न बिभ्यति तथा त्वदीयं धनुर्वस्त्रादिना प्रच्छांद्य गच्छेत्यर्थः। हे रुद्र त्वम् (कृत्तिवासाः) चर्माम्बरः (नः) अस्मान् (अहिंसन्) हिंसामकुर्वन् (शिवः) अस्मदीयपूजया सन्तुष्टः कोपरहितो भूत्वा (अतीहि) पर्वतमतिक्रम्य गच्छ (यजु० ३।६१)॥ ७२॥

भाषार्थ—हे उक्तगुणसंपन्न महादेव! यह आपका हविः-शेषाख्य भोजन है। (देशान्तर को जाते हुए मार्ग में जो तडागादि के समीप बैठकर ओदन आदि भक्ष्य खाया जाता है, उसे अवस कहते हैं।) इसके साथ तुम हमारे विरोधियों के निवारण होने से ज्या उतारे हुए धनुष को ले अपने पिनाक धनुष को वस्त्र में छिपाये मूजवान् नाम पर्वत पर भागवर्ती होकर गमन करो अर्थात् इस अपने भाग को लेकर दीर्घ गन्तव्यपथ अतिक्रमण कर अपने निवासभूत मूजवान् नाम पर्वत के शिखर पर उपस्थित हो। तुम्हारा निरन्तर विस्तृत धनुष है तुम अपने तेज से स्वर्गपर्यन्त आच्छन्न करके गमन करने में समर्थ हो तुमको किसी प्रकार की सहायता की आवश्यकता नहीं हे रुद्र! तुम चर्म्माम्बर धारण किये हो वा संपूर्ण प्राणियों के अन्तर में रहने से चर्म्माम्बरधारी हो हमारी हिंसा न करके अर्थात् हमारी सब शारीरिक विपत् को अतिक्रम कर के रक्षा के अभिप्राय से हमारी पूजा से संतुष्ट वा कोप रहित होने के कारण कल्याण स्वरूप होकर अपने निवास में निवास करो व पर्वत को अतिक्रम कर जाओ॥ ७२॥

विशेष— शिव के धनुष का नाम पिनाक है गजचर्म धारण करने से कृत्तिवास है पौराणिक पदार्थ विद्यावाले कहते हैं पर्वत के ऊपर मेघों के उदय होने से सदा इन्द्रधनुष देखा जाता है। इस कारण वहाँ ही रुद्र का निवास स्थान है। विद्युत् में संपूर्ण शरीर के चर्म्मानुवर्ती है। इस कारण रुद्र के विद्युत् में होने से कृत्तिवास और महादेव नाम है॥ ७२॥

त्र्यायुषमित्यस्य नारायण ऋषिः। उष्णिक् छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे विनियोगः॥ ७३॥

भाष्यम्— (जगदग्नेः) मुनेः (त्र्यायुषम्) त्रयाणां बाल्ययौवनस्थावराणामायुषां समाहारस्त्र्यायुषम् तथा (कश्यपस्य) एतन्नामकस्य प्रजापतेः सम्बन्धि यत् (त्र्यायुषम्) तथा (देवेषु) इन्द्रादिषु (यत्) (त्र्यायुषम्) अस्ति (तत्) सर्वम् (त्र्यायुषम् नः) अस्माकं

यजमानानाम् (अस्तु) भूयात्। जमदग्न्यादीनां बाल्यादिषु यादृशं चरितं तादृशन्नो भूयादित्यर्थः। (यजु० ३। ६२)॥ ७३॥

भाषार्थ—हे रुद्र! जमदग्नि ऋषि की जो बाल्य-यौवन-वृद्धावस्था है तथा कश्यप प्रजापति की जैसी तीन अवस्थाएं हैं जैसे देवगण की अवस्था के चरित्र हैं वह सब त्र्यायुष मुझ यजमान को प्राप्त हों अर्थात् इन पूर्वोक्त महात्माओं के से चरित्र हमारे हो जायें॥ ७३॥

शिवो नामासीत्यस्य नारायण ऋषिः। भुरिग्जगती छन्दः। रूद्रो देवता पाठे विनियोगः॥ ७४॥

भाष्यम्— हे क्षुर त्वम् (नाम) नाम्ना (शिवः) शान्तः (असि)। (स्वधितिः) वज्रम् (ते) तव, (पिता)। (ते) तुभ्यम् (नमः अस्तु) भवतु। (मा) माम् (मा हिꣳसीः) मा नाशय। हे यजमान त्वाम् (निवर्तयामि) मुण्डयामि। किमर्थम्-(आयुषे) जीवनाय (अन्नाद्याय) अन्नभक्षणाय (प्रजननाय) सन्तानाय (रायस्पोषाय) रायो धनं तस्य पोषाय पुष्ट्यै (सुप्रजास्त्वाय) शोभनापत्यतायै (सुवीर्याय) शोभनसामर्थ्याय (यजु० ३।६३)॥ ७४॥

भाषार्थ—सर्वव्यापी होने से क्षुर में व्याप्त क्षुराधिष्ठित देव! तुम नाम से शिव शान्त-स्वभाव, कल्याणकारक हो। वज्र तुम्हारा पालक रक्षक है, तुम्हारे निमित्त नमस्कार है। मुझको मत आघात करना। हे यजमान! इस क्रिया के फल से जीवन के निमित्त अन्नादि भक्षण के निमित्त बहुत प्रजा बहुत धन पुष्टि उत्कृष्ट प्रजननसामर्थ्य प्रशंसनीय बल की प्राप्ति के निमित्त तेरा मुण्डन करता हूँ॥ ७४॥

नोट :—मन्त्र-संख्या ७५ से ९० तक के मन्त्र-भाष्य १-१६ के समान हैं।

मन्त्र-संख्या ९१-९२ का भाष्य ६८-६९ के समान है।

नमस्त इत्यस्य लोपामुद्रा ऋषिः। भुरिगार्षी बृहती छन्दः। अग्निर्देवता पाठे वि०॥ ९३॥

भाष्यम्— हे अग्ने (ते) तव (हरसे) हरति सर्वरसानिति हरस्तस्मै (शोचिषे) शोचनहेतवे तेजसे (नमः) नमोऽस्तु। (ते) तव (अर्चिषे) पदार्थप्रकाशकाय तेजसे (नमः) नमोऽस्तु। (ते) तव (हेतयः) ज्वालाः

(अस्मत्) अस्मत्सकाशात् (अन्यान्) अन्यानस्मद्विरोधिनः विरुद्धान् (तपन्तु) दहन्तु। एवं त्वम् (पावकः) शोधकः सन् (अस्मभ्यम् शिवः) कल्याणः (भव)। एतदर्थं च नमस्कृतोऽग्निरस्माकं विरुद्धान् दहत्वस्माकं कल्याणाय भवत्वित्यर्थः। (यजु० ३६।२०)॥ ९३॥

भाषार्थ—हे अग्ने! तुम्हारे सब रसों के आकर्षण करने वाले तेजस्वरूप ज्वाला के निमित्त नमस्कार है तुम्हारे पदार्थ-प्रकाशक तेज के निमित्त नमस्कार हो, आपकी ज्वाला हम से दूसरों को तपाए हमको शोधक कल्याण-कारक हो॥ ९३॥

नमस्त इत्यस्य दधीच ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। विद्युत्स्तनयित्नुरूपे देवते। पाठे वि०॥ ९४॥

भाष्यम् —(भगवन्) हे भगवन्! (विद्युते) विद्युद्रूपाय (स्तनयित्नवे) स्तनयित्नुः गर्जितं तद्रूपाय (ते नमः अस्तु। यतः) यतः कारणात् (स्वः) स्वर्गन्तुं त्वं (समीहसे) चेष्टसेऽतः (ते) तुभ्यम् (नमोऽस्तु) नतिरस्तु। (यजु० ३६।३१)॥ ९४॥

भाषार्थ— हे भगवन्! आपके विद्युत् रूप के निमित्त नमस्कार हो, गर्जनारूप आपके निमित्त नमस्कार है जिस कारण स्वर्गसुख देने की चेष्टा करते हो, इस कारण आपके निमित्त बारबार नमस्कार हो, अर्थात् आपके अनेक रूप हैं, आप सब प्रकार हमारे सुख के निमित्त यत्न करते हो आपको प्रणाम है।

मिढुष्टम इत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्देवा ऋषयः। त्रिष्टुप् छन्दः। रुद्रो देवता। पाठे वि०॥ ९५॥

भाष्यम् —इदानीं विश्वकर्मा मनुष्याणामुपदेशं ददाति। (न तं विदाथ) न जानीथ तं परं पुरुषम् (य इमा) इमानि भूतजातानि (जजान) जनयति। अतः (युष्माकम्) च तस्य च पुरुषस्य (अन्यत्) महत् (अन्तरं बभूव)। ये चैते (नीहारेण) अविद्यया (प्रावृताः) अवगुण्ठिताः ये (जल्प्याः) कुतार्किकाः ये च (असुतृपः) असून् प्राणान् तर्पयन्ति ते अलङ्करिष्णवः तैरपि सह महदेवान्तरं बभूव। ये तु (उक्थशासः) उक्थानां शंसितारः यज्ञशीलास्ते पुरुषं प्रति वि (चरन्ति)। ये तु पुरुषविदस्ते पुरुषमेव प्राप्नुवन्ति नीहारप्रावृतास्तु नरकयायिनः॥ ९५॥

भाषार्थ—विश्वकर्मा मनुष्यों को उपदेश देते हैं कि तुम उस पुरुष को नहीं जानते हो जो सभी प्राणियों तथा भौतिक पदार्थों को उत्पन्न करता है। उस परमपुरुष और तुम मनुष्यों के मध्य महान् अन्तर है। जो नर अविद्या से आवृत्त ज्ञान वाले कुतार्किक हैं उनमें तथा परम पुरुष में और अधिक अन्तर है। जो तपस्वी जन प्राणायामादि योग के द्वारा अपने प्राणतत्त्व को तृप्त करते हैं तथा जो याज्ञिक यज्ञों में वेद की ऋचाओं का उच्चारण करते हैं वे ही परम पुरुष को प्राप्त करते हैं अन्य अज्ञानी कुतार्किक तो नरक में जाते हैं॥ ९५ ॥

भाष्यम् —(विश्वकर्मा हि) आदित्यान्तरः पुरुषः, (अजनिष्ट) जातः, (देवः) दानादिगुणयुक्तः, (आत् इत्) निपातौ। अथानन्तरम्, (गन्धर्वः) गोर्वाचो पृथिव्या वा धारयिता अग्निः, गानाद्वा गन्धर्वोऽग्निः, (अभवद् द्वितीयः) ससहायः, (तृतीयः पिता) पालयिता, (जनिता) जनयिता, (ओषधीनाम्) पर्जन्यः अभवत्। स चोत्पन्नः सन् (अपाम्) आहुतिपरिणामभूतानाम् (गर्भं वि अदधात्) धारयति, (पुरुत्रा) स बहूनां त्राता भवति॥ ९६ ॥

भाषार्थ—विश्व के निर्माता आदित्य के अन्तर्वर्ती पुरुष उत्पन्न होते ही प्रकाश का दान करते हैं क्योंकि वे प्रकाश अथवा पृथिवी के धारयिता हैं। अग्नि उनका सहायक होता है। उस आदित्यपुरुष के तीसरे, सहायक एवं पालक रूप में पर्जन्य होता है जो ओषधियों का उत्पादक एवं रक्षक है। वही आहुतिों के परिणामभूत मेघों में जल-रूप गर्भ का आधान करने से सभी जीवधारियों का रक्षक है॥ ९६ ॥

नोट :—आगे मन्त्र संख्या ९७-१०० तक ५१-५४ मन्त्र संख्या में व्याख्यात है।

अथ स्वस्तिप्रार्थनामन्त्रभाष्यम्

स्वस्तीत्यस्य गौतम ऋषिः। विराट्स्थाना त्रिष्टुप् छन्दः। विश्वेदेवा देवताः। पाठे विनियोगः॥ १ ॥

भाष्यम् —(वृद्धश्रवाः) वृद्धं प्रभूतं श्रवः श्रवणं स्तोत्रं हविर्लक्षणमन्नं वा यस्य तादृशः (इन्द्रः नः) अस्माकं (स्वस्ति) अविनाशं (दधातु) विदधातु। (विश्ववेदाः) विश्वानि वेत्तीति विश्ववेदाः। यद्वा-विश्वानि सर्ववेदवेदांसि ज्ञानानि धनानि वा यस्य तादृशः (पूषा) पोषको देवः (नः)

अस्माकम् (स्वस्ति) विदधातु। (अरिष्टनेमिः), नेमिरित्यायुधनाम (निघं० २।२०), अरिष्टोऽहिंसितो नेमिर्यस्य वा यत्सम्बन्धिनो रथनेमिर्न हिंस्यते सोऽरिष्टनेमिरेवम्भूतः (तार्क्ष्यः) तृक्षस्य पुत्रः गरुत्मान् (नः) अस्माकम् (स्वस्ति) अविनाशं विदधातु तथा (बृहस्पतिः) देवानां पतिः पालयिता (नः) अस्माकम् (स्वस्ति) अविनाशं विदधातु (यजु० २५।१०)॥ १॥

भाषार्थ— वृद्धश्रवा (बड़ीकीर्तिवाले) इन्द्र हमारे निमित्त स्वस्ति विधान करें। सर्वज्ञ पूषा हमारे निमित्त स्वस्ति विधान करें। अरिष्टनेमि तार्क्ष्य (तार्क्ष्य-रथ अर्थात् जिसके रथ की नेमिकी अर्थात् चक्रधारी की गति कोई भी रोकने में समर्थ नहीं है, उसको ही अरिष्टनेमि तार्क्ष्य कहते हैं) हमारे निमित्त स्वस्ति विधान करें। बृहस्पति हमारे निमित्त स्वस्ति विधान करें॥ १॥

पय इत्यस्य लुशोधानाक ऋषिः। विराट् छन्दः। अग्निर्देवता। पाठे वि०॥ २॥

भाष्यम् —हे अग्ने हे देव त्वम् (पृथिव्याम्) भूम्याम् (पयः) रसम् (धाः) धेहि-स्थापय। च (ओषधीषु) वनस्पतिषु (पयः) रसम् (धाः) स्थापय। (दिवि) स्वर्गे च (अन्तरिक्षे) च (पयः) रसम् (धाः) स्थापय। किञ्च (मह्यम्) मदर्थे (प्रदिशः) दिशो विदिशश्च (पयस्वतीः) पयस्वत्यो रसयुताः सन्तु। आहुतिपरिणामेन पृथिव्यादयो ममाभीष्टदा भवन्त्वित्यर्थः। (यजु० १८।३६)॥ २॥

भाषार्थ —हे अग्ने पृथिवी देवी हमारे निमित्त रस धारण करे, ओषधियाँ भी हमारे निमित्त रस धारण करें, स्वर्ग लोक और अन्तरिक्ष लोक भी हमारे निमित्त रस धारण करें अर्थात् आहुति के परिणाम से पृथिवी आदि हमको भगवत्कृपा से अभीष्ट देने वाले हों॥ २॥

विष्णो रराटमित्यस्यौतथ्यो दीर्घतमा ऋषिः। याजुषी उष्णिक् छन्दः। विष्णुर्देवता। पाठे विनियोगः॥ ३॥

भाष्यम्— हे दर्भमयमालाधारवंश! त्वं (विष्णोः) विष्णुमूर्तित्वेनोपचरितस्य हविर्धानमण्डपस्य (रराटम्) ललाटस्थानीयः (असि)। हे रटाट्यन्तौ युवाम् (विष्णोः) विष्णुनामकस्य हविर्धानमण्डपस्य (श्नप्त्रे स्थः) ओष्ठसन्धिरूपे भवथः। (द्वार्य्याः परिषीव्यति-लस्यूजनि प्रतिहृतया

भाषार्थ—विश्वकर्मा मनुष्यों को उपदेश देते हैं कि तुम उस पुरुष को नहीं जानते हो जो सभी प्राणियों तथा भौतिक पदार्थों को उत्पन्न करता है। उस परमपुरुष और तुम मनुष्यों के मध्य महान् अन्तर है। जो नर अविद्या से आवृत्त ज्ञान वाले कुतार्किक हैं उनमें तथा परम पुरुष में और अधिक अन्तर है। जो तपस्वी जन प्राणायामादि योग के द्वारा अपने प्राणतत्त्व को तृप्त करते हैं तथा जो याज्ञिक यज्ञों में वेद की ऋचाओं का उच्चारण करते हैं वे ही परम पुरुष को प्राप्त करते हैं अन्य अज्ञानी कुतार्किक तो नरक में जाते हैं॥ ९५॥

भाष्यम् —(विश्वकर्मा हि) आदित्यान्तरः पुरुषः, (अजनिष्ट) जातः, (देवः) दानादिगुणयुक्तः, (आत् इत्) निपातौ। अथानन्तरम्, (गन्धर्वः) गोर्वाचो पृथिव्या वा धारयिता अग्निः, गानाद्वा गन्धर्वोऽग्निः, (अभवद् द्वितीयः) ससहायः, (तृतीयः पिता) पालयिता, (जनिता) जनयिता, (ओषधीनाम्) पर्जन्यः अभवत्। स चोत्पन्नः सन् (अपाम्) आहुतिपरिणामभूतानाम् (गर्भं वि अदधात्) धारयति, (पुरुत्रा) स बहूनां त्राता भवति॥ ९६॥

भाषार्थ—विश्व के निर्माता आदित्य के अन्तर्वर्ती पुरुष उत्पन्न होते ही प्रकाश का दान करते हैं क्योंकि वे प्रकाश अथवा पृथिवी के धारयिता हैं। अग्नि उनका सहायक होता है। उस आदित्यपुरुष के तीसरे, सहायक एवं पालक रूप में पर्जन्य होता है जो ओषधियों का उत्पादक एवं रक्षक है। वही आहुतिों के परिणामभूत मेघों में जल-रूप गर्भ का आधान करने से सभी जीवधारियों का रक्षक है॥ ९६॥

नोट :—आगे मन्त्र संख्या ९७-१०० तक ५१-५४ मन्त्र संख्या में व्याख्यात है।

अथ स्वस्तिप्रार्थनामन्त्रभाष्यम्

स्वस्तीत्यस्य गौतम ऋषिः। विराट्स्थाना त्रिष्टुप् छन्दः। विश्वेदेवा देवताः। **पाठे विनियोगः॥ १॥**

भाष्यम् —(वृद्धश्रवाः) वृद्धं प्रभूतं श्रवः श्रवणं स्तोत्रं हविर्लक्षणमन्नं वा यस्य तादृशः (इन्द्रः नः) अस्माकं (स्वस्ति) अविनाशं (दधातु) विदधातु। (विश्ववेदाः) विश्वानि वेत्तीति विश्ववेदाः। यद्वा-विश्वानि सर्ववेदवेदांसि ज्ञानानि धनानि वा यस्य तादृशः (पूषा) पोषको देवः (नः)

अस्माकम् (स्वस्ति) विदधातु। (अरिष्टनेमिः), नेमिरित्यायुधनाम (निघं० २।२०), अरिष्टोऽहिंसितो नेमिर्यस्य वा यत्सम्बन्धिनो रथनेमिर्न हिंस्यते सोऽरिष्टनेमिरेवम्भूतः (तार्क्ष्यः) तृक्षस्य पुत्रः गरुत्मान् (नः) अस्माकम् (स्वस्ति) अविनाशं विदधातु तथा (बृहस्पतिः) देवानां पतिः पालयिता (नः) अस्माकम् (स्वस्ति) अविनाशं विदधातु (यजु० २५।१०)॥ १॥

भाषार्थ— वृद्धश्रवा (बड़ीकीर्तिवाले) इन्द्र हमारे निमित्त स्वस्ति विधान करें। सर्वज्ञ पूषा हमारे निमित्त स्वस्ति विधान करें। अरिष्टनेमि तार्क्ष्य (तार्क्ष्य-रथ अर्थात् जिसके रथ की नेमिकी अर्थात् चक्रधारी की गति कोई भी रोकने में समर्थ नहीं है, उसको ही अरिष्टनेमि तार्क्ष्य कहते हैं) हमारे निमित्त स्वस्ति विधान करें। बृहस्पति हमारे निमित्त स्वस्ति विधान करें॥ १॥

पय इत्यस्य लुशोधानाक ऋषिः। विराट् छन्दः। अग्निर्देवता। पाठे वि०॥ २॥

भाष्यम् —हे अग्ने हे देव त्वम् (पृथिव्याम्) भूम्याम् (पयः) रसम् (धाः) धेहि-स्थापय। च (ओषधीषु) वनस्पतिषु (पयः) रसम् (धाः) स्थापय। (दिवि) स्वर्गे च (अन्तरिक्षे) च (पयः) रसम् (धाः) स्थापय। किञ्च (मह्यम्) मदर्थे (प्रदिशः) दिशो विदिशश्च (पयस्वतीः) पयस्वत्यो रसयुताः सन्तु। आहुतिपरिणामेन पृथिव्यादयो ममाभीष्टदा भवन्त्वित्यर्थः। (यजु० १८।३६)॥ २॥

भाषार्थ —हे अग्ने पृथिवी देवी हमारे निमित्त रस धारण करे, ओषधियाँ भी हमारे निमित्त रस धारण करें, स्वर्ग लोक और अन्तरिक्ष लोक भी हमारे निमित्त रस धारण करें अर्थात् आहुति के परिणाम से पृथिवी आदि हमको भगवत्कृपा से अभीष्ट देने वाले हों॥ २॥

विष्णो रराटमित्यस्यौतथ्यो दीर्घतमा ऋषिः। याजुषी उष्णिक् छन्दः। विष्णुर्देवता। पाठे विनियोगः॥ ३॥

भाष्यम्— हे दर्भमयमालाधारवंश! त्वं (विष्णोः) विष्णुमूर्तित्वेनोपचरितस्य हविर्धानमण्डपस्य (रराटम्) ललाटस्थानीयः (असि)। हे रटाट्यन्तौ युवाम् (विष्णोः) विष्णुनामकस्य हविर्धानमण्डपस्य (श्नप्त्रे स्थः) ओष्ठसन्धिरूपे भवथः। (द्वार्य्याः परिषीव्यति-लस्यूजनि प्रतिहतया

रज्ज्वा विष्णोः स्यूरसीति कात्यायनः)। हे लस्यूजनि त्वम् (विष्णोः) हविर्धानस्य (स्यूरसि) सीव्यन्तेऽनेनेति स्यूः सूचिरसि। (विष्णोः ध्रुवोऽसीति ग्रन्थीकरोति)। हे रज्जुग्रन्थ त्वम् (विष्णोः) हविर्धानस्य (ध्रुवः) ग्रन्थिः (असि) भवसि। (हे प्राग्वंश हविर्धानं निष्ठाप्य वैष्णवमसीत्यालभत इति का०)। हे हविर्धानं त्वम् (वैष्णवम्) विष्णुदेवताकत्वेन तत्सम्बन्धि (असि) भवसि। तस्मात् (विष्णवे) विष्णुप्रीत्यर्थम् (त्वा) त्वां स्पृशामीति शेषः (यजु० ४।२१)॥ ३॥

भाषार्थ—हे तिर्यक्‌वंशचीर! तुम इस यज्ञिय मंडप के रराटी (द्वार के दो खंभों पर नीचे को मुखवाला अर्द्धवृत्ताकार जो तिरछा वंशचीर होता है उसको रराटी कहते हैं, यहीं इस मंडप का माथारूप है) होते हो। हे रराटी प्रान्तद्वय! तुम दोनों इस यज्ञमंडप की ओष्ठ संधिरूप होती हो। हे लस्यूजनि! (बड़ी सुई वा सूजा) तुम ही इस यज्ञिय मंडप की सूची हो। हे रस्सी की गांठ! तुम इस यज्ञिय मंडप की गांठ हो, इससे दृढ़ होवो, हे प्राग्वंश! पूर्वपश्चिम को लम्बा करके स्थापित बांस! इस मंडप की छत का प्रधान अवलंबन बडा बांस (आडा) तुम इस यज्ञिय मंडप की छत के मध्यवाले प्रधान बांस हो, इस मंडप की दृढ़ता की परीक्षा करने के लिए तुमको स्पर्श करता हूँ। इस मंत्र में वंशादि में स्थित सर्वज्ञ देव की प्रार्थना उस उस रूप में है॥ ३॥

अग्निरित्यस्य विश्वेदेवा ऋषयः। भुरिग्ब्राह्मी त्रिष्टुप् छन्दः। अग्न्यादयो देवताः। पाठे वि०॥ ४॥

भाष्यम् —इष्टके त्वमग्न्यादिदेवतारूपाऽसि तां त्वामुपदधामीति सर्वत्र शेषः। अग्न्यादीनां देवतात्वं प्रसिद्धम्। अग्निर्देवता वातो देवतेत्येता वै देवताश्छन्दांसि तान्येवैतदुपदधातीति श्रुतेः। सर्वं सुगमम्। (यजु० १४।२०)॥ ४॥

भाषार्थ—अग्नि देवता की प्रार्थना करता हुआ, यह इष्टका स्थापन करता हूँ। वायु देवता का ध्यान करता हुआ यह इष्टका स्थापन करता हूँ, सूर्य्य देवता का ध्यान करता हुआ यह इष्टका स्थापन करता हूँ ३, चन्द्र देवता का ध्यान करता हुआ यह इष्टका स्थापन करता हूँ ४, वसुदेवताओं का ध्यान करता हुआ यह इष्टका स्थापन करता हूँ ५, रुद्रदेवताओं का ध्यान करता हुआ यह इष्टका स्थापन करता हूँ ६, आदित्य देवताओं का ध्यान करता हुआ यह इष्टका स्थापना

करता हूँ ७, मरुत देवताओं का ध्यान करता हुआ यह इष्टका स्थापन करता हूँ ८, विश्वेदेवा देवताओं का ध्यान करता हुआ यह इष्टका स्थापन करता हूँ ९, बृहस्पति देवता का ध्यान करता हुआ यह इष्टका स्थापन करता हूँ १०, इन्द्र देवता का ध्यान करता हुआ यह इष्टका स्थापन करता हुँ ११, वरुण देवता का ध्यान करता हुआ यह इष्टका स्थापन करता हूँ १२॥ ४॥

भाष्यम् — मेघाविनः पुरुषस्य ज्ञानोत्पादनाय महादेवसम्बन्धिषु पञ्चवक्त्रेषु मध्ये पश्चिमवक्त्रप्रतिपादकं मन्त्रमाह- (सद्योजातम्) एतन्नामकं पश्चिमवक्त्ररूपं परमेश्वरं (प्रपद्यामि) प्राप्नोमि। तादृशाय (सद्योजाताय) महादेवाय (वै नमः) नमोऽस्तु। हे सद्योजात! (भवेभवे तत्त्ज्जन्मनिमित्तं (मां न भवस्व) न प्रेरयेत्यर्थः? किन्तर्हि (अतिभवे) जन्मतातिलंघननिमित्तं (भवस्व) तत्त्वज्ञानाय प्रेरय। (भवोद्भवाय) भवात्संसारात् उद्धर्त्रे सद्योजाताय (नमः) नमोऽस्तु॥ ५॥

भाषार्थ—ज्ञान प्राप्ति के निमित्त महादेव सम्बन्धि पंचमुखों में पश्चिममुख प्रतिपादक मंत्र का वर्णन करते हैं। सद्योजात नामक परमेश्वर के रूप को प्राप्त होता हूँ सद्योजात के निमित्त प्रणाम है, हे देव! अनेक जन्मों में मुझे मत भेजो, किन्तु जन्म के दूर करने के निमित्त तत्त्वज्ञान के निमित्त मुझे प्रेरणा करो! संसार के उद्धारकर्ता सद्योजात को प्रणाम है॥ ५॥

भाष्यम् — उत्तरवक्त्रप्रतिपादकं मन्त्रमाह- (वामदेवाय नमः) उत्तरवक्त्ररूपः वामदेवः तस्यैव विग्रहविशेषाः ज्येष्ठादिनामकाः एते महादेवपीठशक्तीनां वामादीनां नवानां पतयः पुरुषाः तेभ्यो नवभ्यो नमस्कारः अस्तु॥ ६॥ ७॥

भाषार्थ —उत्तरमुख का प्रपिादक मंत्र कहते हैं—उत्तरमुखरूप वामदेव को प्रणाम है, उसी के विग्रह ज्येष्ठादि नाम हैं, यह महादेव की पीठशक्तियों के स्वामी हैं। वामदेव, ज्येष्ठ, श्रेष्ठ, रुद्र, कल-विकरण, बलविकरण, बल, बलप्रमथन, सर्वभूतों के दमन करने वाले, मनोन्मन के निमित्त नमस्कार है॥ ६॥ ७॥

भाष्यम् —दक्षिणवक्त्रप्रतिपादकमन्त्रमाह-(अधोरेभ्यः) अघोरनामको दक्षिणवक्त्ररूपो देवः तस्य विग्रहाः-अघोराः सात्त्विकत्वेन शान्ताः, अन्ये तु

(घोराः) राजसत्वेन उग्राः, अपरे तु तामसत्वेन (घोरतराः) घोरादपि घोरतराः। (शर्व) हे शर्व परमेश्वर (ते) त्वदीयेभ्यः पूर्वोक्तेभ्यः त्रिविधेभ्यः (सर्वेभ्यः रुद्ररूपेभ्यः) सर्वतः सर्वेषु देशेषु सर्वेषु च कालेषु (नमः) (अस्तु) भवतु॥ ८॥

भाषार्थ —दक्षिणवक्त्र प्रतिपादक मंत्र कहते हैं— सत्त्वगुणयुक्त होने से अघोर, राजस होने से घोर और तामस सम्बन्ध से घोरतर शर्व प्रलय में जगत् के हरने वाले आप के तीन प्रकार के रूपों को सब देशकाल में हम प्रणाम करते हैं। आपके रूद्र शर्व सब रूपों को नमस्कार है॥ ८॥

भाष्यम्— प्राग्वक्त्रदेवः तत्पुरुषनामकः। द्वितीयार्थे चतुर्थी। (तत्पुरुषाय) तत्पुरुषदेवं (विद्महे) गुरुशास्त्रमुखाज्जानीमः ज्ञात्वा च (महादेवाय) तं महादेवं (धीमहि ध्यायेम तत्) तस्मात्कारणात् (रुद्रः) देवः (नः) अस्मान् (प्रचोदयात्) ज्ञानध्यानार्थं प्रेरयतु॥ ९॥

भाषार्थ—पूर्वमुखप्रतिपादक मंत्र कहते हैं। तत्पुरुषदेव को गुरु शास्त्र मुख से जानते हैं, जानकर उन महादेव का ध्यान करते हैं, इस कारण वह रुद्र हमको ज्ञान-ध्यान के लिये प्रेरणा करें॥ ९॥

भाष्यम्— ईशानः योऽयमूर्ध्ववक्त्रो देवः सोऽयम् (सर्वविद्यानाम्) वेदशास्त्रादीनां चतुःषष्टिकलाविद्यानाम् (ईशानः) नियामकः तथा (सर्वभूतानाम्) अखिलप्राणिनाम् (ईश्वरः) नियामकः (ब्रह्माधिपतिः) देवस्याधिकत्वेन पालकः तथा (ब्रह्मणः) हिरण्यगर्भस्य (अधिपतिः) तादृशः (ब्रह्मा) अस्ति प्रवृद्धः परमात्मा। सोऽयम् (मे) ममानुग्रहाय (शिवः अस्तु सदाशिवोम्) स एव सदाशिवः ॐ अहं भवामि॥ १०॥

भाषार्थ—ऊर्ध्वमुखदेव का प्रतिपादक मंत्र-वेदशास्त्रादि विद्या और चौंसठ कलाओं के नियामक, समस्त प्राणियों के नियामक वेद के विशेष रूप से पालक, हिरण्यगर्भ के अधिपति ब्रह्मारूप वह परमात्मा मुझ पर अनुग्रह करने के लिये शान्तरूप हो। मैं सदा शिवरूप हूँ॥ १०॥

भाषार्थ—शिवोनामासि इसकी व्याख्या रुद्रीके॥ ७४॥ मंत्र में हो गई॥ ११॥

शिवोनामासीति व्याख्यातं रुद्राध्याये। ७४। मंत्रव्याख्यायाम्॥ ११॥

भाष्यम् — (देव सवितः) हे देव सवितः (विश्वानि) सर्वाणि (दुरितानि) पापानि (परासुव) दूरे गमय। (यत् भद्रम्) कल्याणम् (तत् नः) अस्मान्प्रति (आ सुव) आगमय॥ १२॥

भाषार्थ —हे सवितादेव हमारे पापों को दूर करो और जो कल्याण हैं उन्हें हमको प्राप्त कराओ॥ १२॥

भाषार्थ —द्यौः शान्तिः इसकी व्याख्या स्पष्ट है॥ १३॥

भाषार्थ— सब प्रकार से शांति हो। संपूर्ण अरिष्टों की शांति हो। इस रुद्राभिषेक कर्म से श्री भगवान् साम्बशिव प्रसन्न हों। मेरा इसमें कुछ नहीं। सब शंकर का है। यह शिवजी के अर्पण हो॥ १३॥

— 0 —